

जुबली की पुस्तक

अध्याय 1

1 और ऐसा हुआ कि इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के पहले साल में, तीसरे महीने के सोलहवें दिन, [2450 Anno Mundi] परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मेरे पास पहाड़ पर चढ़ो, और मैं तुम्हें कानून और आज्ञा की दो पत्थर की पटियाएँ दूँगा, जो मैंने लिखी हैं, ताकि तुम उन्हें सिखा सको।'
2 और मूसा परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया, और यहोवा की महिमा सीनै पर्वत पर रही, और एक बादल ने छः दिन तक उस पर छाया रखी।
3 और सातवें दिन उसने बादल के बीच से मूसा को पुकारा, और यहोवा की महिमा पहाड़ की चोटी पर जलती हुई आग की तरह दिखाई दी।
4 और मूसा चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर रहा, और परमेश्वर ने उसे व्यवस्था और गवाही के सभी दिनों के बँटवारे का पहला और आखिरी इतिहास सिखाया।
5 और उसने कहा: 'इस पहाड़ पर मैं तुमसे जो भी बात कहूँगा, उसे अपने दिल में रखो और उसे एक किताब में लिख लो ताकि उनकी पीढ़ियाँ देख सकें कि मैंने उन्हें उन सभी बुराइयों के लिए नहीं छोड़ा है जो उन्होंने उस वादे को तोड़कर की हैं जो मैंने आज सिनाई पहाड़ पर तुम्हारे और मेरे बीच उनकी पीढ़ियों के लिए किया है।
6 और इस तरह जब ये सब बातें उन पर आएंगी, तो वे पहचान लेंगे कि मैं उनके सभी फैसलों और सभी कामों में उनसे ज़्यादा नेक हूँ, और वे पहचान लेंगे कि मैं सच में उनके साथ रहा हूँ।
7 और ये सारी बातें जो मैं आज तुम्हें बता रहा हूँ, तुम अपने लिए लिख लो, क्योंकि मैं उनकी बगावत और उनके अड़ियलपन को जानता हूँ, इससे पहले कि मैं उन्हें उस देश में ले जाऊँ जिसके बारे में मैंने उनके पुरखों, अब्राहम, इसहाक और याकूब से कसम खाई थी, और कहा था: 'तुम्हारे वंश को मैं दूध और शहद से बहने वाला देश दूँगा।
8 और वे खाकर पेट भर लेंगे, और वे पराए देवताओं की ओर मुड़ेंगे, ऐसे देवताओं की ओर जो उन्हें उनकी किसी भी मुसीबत से नहीं बचा सकते: और यह गवाही उनके खिलाफ गवाही के तौर पर सुनी जाएगी। क्योंकि वे मेरे सभी हुक्म भूल जाएंगे, (यहां तक कि) वे सब जो मैं उन्हें हुक्म देता हूं, और वे गैर-यहूदियों के पीछे, और उनकी गंदगी, और उनकी शर्म के पीछे चलेंगे, और अपने देवताओं की सेवा करेंगे, और ये उनके लिए एक गुनाह, मुसीबत, एक तकलीफ और एक फंदा साबित होंगे।
9 और बहुत से लोग मारे जाएँगे और उन्हें बंदी बनाकर दुश्मन के हाथों में डाल दिया जाएगा, क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों और मेरे आदेशों, और मेरे करार के त्योहारों, और मेरे सब्तों, और मेरे पवित्र स्थान को छोड़ दिया है, जिसे मैंने उनके बीच अपने लिए पवित्र किया है, और मेरे डेरे, और मेरे पवित्र स्थान को, जिसे मैंने देश के बीच अपने लिए पवित्र किया है, ताकि मैं उस पर अपना नाम रखूँ, और वह वहाँ रहे।
10 और वे अपने लिए ऊँची जगहें, अशेरा और खुदी हुई मूर्तियाँ बना लेंगे, और हर कोई अपनी खुदी हुई मूर्ति की पूजा करेगा, ताकि वे भटक जाएँ, और वे अपने बच्चों को दुष्टात्माओं और अपने दिल की सारी गलत बातों के लिए बलि चढ़ा देंगे।
11 और मैं उनके पास गवाह भेजूंगा, ताकि मैं उनके खिलाफ गवाही दे सकूं, लेकिन वे नहीं सुनेंगे, और गवाहों को भी मार डालेंगे, और जो लोग कानून ढूंढते हैं उन्हें सताएंगे, और वे सब कुछ खत्म कर देंगे और बदल देंगे ताकि मेरी आंखों के सामने बुरा काम कर सकें।
12 और मैं उनसे अपना चेहरा छिपा लूंगा, और उन्हें गुलामी में, शिकार के लिए और खाने के लिए गैर-यहूदियों के हाथ में सौंप दूंगा, और मैं उन्हें देश के बीच से निकाल दूंगा, और गैर-यहूदियों के बीच बिखेर दूंगा।
13 और वे मेरे सारे नियम, मेरे सारे हुक्म, मेरे सारे नियम भूल जाएँगे, और नए चाँद, सब्त, त्योहार, जुबली और नियमों के मामले में भटक जाएँगे।
14 और इसके बाद वे गैर-यहूदियों में से पूरे दिल, पूरी जान और पूरी ताकत से मेरी ओर मुड़ेंगे, और मैं उन्हें सभी गैर-यहूदियों में से इकट्ठा करूँगा, और वे मुझे ढूँढ़ेंगे, ताकि जब वे पूरे दिल और पूरी जान से मुझे ढूँढ़ेंगे, तो मैं उन्हें मिल जाऊँगा।
15 और मैं उन्हें नेकी के साथ बहुत शांति दिखाऊंगा, और मैं अपने पूरे दिल और पूरी जान से उनके लिए नेकी का पौधा लगाऊंगा, और वे श्राप के लिए नहीं बल्कि आशीर्वाद के लिए होंगे, और वे सिर होंगे, पूंछ नहीं।
16 और मैं उनके बीच अपना पवित्र स्थान बनाऊंगा, और उनके साथ रहूंगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे सच्चाई और धार्मिकता से मेरे लोग होंगे।
17 और मैं उन्हें न तो छोडूंगा, और न ही उन्हें धोखा दूंगा; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूं।'
18 तब मूसा ने मुँह के बल गिरकर प्रार्थना की, और कहा, 'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, अपने लोगों और अपनी विरासत को मत छोड़, ताकि वे अपने दिल की भूल में भटकें, और उन्हें उनके दुश्मनों, यानी गैर-यहूदियों के हाथ में मत सौंप, कहीं ऐसा न हो कि वे उन पर राज करें और उनसे तेरे खिलाफ पाप करवाएँ।
19 हे प्रभु, अपनी दया अपने लोगों पर बरसा, और उनमें एक नेक आत्मा पैदा कर, और बेलियार की आत्मा उन पर राज न करे, ताकि वह तेरे सामने उन पर इल्ज़ाम लगाए, और उन्हें नेकी के सभी रास्तों से भटका दे, ताकि वे तेरे सामने से खत्म हो जाएं।
20 लेकिन वे तेरे लोग और तेरी विरासत हैं, जिन्हें तूने अपनी बड़ी ताकत से मिस्रियों के हाथों से छुड़ाया है: उनमें एक साफ दिल और एक पवित्र आत्मा पैदा कर, और वे अब से लेकर हमेशा तक अपने पापों में न फँसें।'
21 और प्रभु ने मूसा से कहा: 'मैं उनके विरोध, उनके विचारों और उनके अड़ियलपन को जानता हूँ, और वे तब तक आज्ञाकारी नहीं होंगे जब तक वे अपने और अपने पूर्वजों के पाप को स्वीकार नहीं कर लेते।
22 और इसके बाद वे पूरी ईमानदारी और पूरे दिल और पूरी आत्मा से मेरी ओर मुड़ेंगे, और मैं उनके दिल और उनके वंश के दिल का खतना करूँगा, और मैं उनमें एक पवित्र आत्मा पैदा करूँगा, और मैं उन्हें शुद्ध करूँगा ताकि वे उस दिन से लेकर हमेशा तक मुझसे दूर न हों।
23 और उनकी आत्माएं मुझसे और मेरी सभी आज्ञाओं से जुड़ी रहेंगी, और वे मेरी आज्ञाओं को पूरा करेंगे, और मैं उनका पिता होऊंगा और वे मेरे बच्चे होंगे।
24 और वे सब जीवित परमेश्वर के बच्चे कहलाएंगे, और हर फ़रिश्ता और हर आत्मा जान जाएगी, हाँ, वे जान लेंगे कि ये मेरे बच्चे हैं, और मैं सच्चाई और नेकी में उनका पिता हूँ, और मैं उनसे प्यार करता हूँ।

25 और तू अपने लिए ये सारी बातें लिख ले जो मैं तुझे इस पहाड़ पर बता रहा हूँ, पहली और आखिरी बातें, जो कानून और गवाही और हफ़्तों और जुबली के दिनों के सभी हिस्सों में हमेशा तक पूरी होंगी, जब तक मैं नीचे न आऊँ और हमेशा उनके साथ न रहूँ।'
26 और उसने मौजूद स्वर्गदूत से कहा: मूसा के लिए दुनिया की शुरुआत से लेकर जब तक मेरा पवित्र स्थान उनके बीच हमेशा के लिए नहीं बन जाता, तब तक लिखो।
27 और प्रभु सबकी आँखों के सामने प्रकट होगा, और सब जान लेंगे कि मैं इस्राएल का परमेश्वर और याकूब के सभी बच्चों का पिता हूँ, और हमेशा के लिए सिय्योन पर्वत पर राजा हूँ। और सिय्योन और यरूशलेम पवित्र होंगे।'
28 और जो स्वर्गदूत इस्राएल की छावनी के आगे-आगे चलता था, उसने सालों के बँटवारे की टेबल लीं - बनाने के समय से - कानून की और जुबली के हफ़्तों की गवाही की, हर साल के हिसाब से, जुबली की सारी गिनती के हिसाब से [हर साल के हिसाब से], उस दिन से जब आसमान और धरती नए बनेंगे और उनकी सारी रचना आसमान की ताकतों के हिसाब से, और धरती की सारी रचना के हिसाब से, जब तक यरूशलेम में सिय्योन पहाड़ पर प्रभु का पवित्र स्थान नहीं बन जाता, और इस्राएल के सभी चुने हुए लोगों के लिए इलाज, शांति और आशीर्वाद के लिए सभी रोशनी नई नहीं बन जातीं, और ऐसा ही उस दिन से लेकर धरती के सभी दिनों तक हो।

अध्याय दो

1 और प्रभु के वचन के अनुसार, वहाँ के स्वर्गदूत ने मूसा से कहा: सृष्टि का पूरा इतिहास लिखो, कि कैसे छह दिनों में प्रभु परमेश्वर ने अपने सारे काम और जो कुछ उन्होंने बनाया था, उसे पूरा किया, और सातवें दिन सब्त मनाया और उसे हमेशा के लिए पवित्र माना, और उसे अपने सभी कामों के लिए एक निशानी ठहराया।
2 क्योंकि पहले दिन उसने ऊपर के आकाश और पृथ्वी और जल और उन सभी आत्माओं को बनाया जो उसके सामने सेवा करती हैं - उपस्थिति के स्वर्गदूतों, और पवित्रता के स्वर्गदूतों, और हवाओं की आत्मा के स्वर्गदूतों [आग की आत्मा और स्वर्गदूतों] और बादलों की आत्मा के स्वर्गदूतों, और अंधेरे की, और बर्फ और ओलों और पाले की, और आवाज़ों और गरज और बिजली के स्वर्गदूतों, और ठंड और गर्मी की आत्माओं के स्वर्गदूतों, और सर्दियों और वसंत और शरद ऋतु और गर्मियों की, और उसके प्राणियों की सभी आत्माओं की जो स्वर्ग और पृथ्वी पर हैं, (उसने) रसातल और अंधेरे, शाम और रात> और प्रकाश, भोर और दिन को बनाया, जिसे उसने अपने दिल की जानकारी में तैयार किया था।
3 और तब हमने उसके काम देखे, और उसकी तारीफ़ की, और उसके सब कामों के कारण उसके सामने तारीफ़ की; क्योंकि उसने पहले दिन सात बड़े काम किए थे।
4 और दूसरे दिन उसने पानी के बीच में आसमान बनाया, और उस दिन पानी बँट गया - आधा पानी ऊपर चला गया और आधा पानी नीचे चला गया, जो पूरी धरती के बीच में था। और यही एकमात्र काम था जो (परमेश्वर ने) दूसरे दिन बनाया।
5 और तीसरे दिन उसने आज्ञा दी कि सारी पृथ्वी से पानी एक जगह इकट्ठा हो जाए, और सूखी ज़मीन दिखाई दे।
6 और पानी ने वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें आज्ञा दी थी, और वे धरती के ऊपर से हटकर इस आसमान के बाहर एक जगह चले गए, और सूखी ज़मीन दिखाई दी।
7 और उस दिन उसने उनके लिए सारे समुद्रों को उनके अलग-अलग जमा होने की जगहों के हिसाब से बनाया, और सारी नदियों को, और पहाड़ों और सारी धरती पर पानी के जमा होने को, और सारी झीलों को, और धरती की सारी ओस को, और बोए गए बीज को, और सभी उगने वाली चीज़ों को, और फल देने वाले पेड़ों को, और जंगल के पेड़ों को, और अदन के बाग को, जो अदन में है, और अपनी-अपनी तरह के सभी पेड़-पौधों को।
8 ये चार बड़े काम परमेश्वर ने तीसरे दिन बनाए। और चौथे दिन उसने सूरज, चाँद और तारे बनाए, और उन्हें आसमान में स्थापित किया, ताकि सारी धरती पर रोशनी हो, और दिन और रात पर राज हो, और रोशनी को अंधेरे से अलग करे।
9 और परमेश्वर ने सूरज को धरती पर दिनों, सब्तों, महीनों, त्योहारों, सालों, सालों के सब्तों, जुबली और सालों के सभी मौसमों के लिए एक बड़ा निशान ठहराया।
10 और यह उजाले को अंधेरे से अलग करता है, और खुशहाली के लिए, ताकि धरती पर उगने वाली सभी चीज़ें कामयाब हों।
11 चौथे दिन उसने ये तीनों तरह के जीव बनाए। और पांचवें दिन उसने पानी की गहराई में बड़े-बड़े समुद्री जीव बनाए, क्योंकि ये पहले इंसान थे जो उसके हाथों से बनाए गए थे, यानी मछलियां और पानी में चलने वाले सभी जीव, और उड़ने वाले सभी जीव, पक्षी और उनकी तरह के सभी जीव।
12 और सूरज उनके ऊपर, और धरती पर जो कुछ था, धरती से उगने वाले हर पौधे, और सभी फल देने वाले पेड़ों, और सभी जानवरों के ऊपर चमका।
13 इन तीनों को उसने पांचवें दिन बनाया। और छठे दिन उसने धरती के सभी जानवरों, सभी मवेशियों और धरती पर चलने-फिरने वाले सभी जीवों को बनाया।
14 और इन सब के बाद उसने इंसान को बनाया, एक मर्द और एक औरत को उसने बनाया, और उसे धरती पर और समुद्र में जो कुछ है, और उड़ने वाले सब जानवरों, और जानवरों, और पालतू जानवरों, और धरती पर चलने वाले सब जानवरों, और पूरी धरती पर अधिकार दिया, और इन सब पर उसने उसे अधिकार दिया।
15 और छठे दिन उसने इन चार तरह के जीवों को बनाया, और वे कुल मिलाकर बाईस तरह के थे।
16 और उसने छठे दिन अपना सारा काम पूरा कर लिया - जो कुछ भी आसमान में और धरती पर और समुद्रों और गहरे गड्ढों में और रोशनी और अंधेरे में और हर चीज़ में है।
17 और उसने हमें एक बड़ा निशान दिया, सब्त का दिन, ताकि हम छःदिन काम करें, लेकिन सातवें दिन सब्त को सब काम से दूर रखें।
18 और मौजूदगी के सभी स्वर्गदूतों, और पवित्रता के सभी स्वर्गदूतों, इन दो बड़े वर्गों - उसने हमें स्वर्ग और पृथ्वी पर उसके साथ सब्त मनाने के लिए कहा है।
19 और उसने हमसे कहा: 'देखो, मैं सब लोगों में से अपने लिए एक लोगों को अलग करूँगा, और वे सब्त का दिन मनाएँगे, और मैं उन्हें अपने लोगों के तौर पर पवित्र करूँगा, और उन्हें

आशीर्वाद दूँगा; जैसे मैंने सब्त के दिन को पवित्र किया है और अपने लिए पवित्र करता हूँ, वैसे ही मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा, और वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।
20 और मैंने याकूब के वंश को उन सब में से चुना है जिन्हें मैंने देखा है, और उसे अपने जेठे बेटे के तौर पर लिखा है, और उसे हमेशा-हमेशा के लिए अपने लिए पवित्र ठहराया है; और मैं उन्हें सब्त का दिन सिखाऊंगा, ताकि वे उस दिन सब काम छोड़कर सब्त मना सकें।'
21 और इस तरह उसने उसमें एक निशानी बनाई जिसके अनुसार वे सातवें दिन हमारे साथ सब्त मनाएँ, खाएँ-पिएँ, और उसे आशीर्वाद दें जिसने सब कुछ बनाया है, जैसे उसने आशीर्वाद दिया है और अपने लिए एक खास लोगों को पवित्र किया है जो सब लोगों से ऊपर हैं, और वे हमारे साथ सब्त मनाएँ।
22 और उसने अपने आदेशों को एक मीठी सुगंध के रूप में ऊपर उठाया जो हर दिन उसके सामने स्वीकार्य थी...
23 आदम से लेकर याकूब तक इंसानों के 22 सिर थे, और सातवें दिन तक 22 तरह के काम किए गए; यह धन्य और पवित्र है; और पहला भी धन्य और पवित्र है; और यह उसके साथ पवित्रता और आशीर्वाद के लिए काम करता है।
24 और इन (याकूब और उसके वंश) को यह दिया गया कि वे हमेशा पहली गवाही और नियम के धन्य और पवित्र लोग रहें, जैसे उसने सातवें दिन सब्त के दिन को पवित्र और धन्य ठहराया था।
25 उसने छह दिन में आसमान और धरती और जो कुछ भी बनाया, सब बनाया, और परमेश्वर ने सातवें दिन को अपने सब कामों के लिए पवित्र ठहराया; इसलिए उसने उसके बारे में हुक्म दिया कि जो कोई उस दिन कोई काम करेगा वह मर जाएगा, और जो उसे गंदा करेगा वह ज़रूर मर जाएगा।
26 इसलिए तू इस्राएल के बच्चों को यह हुक्म देता है कि वे इस दिन को पवित्र मानें और इस दिन कोई काम न करें, और इसे गंदा न करें, क्योंकि यह बाकी सभी दिनों से ज़्यादा पवित्र है।
27 और जो कोई इसे अपवित्र करेगा वह ज़रूर मर जाएगा, और जो कोई इस पर कोई काम करेगा वह हमेशा के लिए मर जाएगा, ताकि इस्राएल के बच्चे अपनी पीढ़ियों में इस दिन को मना सकें, और देश से उखाड़े न जाएं; क्योंकि यह एक पवित्र दिन और एक धन्य दिन है।
28 और हर कोई जो इसे मानता है और अपने सभी कामों से दूर सब्त को मानता है, वह हमारी तरह सभी दिनों में पवित्र और धन्य रहेगा।
29 इस्राएल के बच्चों को आज का नियम बताओ और कहो कि वे सब्त का दिन मानें, और अपने दिल की गलती से उसे न छोड़ें; (और) उस दिन कोई भी गलत काम करना, अपनी मर्ज़ी से कुछ करना, और उस दिन खाने-पीने के लिए कुछ भी तैयार न करना, और (यह भी) कि उस दिन पानी भरना, या अपने दरवाज़ों से कोई बोझ अंदर लाना या बाहर ले जाना सही नहीं है, जिसे उन्होंने छठे दिन अपने घरों में अपने लिए तैयार न किया हो।
30 और उस दिन वे घर-घर से कुछ न लाएँ और न बाहर ले जाएँ; क्योंकि वह दिन जुबली के किसी भी जुबली के दिन से ज़्यादा पवित्र और धन्य है; इस दिन हमने स्वर्ग में सब्त मनाया, इससे पहले कि धरती पर किसी इंसान को सब्त मनाने की जानकारी दी गई।
31 और सब चीज़ों के बनाने वाले ने उसे आशीर्वाद दिया, लेकिन उसने सब लोगों और देशों को सब्त मनाने के लिए पवित्र नहीं किया, सिर्फ़ इज़राइल को: उसने सिर्फ़ उन्हें ही धरती पर खाने-पीने और सब्त मनाने की इजाज़त दी।
32 और सब चीज़ों के बनाने वाले ने इस दिन को आशीर्वाद दिया, जिसे उसने आशीर्वाद, पवित्रता और सब दिनों से ज़्यादा महिमा के लिए बनाया था।
33 यह नियम और गवाही इस्राएल के बच्चों को उनकी पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए एक नियम के रूप में दी गई थी।

अध्याय 3

1 और दूसरे हफ़्ते के छह दिनों में, परमेश्वर के वचन के अनुसार, हमने आदम के लिए सभी जानवर, सभी पालतू जानवर, सभी पक्षी, और धरती पर चलने वाले सभी जीव-जंतु, और पानी में चलने वाले सभी जीव-जंतु, उनकी जाति और प्रकार के अनुसार लाए: पहले दिन जानवर; दूसरे दिन पालतू जानवर; तीसरे दिन पक्षी; और चौथे दिन धरती पर चलने वाले सभी जीव-जंतु; और पांचवें दिन पानी में चलने वाले सभी जीव-जंतु।
2 और आदम ने उन सब का नाम उनके अपने-अपने नाम से रखा, और जैसे-जैसे उसने उनका नाम रखा, वैसे-वैसे उनका नाम भी हो गया।
3 और इन पाँच दिनों में आदम ने धरती पर रहने वाले हर तरह के नर और मादा को देखा, लेकिन वह अकेला था और उसे कोई मददगार नहीं मिला।
4 और प्रभु ने हमसे कहा, 'यह अच्छा नहीं है कि आदमी अकेला रहे: आओ हम उसके लिए एक मददगार बनाएँ।'
5 और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उस पर गहरी नींद डाल दी, और वह सो गया, और उसने अपनी पसलियों में से एक पसली निकाली, और यही पसली उसकी पसलियों में से स्त्री की शुरुआत थी, और उसने उसकी जगह मांस बनाया, और स्त्री को बनाया।
6 और उसने आदम को नींद से जगाया और जब वह छठे दिन उठा, तो वह उसे उसके पास ले आया, और उसने उसे पहचाना, और उससे कहा: 'यह अब मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसे [मेरी] पत्नी कहा जाएगा; क्योंकि यह अपने पति से ली गई थी।'
7 इसलिए पति-पत्नी एक होंगे, और इसलिए पति अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा, और वे एक तन होंगे।
8 पहले हफ़्ते में आदम को बनाया गया, और उसकी पसली उसकी पत्नी बनी; दूसरे हफ़्ते में उसने उसे उसे दिखाया: और इसी वजह से यह हुक्म दिया गया कि मर्द सात दिन और औरत दो बार सात-सात दिन अपनी गंदगी में रहें।
9 और जब आदम उस ज़मीन पर चालीस दिन पूरे कर चुका जहाँ उसे बनाया गया था, तो हम उसे अदन के बाग में ले आए ताकि वह खेती करे और उसकी देखभाल करे, लेकिन उसकी पत्नी को वे अस्सीवें दिन ले आए, और इसके बाद वह अदन के बाग में दाखिल हुई।
10 और इसी वजह से आसमान की पट्टियों पर जन्म देने वाली औरत के बारे में यह हुक्म लिखा है: 'अगर वह लड़के को जन्म देती है, तो वह पहले हफ़्ते के हिसाब से सात दिन अपनी

अशुद्धता में रहेगी, और तैंतीस दिन वह अपने शुद्ध होने के खून में रहेगी, और जब तक वह इन दिनों को पूरा नहीं कर लेती, जो लड़के के मामले में (मंज़ूर हैं) वह किसी भी पवित्र चीज़ को नहीं छुएगी, और न ही पवित्र जगह में जाएगी।
11 लेकिन अगर लड़की हो तो वह पहले दो हफ़्तों के हिसाब से दो हफ़्ते तक अपनी अशुद्धता में रहेगी, और छियासठ दिन अपने शुद्धिकरण के खून में रहेगी, और ये सब मिलाकर अस्सी दिन होंगे।'
12 और जब उसने ये अस्सी दिन पूरे कर लिए तो हम उसे अदन के बाग में ले आए, क्योंकि वह सारी धरती से ज़्यादा पवित्र है और उसमें लगा हर पेड़ पवित्र है।
13 इसलिए, जो लड़की लड़के या लड़की को जन्म देती है, उसके लिए उन दिनों का नियम यह तय किया गया कि जब तक लड़के या लड़की के जन्म के दिन पूरे न हो जाएं, तब तक वह किसी पवित्र चीज़ को न छुए, और न ही पवित्र जगह में जाए।
14 यह वही नियम और गवाही है जो इस्राएल के लिए लिखी गई थी, ताकि वे हर दिन इसका पालन करें।
15 और पहली जयंती के पहले सप्ताह में, [1-7 AM] आदम और उसकी पत्नी सात साल तक अदन के बाग में खेती करते और उसकी देखभाल करते रहे, और हमने उन्हें काम दिया और हमने उन्हें खेती के लिए सब कुछ करने की शिक्षा दी।
16 और उसने (बगीचे में) खेती की, और नंगा था और उसे पता नहीं था, और उसे शर्म नहीं आई, और उसने पक्षियों और जानवरों और मवेशियों से बगीचे की रक्षा की, और उसके फल तोड़े, और खाए, और बाकी अपने और अपनी पत्नी के लिए अलग रख दिया [और जो रखा जा रहा था उसे अलग रख दिया]।
17 और जब सात साल पूरे हो गए, ठीक सात साल, [सुबह 8 बजे] और दूसरे महीने के सत्रहवें दिन, साँप आया और औरत के पास आया, और साँप ने औरत से कहा, 'क्या भगवान ने तुम्हें यह हुक्म दिया है कि तुम इस बाग के किसी पेड़ का फल नहीं खाओगे?'
18 और उसने उससे कहा, 'बगीचे के सब पेड़ों के फलों में से परमेश्वर ने हमसे कहा है, खाओ; पर बगीचे के बीच में जो पेड़ है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने हमसे कहा है, कि तुम उसे न खाना, और न उसे छूना, नहीं तो मर जाओगे।'
19 और साँप ने औरत से कहा, 'तुम पक्का नहीं मरोगे: क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम इसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम परमेश्वर की तरह हो जाओगे, और तुम अच्छे और बुरे को जान जाओगे।
20 औरत ने देखा कि पेड़ देखने में अच्छा और मनभावन है, और उसका फल खाने में अच्छा है, और उसने उसका फल तोड़कर खा लिया।
21 और जब उसने अंजीर के पत्तों से अपनी शर्म को ढक लिया, तो उसने आदम को दिया और उसने खाया, और उसकी आँखें खुल गईं, और उसने देखा कि वह नंगा है।
22 तब उसने अंजीर के पत्ते लेकर उन्हें सिल दिया, और अपने लिए एक अंगोछा बनाकर अपनी शर्म को ढक लिया।
23 और परमेश्वर ने साँप को श्राप दिया, और उस पर सदा के लिए क्रोधित रहा...
24 और वह उस औरत पर गुस्सा हुआ, क्योंकि उसने साँप की आवाज़ सुनकर खाना खाया था; और उसने उससे कहा: 'मैं तेरा दुख और तेरी तकलीफ़ बहुत बढ़ा दूँगा: तू दुख में बच्चे पैदा करेगी, और तू अपने पति के पास लौट आएगी, और वह तुझ पर राज करेगा।'
25 और आदम से भी उसने कहा, 'क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात मानी है, और उस पेड़ का फल खाया है जिसके बारे में मैंने तुझे मना किया था कि तू उसका फल न खाए, इसलिए तेरे कारण ज़मीन शापित है: वह तेरे लिए कांटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू अपने चेहरे के पसीने से अपनी रोटी खाएगा, जब तक कि तू उस धरती पर वापस न लौट जाए जहाँ से तू लाया गया था; क्योंकि तू धरती है, और धरती में ही लौट जाएगा।'
26 और उसने उनके लिए चमड़े के कपड़े बनाए, उन्हें पहनाए, और उन्हें अदन के बाग से बाहर भेज दिया।
27 और जिस दिन आदम जन्नत से निकला, उसने मीठी खुशबू के तौर पर लोबान, कलफ़, और स्टिक्ट, और मसाले सुबह सूरज उगने के साथ चढ़ाए, उस दिन से जब उसने अपनी शर्म को छिपाया था।
28 और उस दिन सभी जानवरों, मवेशियों, पक्षियों, और जो कुछ भी चलता-फिरता है, उसके मुंह बंद हो गए, ताकि वे फिर बोल न सकें: क्योंकि वे सब एक दूसरे से एक ही होंठ और एक ही ज़बान से बात करते थे।
29 और उसने अदन के बाग में रहने वाले सभी जानवरों को बाहर भेज दिया, और सभी जानवर अपनी-अपनी जाति और प्रकार के हिसाब से उन जगहों पर बिखर गए जो उनके लिए बनाई गई थीं।
30 और उसने सिर्फ़ आदम को ही उसकी शर्म छिपाने के लिए सब जानवरों और जानवरों में से कुछ दिया।
31 इसलिए, आसमान की तख्तियों पर उन सभी के लिए लिखा है जो कानून का इंसाफ़ जानते हैं, कि वे अपनी शर्म को ढकें, और गैर-यहूदियों की तरह खुद को न खोलें।
32 और चौथे महीने के नए चाँद को, आदम और उसकी पत्नी अदन के बाग से निकले, और वे अपनी बनाई हुई जगह एल्डा में रहने लगे।
33 और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा।
34 और पहली जयंती तक उनके कोई पुत्र नहीं हुआ, [8 बजे] और इसके बाद उसने उससे विवाह किया।
35 अब उसने ज़मीन को वैसे ही जोता जैसा उसे अदन के बाग में सिखाया गया था।

अध्याय 4

1 और दूसरे जुबली के तीसरे हफ़्ते में [64-70 AM] उसने कैन को जन्म दिया, और चौथे में [71-77 AM] उसने हाबिल को जन्म दिया, और पाँचवें में [78-84 AM] उसने अपनी बेटी आवान को जन्म दिया।
2 और तीसरी जयंती के पहले (वर्ष) [99-105 AM] में, कैन ने हाबिल को मार डाला क्योंकि (भगवान) ने हाबिल के बलिदान को स्वीकार किया, और कैन की भेंट को स्वीकार नहीं किया।
3 और उसने उसे खेत में मार डाला: और उसका खून ज़मीन से आसमान तक चिल्लाया, यह शिकायत करते हुए कि उसने उसे मार डाला था।
4 और यहोवा ने कैन को हाबिल के कारण डांटा, क्योंकि उसने उसे मार डाला था, और अपने भाई के खून के कारण उसे धरती पर भगोड़ा बना दिया, और उसे धरती पर श्राप दिया।

5 और इसी वजह से आसमान की तख्तियों पर लिखा है, 'शापित है वह जो अपने पड़ोसी को धोखे से मारता है, और सब जिन्होंने देखा और सुना है, वे कहें, ऐसा ही हो; और जिस आदमी ने देखा है और बताया नहीं, वह भी दूसरे की तरह शापित हो।'
6 और इसी वजह से जब हम अपने प्रभु परमेश्वर के सामने आते हैं, तो स्वर्ग में और धरती पर, रोशनी में और अंधेरे में, और हर जगह किए गए सारे पापों के बारे में बताते हैं।
7 और आदम और उसकी पत्नी ने हाबिल के लिए चार हफ़्ते तक दुख मनाया, [99-127 AM] और चौथे साल के पाँचवें हफ़्ते [130 AM] में वे खुश हुए, और आदम अपनी पत्नी को फिर से जान गया, और उसने उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम सेठ रखा; क्योंकि उसने कहा, 'भगवान ने हाबिल की जगह धरती पर हमारे लिए दूसरा वंश खड़ा किया है; क्योंकि कैन ने उसे मार डाला था।'
8 और छठे सप्ताह [134-40 पूर्वाह्न] में उसने अपनी बेटी अज़ूरा को जन्म दिया।
9 और कैन ने अपनी बहन आवान से शादी की और उसने चौथी जुबली के आखिर में उसके लिए हनोक को जन्म दिया। [190-196 AM] और पांचवीं जुबली के पहले हफ्ते के पहले साल में, [197 AM] धरती पर घर बनाए गए, और कैन ने एक शहर बसाया, और उसका नाम अपने बेटे हनोक के नाम पर रखा।
10 और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को जाना और उसने नौ और बेटे पैदा किए।
11 और पाँचवीं जयंती के पाँचवें सप्ताह में [225-31 AM] सेठ ने अपनी बहन अज़ूरा को अपनी पत्नी बना लिया, और चौथे (छठे सप्ताह के वर्ष) में [235 AM] उसने उसे एनोस को जन्म दिया।
12 वह धरती पर यहोवा का नाम पुकारने लगा।
13 और सातवें जुबली के तीसरे हफ़्ते में [309-15 AM] एनोस ने अपनी बहन नोआम से शादी की, और उसने पांचवें हफ़्ते के तीसरे साल में उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम केनान रखा।
14 और आठवीं जयंती के अंत में [325, 386-3992 AM] केनान ने अपनी बहन मुआलेथ को अपनी पत्नी बनाने के लिए लिया, और उसने नौवीं जयंती में, इस सप्ताह के तीसरे वर्ष के पहले सप्ताह में, उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया, [395 AM] और उसने उसका नाम महललेल रखा।
15 दसवीं जयंती के दूसरे सप्ताह में महललेल ने अपने पिता के भाई बाराकीएल की बेटी दीना से विवाह किया, और छठे वर्ष के तीसरे सप्ताह में उसने उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया, और उसने उसका नाम येरेद रखा, क्योंकि उसके दिनों में प्रभु के दूत पृथ्वी पर उतरे, जिन्हें पहरेदार कहा जाता है, ताकि वे मनुष्यों के बच्चों को निर्देश दें, और वे पृथ्वी पर न्याय और सच्चाई का काम करें।
16 और ग्यारहवीं जयंती [512-18 AM] में येरेद ने अपने लिए एक पत्नी ली, और उसका नाम बराका था, जो उसके पिता के भाई रसूजाल की बेटी थी, इस जयंती के चौथे सप्ताह में, [522 AM] और उसने जयंती के चौथे वर्ष में, पांचवें सप्ताह में उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया, और उसने उसका नाम हनोक रखा।
17 और वह धरती पर पैदा हुए इंसानों में पहला था जिसने लिखना, ज्ञान और समझ सीखी और जिसने आसमान की निशानियों को उनके महीनों के हिसाब से एक किताब में लिखा, ताकि लोग सालों के मौसम को उनके अलग-अलग महीनों के हिसाब से जान सकें।
18 और वही पहला था जिसने गवाही लिखी और उसने धरती की पीढ़ियों के इंसानों को गवाही दी, और जुबली के हफ़्तों को बताया, और उन्हें सालों के दिन बताए, और महीनों को क्रम से लगाया और सालों के सब्त के दिनों को बताया, जैसा हमने उसे बताया था।
19 और जो कुछ था और जो कुछ होगा, उसे उसने अपनी नींद में देखा, जैसा कि इंसानों की पीढ़ियों के साथ न्याय के दिन तक होता रहेगा; उसने सब कुछ देखा और समझा, और अपनी गवाही लिखी, और उसे धरती पर सभी इंसानों की पीढ़ियों और उनकी पीढ़ियों के लिए रखा।
20 और बारहवीं जयंती के सातवें सप्ताह में उसने एक पत्नी को ब्याह लिया, और उसका नाम एदना था, जो उसके पिता के भाई दानियल की बेटी थी, और छठे वर्ष इसी सप्ताह में उसने उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया और उसने उसका नाम मतूशेलह रखा।
21 और वह इन छह जुबली सालों में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साथ रहा, और उन्होंने उसे धरती और आसमान की हर चीज़ दिखाई, सूरज का राज, और उसने सब कुछ लिख लिया।
22 और उसने पहरेदारों के बारे में गवाही दी, जिन्होंने इंसान की बेटियों के साथ पाप किया था; क्योंकि वे इंसान की बेटियों के साथ मिलकर अपवित्र होने लगे थे, और हनोक ने उन सबके खिलाफ गवाही दी।
23 और उसे इंसानों के बीच से लिया गया, और हम उसे शान और सम्मान के साथ अदन के बाग में ले गए, और देखो, वहाँ वह दुनिया की सज़ा और इंसाफ़, और इंसानों की सारी बुराई लिखता है।
24 और इसी वजह से (परमेश्वर ने) पूरे अदन देश पर बाढ़ का पानी भेजा; क्योंकि वहाँ उसे एक निशानी के तौर पर रखा गया था और ताकि वह सब इंसानों के खिलाफ गवाही दे, ताकि वह सज़ा के दिन तक पीढ़ियों के सारे कामों का हिसाब दे सके।
25 और उसने पवित्र जगह के लिए धूप जलाई, जो पहाड़ पर यहोवा को पसंद आने वाली मीठी खुशबू थी।
26 क्योंकि धरती पर प्रभु के चार स्थान हैं, अदन का बगीचा, और पूरब का पहाड़, और यह पहाड़ जिस पर तुम आज हो, सिनाई पहाड़, और सिय्योन पहाड़ (जो) नई सृष्टि में धरती के पवित्रीकरण के लिए पवित्र किए जाएँगे; इसके ज़रिए धरती दुनिया की पीढ़ियों तक अपने सभी गुनाहों और गंदगी से पवित्र की जाएगी।
27 और चौदहवीं जयंती [652 AM] में मतूशेलह ने अपने पिता के भाई अज़्रीएल की बेटी एदना से विवाह किया, इस सप्ताह के पहले वर्ष के तीसरे सप्ताह में, [701-7 AM] और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम लेमेक रखा।
28 और पंद्रहवीं जुबली के तीसरे हफ़्ते में लेमेक ने एक पत्नी से शादी की, और उसका नाम बेतेनोस था जो उसके पिता के भाई बाराकील की बेटी थी, और इसी हफ़्ते उसने उसके लिए एक बेटे को जन्म दिया और उसने उसका नाम नूह रखा, यह कहते हुए, 'यह मेरी परेशानी और मेरे सारे कामों के लिए, और उस ज़मीन के लिए जिसे प्रभु ने शाप दिया है, मुझे आराम देगा।'
29 और उन्नीसवीं जयंती के अंत में, छठे वर्ष के सातवें सप्ताह में, आदम की मृत्यु हो गई, और उसके सभी बेटों ने उसे उसकी

रचना की भूमि में दफना दिया, और वह धरती में दफन होने वाला पहला व्यक्ति था।
30 और वह एक हज़ार साल में से सत्तर साल कम रहा; क्योंकि एक हज़ार साल स्वर्ग की गवाही में एक दिन के बराबर हैं और इसीलिए ज्ञान के पेड़ के बारे में लिखा था: 'जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन मर जाओगे।' इस वजह से उसने इस दिन के साल पूरे नहीं किए; क्योंकि वह इसी दौरान मर गया।
31 इस जुबली के आखिर में कैन उसी साल उसके बाद मारा गया; क्योंकि उसका घर उस पर गिर पड़ा और वह अपने घर के बीच में मर गया, और वह उसके पत्थरों से मारा गया; क्योंकि एक पत्थर से उसने हाबिल को मारा था, और एक पत्थर से वह सही फैसले में मारा गया।
32 इसी वजह से आसमान की तख्तियों पर यह लिखा था: जिस हथियार से कोई अपने पड़ोसी को मारता है, उसी हथियार से उसे भी मारा जाएगा; जिस तरह से उसने उसे घायल किया है, उसी तरह से उसके साथ सलूक किया जाएगा।'
33 और पच्चीसवीं [1205 AM] जयंती में नूह ने अपने लिए एक पत्नी ली, और उसका नाम 'एम्ज़ारा' था, जो उसके पिता के भाई राकेल की बेटी थी, पहले वर्ष के पांचवें सप्ताह में [1207 AM]: और उसके तीसरे वर्ष में उसने शेम को जन्म दिया, उसके पांचवें वर्ष में [1209 AM] उसने उसे हाम को जन्म दिया, और पहले वर्ष के छठे सप्ताह में [1212 AM] उसने उसे येपेत को जन्म दिया।

अध्याय 5

1 और ऐसा हुआ कि जब धरती पर इंसानों की संख्या बढ़ने लगी और उन्हें बेटियाँ पैदा हुईं, तो इस जुबली के एक साल में परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने उन्हें देखा, कि वे देखने में सुंदर हैं; और उन्होंने अपनी पसंद की सभी से पत्नियाँ ले लीं, और उनसे बेटे पैदा हुए और वे बहुत बड़े थे।
2 और धरती पर अधर्म बढ़ गया और सब जीवों ने अपना रास्ता बिगाड़ लिया, इंसान, मवेशी, जानवर, पक्षी और धरती पर चलने वाले सब जीव-जंतु - सबने अपने रास्ते और अपने तरीके बिगाड़ लिए, और एक-दूसरे को खाने लगे, और धरती पर अधर्म बढ़ गया और सब इंसानों के विचारों की हर कल्पना लगातार बुरी होती गई।
3 और परमेश्वर ने पृथ्वी पर नज़र डाली, और देखा कि वह बिगड़ी हुई थी, और सभी प्राणियों ने अपने-अपने काम बिगाड़ लिए थे, और पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों ने उसकी आँखों के सामने हर तरह की बुराई की थी।
4 और उसने कहा कि वह इंसान और उस धरती के सभी जीवों को खत्म कर देगा जिसे उसने बनाया है।
5 लेकिन नूह पर यहोवा की कृपा बनी रही।
6 और जिन फ़रिश्तों को उसने धरती पर भेजा था, उनसे वह बहुत नाराज़ हुआ, और उसने हुक्म दिया कि उन्हें उनके सारे राज से जड़ से उखाड़ दो, और उसने हमें हुक्म दिया कि उन्हें धरती की गहराइयों में बांध दो, और देखो वे उनके बीच में बंधे हुए हैं, और अलग रखे गए हैं।
7 और उनके बेटों के खिलाफ़ उसके सामने से यह हुक्म निकला कि उन्हें तलवार से मार दिया जाए और आसमान के नीचे से मिटा दिया जाए।
8 और उसने कहा, 'मेरी आत्मा हमेशा इंसान पर नहीं रहेगी; क्योंकि वे भी शरीर ही हैं और उनके दिन एक सौ बीस साल होंगे।'
9 और उसने अपनी तलवार उनके बीच चलाई ताकि हर कोई अपने पड़ोसी को मार डाले, और वे एक-दूसरे को मारने लगे जब तक कि वे सब तलवार से मारे नहीं गए और धरती से खत्म नहीं हो गए।
10 और उनके पिता (उनकी तबाही के) गवाह थे, और इसके बाद वे हमेशा के लिए धरती की गहराइयों में बंधे रहे, उस दिन तक जब तक बड़ी सज़ा का दिन न आ जाए, जब उन सभी पर जिन्होंने प्रभु के सामने अपने रास्ते और अपने काम बिगाड़े हैं, सज़ा दी जाएगी।
11 और उसने सबको उनकी जगहों से खत्म कर दिया, और उनमें से कोई भी ऐसा नहीं बचा जिसे उसने उनकी सारी बुराई के हिसाब से सज़ा न दी हो।
12 और उसने अपने सभी कामों के लिए एक नया और नेक स्वभाव बनाया, ताकि वे अपने पूरे स्वभाव में हमेशा पाप न करें, बल्कि हर कोई अपनी तरह से हमेशा नेक रहे।
13 और सबका न्याय तय किया गया है और नेकी के साथ आसमान की तख्तियों पर लिखा गया है - उन सबका न्याय जो उस रास्ते से भटक जाते हैं जिस पर चलने के लिए उन्हें तय किया गया है; और अगर वे उस पर नहीं चलते, तो हर जीव और हर तरह के लिए न्याय लिखा गया है।
14 और स्वर्ग में या धरती पर, या रोशनी में या अंधेरे में, या अधोलोक में या गहराई में, या अंधेरे की जगह में (जिसका फैसला न हुआ हो) कुछ भी नहीं है; और उनके सभी फैसले तय, लिखे और खुदे हुए हैं।
15 वह सबका न्याय करेगा, बड़े का उसकी महानता के अनुसार, और छोटे का उसकी तुच्छता के अनुसार, और हर एक का उसके काम के अनुसार।
16 और वह किसी की तरफ़दारी नहीं करेगा, न ही वह तोहफ़े लेगा, अगर वह कहे कि वह हर एक पर सज़ा देगा: अगर कोई धरती पर मौजूद हर चीज़ दे दे, तो भी वह तोहफ़े या किसी की तरफ़दारी नहीं करेगा, न ही उसके हाथ से कुछ लेगा, क्योंकि वह एक नेक जज है।
17 और इस्राएल के बच्चों के बारे में यह लिखा और तय किया गया है: अगर वे नेकी से उसकी ओर मुड़ें तो वह उनके सभी गुनाहों को माफ़ कर देगा और उनके सभी पापों को माफ़ कर देगा।
18 यह लिखा और तय है कि वह हर साल एक बार उन सभी पर दया करेगा जो अपने सारे गुनाहों से मुँह मोड़ लेते हैं।
19 और जिन लोगों ने बाढ़ से पहले अपने तौर-तरीके और सोच खराब कर ली थी, उनमें से सिर्फ़ नूह को ही अपनाया गया; क्योंकि उसे उसके बेटों की वजह से अपनाया गया, जिन्हें (परमेश्वर ने) उसकी वजह से बाढ़ के पानी से बचाया था; क्योंकि उसका दिल अपने सभी कामों में नेक था, जैसा कि उसके बारे में हुक्म दिया गया था, और जो कुछ उसके लिए तय किया गया था, उससे वह हटा नहीं था।
20 और प्रभु ने कहा कि वह धरती पर मौजूद हर चीज़ को खत्म कर देगा, इंसान, मवेशी, जानवर, हवा के पक्षी और धरती पर चलने वाले जीव-जंतु। और उसने नूह को एक जहाज़ बनाने का हुक्म दिया, ताकि वह खुद को बाढ़ के पानी से बचा सके।

21 और नूह ने जहाज़ को पूरी तरह से वैसा ही बनाया जैसा उसने उसे आज्ञा दी थी, यानी सत्ताईसवीं जुबली में, पाँचवें साल के पाँचवें हफ़्ते में (पहले महीने की नई चाँदनी को)। [1307 AM]
22 और वह छठे साल में दाखिल हुआ, [1308 AM] दूसरे महीने के नए चाँद को, सोलहवें तक; और वह और जो कुछ हम उसके पास लाए थे, सब जहाज़ में दाखिल हुए, और सत्रहवीं शाम को यहोवा ने उसे बाहर से बंद कर दिया।
23 और यहोवा ने स्वर्ग के सात दरवाज़े और बड़े गहरे पानी के झरनों के मुँह खोल दिए, जिनकी गिनती सात थी।
24 और चालीस दिन और चालीस रात तक आसमान से पानी बरसता रहा, और गहरे पानी के झरनों से भी पानी बहता रहा, जब तक कि पूरी दुनिया पानी से भर नहीं गई।
25 और धरती पर पानी बढ़ गया: पानी सब ऊँचे पहाड़ों से पंद्रह हाथ ऊपर उठ गया, और जहाज़ धरती से ऊपर उठ गया, और पानी के ऊपर चलने लगा।
26 और धरती पर पानी पाँच महीने, यानी एक सौ पचास दिन तक बना रहा।
27 और जहाज़ जाकर अरारात के पहाड़ों में से एक लूबर की चोटी पर रुका।
28 और (अमावस्या को) चौथे महीने में बड़े गहरे पानी के झरने बंद हो गए और स्वर्ग के दरवाज़े बंद हो गए; और सातवें महीने की अमावस्या को धरती के सभी गहरे गड्ढों के मुंह खुल गए, और पानी नीचे गहरे पानी में उतरने लगा।
29 और दसवें महीने के नए चाँद को पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई दीं, और पहले महीने के नए चाँद को धरती दिखाई देने लगी।
30 और सातवें वर्ष के पाँचवें सप्ताह में पृथ्वी के ऊपर से जल गायब हो गया, और दूसरे महीने के सत्रहवें दिन पृथ्वी सूख गई।
31 और सत्ताईसवें दिन उसने जहाज़ खोला, और उसमें से जानवर, गाय-बैल, पक्षी और हर तरह के चलने-फिरने वाले जीव-जंतु बाहर निकल आए।

अध्याय 6

1 और तीसरे महीने के नए चाँद को वह जहाज़ से बाहर निकला, और उस पहाड़ पर एक वेदी बनाई।
2 और उसने धरती के लिए प्रायश्चित किया, और एक बकरी का बच्चा लेकर उसके खून से धरती के सारे गुनाहों के लिए प्रायश्चित किया; क्योंकि जो कुछ भी उस पर था, वह सब खत्म हो गया था, सिवाय उनके जो नूह के साथ जहाज़ में थे।
3 और उसने उसकी चर्बी वेदी पर रखी, और एक बैल, एक बकरा, एक भेड़, बकरी के बच्चे, नमक, एक कबूतर और कबूतर का बच्चा लिया, और वेदी पर होमबलि रखी, और उस पर तेल मिला हुआ चढ़ावा चढ़ाया, और दाखरस छिड़का, और सब पर लोबान छिड़का, और एक अच्छी खुशबू पैदा की, जो यहोवा को मंज़ूर हो।
4 और प्रभु ने अच्छी खुशबू सूंघी, और उससे वादा किया कि धरती को खत्म करने के लिए फिर कभी बाढ़ नहीं आएगी; धरती पर बीज बोने और कटाई के दिन कभी खत्म नहीं होंगे; सर्दी और गर्मी, गर्मी और सर्दी, दिन और रात का क्रम कभी नहीं बदलेगा, और न ही हमेशा के लिए खत्म होगा।
5 'और तुम धरती पर बढ़ो और बढ़ो, और उस पर बहुत हो जाओ, और उस पर आशीर्वाद बनो। मैं तुम्हारा डर और तुम्हारा खौफ धरती और समुद्र की हर चीज़ में पैदा करूँगा।
6 और देखो, मैंने तुम्हें सारे जानवर, सारे पंख वाले जीव, धरती पर चलने वाले सारे जीव, पानी की मछलियां और खाने की सारी चीज़ें दी हैं; जैसे हरी सब्ज़ियां, मैंने तुम्हें खाने के लिए सब कुछ दिया है।
7 लेकिन तुम मांस को उसके प्राण और खून के साथ मत खाना; क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उसके खून में है, ऐसा न हो कि तुम्हारे प्राणों का खून मांगा जाए। मैं हर मनुष्य से, हर (जानवर) से मनुष्य के खून का बदला लूंगा।
8 जो कोई इंसान का खून इंसान के द्वारा बहाएगा, उसका खून भी बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने इंसान को अपने ही स्वरूप में बनाया है।
9 और तुम बढ़ो और धरती पर बढ़ो।
10 और नूह और उसके बेटों ने कसम खाई कि वे किसी भी मांस का खून नहीं खाएंगे, और उसने इस महीने में पृथ्वी की सभी पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए प्रभु परमेश्वर के सामने एक वादा किया।
11 इसी वजह से उसने तुमसे कहा था कि तुम इस महीने पहाड़ पर इस्राएलियों के साथ कसम खाकर एक वादा करो, और उन पर खून छिड़को, क्योंकि उस वादे की सारी बातें जो यहोवा ने उनसे हमेशा के लिए की थीं।
12 और यह गवाही तुम्हारे बारे में इसलिए लिखी गई है कि तुम इसे हमेशा मानना, ताकि तुम धरती पर रहने के दौरान किसी भी दिन जानवरों, पक्षियों या मवेशियों का खून न खाओ, और जो आदमी धरती पर रहने के दौरान किसी भी जानवर, मवेशी या पक्षियों का खून खाएगा, वह और उसका वंश ज़मीन से जड़ से खत्म कर दिया जाएगा।
13 और तू इस्राएल के बच्चों को आज्ञा दे कि वे खून न खाएं, ताकि उनके नाम और उनके वंश हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने हमेशा बने रहें।
14 और इस नियम के लिए दिनों की कोई सीमा नहीं है, क्योंकि यह हमेशा के लिए है। वे इसे अपनी पीढ़ियों तक मानेंगे, ताकि वे वेदी के सामने खून से तुम्हारी तरफ से विनती करते रहें; हर दिन और सुबह और शाम को वे हमेशा प्रभु के सामने तुम्हारी तरफ से माफ़ी मांगेंगे ताकि वे इसे मान सकें और जड़ से न उखाड़े जाएं।
15 और उसने नूह और उसके बेटों को एक निशानी दी कि धरती पर फिर कभी बाढ़ न आए।
16 उसने बादल में अपना धनुष इस हमेशा के वादे की निशानी के तौर पर रखा कि धरती पर फिर कभी बाढ़ न आए और धरती के हमेशा के लिए उसे खत्म न कर दे।
17 इसी वजह से यह तय किया गया है और आसमान की पट्टियों पर लिखा है कि वे साल में एक बार इस महीने में हफ़्तों का त्योहार मनाएँ, ताकि हर साल करार को नया किया जा सके।
18 और यह पूरा त्योहार स्वर्ग में सृष्टि के दिन से लेकर नूह के दिनों तक मनाया गया - छब्बीस जुबली और साल के पाँच हफ़्ते [1309-1659 AM]: और नूह और उसके बेटों ने इसे सात जुबली और साल के एक हफ़्ते तक मनाया, नूह की मौत के दिन तक, और नूह की मौत के दिन से उसके बेटों ने इसे अब्राहम के दिनों तक मनाना बंद कर दिया, और वे खून खाते हैं।

19 लेकिन अब्राहम ने इसे मनाया, और इसहाक और याकूब और उसके बच्चों ने इसे तुम्हारे दिनों तक मनाया, और तुम्हारे दिनों में इस्राएल के बच्चे इसे भूल गए जब तक कि तुमने इसे इस पहाड़ पर फिर से नहीं मनाया।
20 और तू इस्राएल के बच्चों को यह हुक्म दे कि वे अपनी सभी पीढ़ियों में यह त्योहार मनाएं, यह उनके लिए एक हुक्म है: साल में एक दिन, इस महीने में वे यह त्योहार मनाएं।
21 क्योंकि यह हफ़्तों का त्योहार और पहले फल का त्योहार है: यह त्योहार दोहरा और दो तरह का है: जैसा इसके बारे में लिखा और खुदा हुआ है, उसी के अनुसार इसे मनाओ।
22 क्योंकि मैंने तुम्हारे लिए जो पहली कानून की किताब लिखी है, उसमें लिखा है कि तुम इसे इसके समय पर, साल में एक दिन मनाना। और मैंने तुम्हें इसके बलिदान भी समझाए हैं ताकि इस्राएल के बच्चे इसे याद रखें और अपनी पीढ़ियों में हर साल इसी महीने में, एक दिन मनाएं।
23 और पहले महीने के नए चाँद, चौथे महीने के नए चाँद, सातवें महीने के नए चाँद और दसवें महीने के नए चाँद को याद रखने के दिन और साल के चारों हिस्सों में मौसम के दिन होते हैं। ये हमेशा के लिए एक सबूत के तौर पर लिखे और तय किए गए हैं।
24 और नूह ने उन्हें अपने लिए हमेशा के लिए पीढ़ियों के लिए त्योहारों के तौर पर तय किया, ताकि वे उसके लिए एक यादगार बन जाएं।
25 और पहले महीने के नए चाँद को उसे अपने लिए एक जहाज़ बनाने का हुक्म मिला, और उस दिन धरती सूख गई और उसने जहाज़ खोला और धरती को देखा।
26 और चौथे महीने की अमावस्या को नीचे की गहरी खाई के मुंह बंद हो गए। और सातवें महीने की अमावस्या को धरती की सभी गहरी खाइयों के मुंह खुल गए, और पानी उनमें उतरने लगा।
27 और दसवें महीने के नए चाँद को पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई दीं, और नूह खुश हुआ।
28 और इसी वजह से उसने उन्हें अपने लिए हमेशा की याद में त्योहारों के तौर पर तय किया, और इसी तरह वे तय किए गए।
29 और उन्होंने उन्हें आसमानी तख्तियों पर रख दिया, हर एक में तेरह हफ़्ते थे; उनकी याद एक से दूसरे तक पहुँचती गई, पहले से दूसरे तक, और दूसरे से तीसरे तक, और तीसरे से चौथे तक।
30 और हुक्म के सभी दिन 250 हफ़्ते के होंगे, और (ये) पूरा साल पूरा करेंगे। इसी तरह यह आसमानी तख्तियों पर खुदा और लिखा हुआ है।
31 और इस आज्ञा को एक साल या हर साल टाला नहीं जाएगा।
32 और तुम इस्राएलियों को हुक्म दो कि वे इस हिसाब से सालों को मानें - तीन सौ चौसठ दिन, और (ये) एक पूरा साल बनेंगे, और वे इसके दिनों और त्योहारों से इसके समय में कोई बदलाव नहीं करेंगे; क्योंकि सब कुछ उनके हिसाब से होगा, और वे कोई दिन नहीं छोड़ेंगे और न ही किसी त्योहार में कोई बदलाव करेंगे।
33 लेकिन अगर वे लापरवाही करते हैं और उनके हुक्म के मुताबिक नहीं चलते, तो वे अपने सब मौसमों को बिगाड़ देंगे और साल इस (क्रम) से हट जाएँगे, [और वे मौसमों को बिगाड़ देंगे और साल हट जाएँगे] और वे अपने नियमों को नज़रअंदाज़ कर देंगे।
34 और इस्राएल के सभी बच्चे भूल जाएंगे और सालों का रास्ता नहीं ढूंढ पाएंगे, और नए चांद, और मौसम, और सब्त के दिनों को भूल जाएंगे और वे सालों के पूरे क्रम में गलत हो जाएंगे।
35 क्योंकि मैं जानता हूँ और अब से मैं तुम्हें यह बता दूँगा, और यह मेरी अपनी सोच नहीं है; क्योंकि किताब मुझसे पहले लिखी हुई है, और आसमान की पट्टियों पर दिनों का बँटवारा तय है, ताकि वे वाचा के त्योहारों को भूलकर अपनी गलती और अपनी अज्ञानता के अनुसार गैर-यहूदियों के त्योहारों के अनुसार न चलें।
36 क्योंकि कुछ लोग ज़रूर चाँद को देखेंगे कि वह कैसे मौसम में गड़बड़ी करता है और हर साल दस दिन पहले आ जाता है।
37 इसी वजह से उन पर ऐसे साल आएंगे जब वे (व्यवस्था) बिगाड़ देंगे, और एक घिनौने दिन को गवाही का दिन और एक अशुद्ध दिन को त्योहार का दिन बना देंगे, और वे सभी दिनों को, पवित्र को अशुद्ध के साथ, और अशुद्ध दिन को पवित्र के साथ मिला देंगे; क्योंकि वे महीनों, सब्त, त्योहारों और जुबली के बारे में गलत करेंगे।
38 इसी वजह से मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ और गवाही देता हूँ कि तुम उनके सामने गवाही दो; क्योंकि तुम्हारी मौत के बाद तुम्हारे बच्चे उन्हें परेशान करेंगे, जिससे वे साल को सिर्फ़ तीन सौ चौसठ दिन का नहीं बना पाएँगे, और इसी वजह से वे नए चाँद, मौसम, सब्त और त्योहारों के मामले में गलत करेंगे, और वे हर तरह का खून और हर तरह का मांस खाएँगे।

अध्याय 7

1 और पहले वर्ष [1317 AM] के सातवें सप्ताह में, इस जयंती में, नूह ने लूबर नामक पहाड़ पर, जिस पर जहाज़ ने विश्राम किया था, अरारात पहाड़ों में से एक पर दाखलता लगाई, और उन्होंने चौथे वर्ष में फल दिया, [1320 AM] और उसने उनके फलों की रक्षा की, और इस वर्ष सातवें महीने में उन्हें इकट्ठा किया।
2 और उसने उससे दाखरस बनाया, और उसे एक पात्र में रखकर पाँचवें वर्ष के पहले महीने के नये चाँद के पहले दिन तक रख लिया।
3 और उसने इस त्योहार के दिन खुशी से जश्न मनाया, और यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाई, एक जवान बैल, एक मेढ़ा, सात भेड़ें, हर एक एक साल की, और एक बकरी का बच्चा, ताकि वह अपने और अपने बेटों के लिए प्रायश्चित कर सके।
4 और उसने पहले बकरी का बच्चा तैयार किया, और उसका कुछ खून उस मांस पर लगाया जो उसने अपनी बनाई हुई वेदी पर था, और सारी चर्बी उसने उस वेदी पर रखी जहाँ उसने होमबलि चढ़ाई थी, और बैल, मेढ़े और भेड़, और उनका सारा मांस उसने वेदी पर रख दिया।
5 और उसने तेल में मिला हुआ उनका सारा चढ़ावा उस पर रख दिया, और उसके बाद उसने वेदी पर पहले से जलाई हुई आग पर दाखरस छिड़का, और वेदी पर धूप रखी और एक मीठी खुशबू फैलाई जो उसके परमेश्वर यहोवा को मंज़ूर थी।
6 और वह खुश हुआ और उसने और उसके बच्चों ने खुशी-खुशी यह दाखमधु पी।
7 और शाम हुई, और वह अपने डेरे में गया, और नशे में धुत होकर लेट गया, और सोते समय अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा।
8 और हाम ने अपने पिता नूह को नंगा देखा, और बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों को बताया।

9 तब शेम और येपेत ने अपना कपड़ा लिया और उठ खड़े हुए। उन्होंने कपड़ा अपने कंधों पर रखा और पीछे की ओर जाकर अपने पिता की शर्म को ढक लिया, और उनके चेहरे पीछे की ओर हो गए।
10 और नूह नींद से जागा और उसने जाना कि उसके छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया है, और उसने अपने बेटे को श्राप दिया और कहा: 'कनान श्रापित हो; वह अपने भाइयों का गुलाम बनकर रहेगा।'
11 और उसने शेम को आशीर्वाद दिया, और कहा: 'शेम का प्रभु परमेश्वर धन्य हो, और कनान उसका दास होगा।
12 परमेश्वर येपेत को बढ़ाएगा, और परमेश्वर शेम के घर में वास करेगा, और कनान उसका दास होगा।'
13 और हाम को पता चला कि उसके पिता ने उसके छोटे बेटे को श्राप दिया है, और वह इस बात से नाराज़ हुआ कि उसने उसके बेटे को श्राप दिया था। और वह अपने पिता से अलग हो गया, वह और उसके बेटे, कूश, मिस्र, पूत और कनान।
14 और उसने अपने लिए एक शहर बसाया और उसका नाम अपनी पत्नी नेलातामाउक के नाम पर रखा।
15 जब येपेत ने यह देखा, तो उसे अपने भाई से जलन हुई। उसने भी अपने लिए एक शहर बसाया और उसका नाम अपनी पत्नी 'अदातानेसीस' के नाम पर रखा।
16 और शेम अपने पिता नूह के साथ रहने लगा, और उसने अपने पिता के पास पहाड़ पर एक शहर बसाया, और उसका नाम भी अपनी पत्नी सेदेकेतेलेबाब के नाम पर रखा।
17 और देखो, ये तीन शहर लूबर पहाड़ के पास हैं; पहाड़ के सामने पूरब में सेदेकेतेलेबाब है; और दक्षिण में नाएलतामाउक है; और पश्चिम की ओर अडातानिस है।
18 और शेम के बेटे ये हैं: एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद (यह बेटा बाढ़ के दो साल बाद पैदा हुआ था) और लूद और अराम।
19 येपेत के बेटे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास: ये नूह के बेटे हैं।
20 और अट्ठाईसवीं जुबली [1324-1372 AM] में नूह ने अपने बेटों के बेटों को वे नियम और आज्ञाएँ, और वे सभी नियम जो वह जानता था, बताना शुरू किया, और उसने अपने बेटों को नेकी का पालन करने, अपने शरीर की शर्म को छिपाने, अपने बनाने वाले को आशीर्वाद देने, माता-पिता का आदर करने, अपने पड़ोसी से प्यार करने, और अपनी आत्मा को व्यभिचार, गंदगी और सभी बुरे कामों से बचाने के लिए कहा।
21 क्योंकि इन तीन बातों की वजह से धरती पर बाढ़ आई, यानी उस व्यभिचार की वजह से जिसमें पहरेदारों ने अपने नियमों के खिलाफ जाकर मर्दों की बेटियों के पीछे भागकर उनसे शादी कर ली, जिन्हें उन्होंने चाहा: और उन्होंने अशुद्धता की शुरुआत की।
22 और उनके नफीदीम बेटे पैदा हुए, और वे सब एक जैसे नहीं थे, और एक-दूसरे को खा गए: और दानवों ने नफील को मार डाला, और नफील ने एलजो को, और एलजो ने इंसानों को, और एक आदमी को दूसरे को मार डाला।
23 और हर एक ने खुद को गलत काम करने और बहुत खून बहाने के लिए बेच दिया, और धरती गलत काम से भर गई।
24 और इसके बाद उन्होंने जानवरों और पक्षियों, और धरती पर चलने-फिरने वाले सभी जीवों के खिलाफ पाप किया: और धरती पर बहुत खून बहा, और इंसानों की हर कल्पना और इच्छा लगातार बेकार और बुरी चीज़ों की कल्पना करती रही।
25 और यहोवा ने धरती से सब कुछ मिटा दिया; उनके बुरे कामों की वजह से, और धरती पर बहाए गए खून की वजह से उसने सब कुछ मिटा दिया।
26 'और हम बचे रहे, मैं और तुम, मेरे बेटे, और जो कुछ हमारे साथ जहाज़ में गया था, और देखो, मैं तुम्हारे काम अपने सामने देख रहा हूँ कि तुम नेकी से नहीं चलते: क्योंकि तुम बर्बादी के रास्ते पर चलने लगे हो, और तुम एक दूसरे से अलग हो रहे हो, और एक दूसरे से जलते हो, और (ऐसा होता है) कि तुम, मेरे बेटों, अपने भाई के साथ तालमेल नहीं रखते।
27 क्योंकि मैं देख रहा हूँ, और देखो शैतानों ने तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के खिलाफ़ (अपनी) चालें चलनी शुरू कर दी हैं और अब मुझे तुम्हारी वजह से डर लग रहा है, कि मेरी मौत के बाद तुम धरती पर इंसानों का खून बहाओगे, और तुम भी धरती से खत्म हो जाओगे।
28 क्योंकि जो कोई इंसान का खून बहाएगा, और जो कोई किसी भी तरह के जानवर का खून खाएगा, वह सब धरती से खत्म कर दिया जाएगा।
29 और धरती पर कोई भी ऐसा इंसान नहीं बचेगा जो खून खाता हो, या किसी इंसान का खून बहाता हो, न ही उसका कोई वंश या वंश आसमान के नीचे रहेगा; क्योंकि वे अधोलोक में जाएंगे, और सज़ा की जगह में उतरेंगे, और वे सब गहरी अंधेरी जगह में एक भयानक मौत से फेंक दिए जाएंगे।
30 जितने भी दिनों में तुमने किसी जानवर, मवेशी या धरती पर उड़ने वाले किसी भी मक्खी को मारा है, उन सभी दिनों में तुम पर कोई खून नहीं दिखेगा, और जो धरती पर बहा है उसे ढककर अपनी आत्मा के लिए अच्छा काम करो।
31 और तुम उसके जैसे न बनो जो खून के साथ खाता है, बल्कि खुद को सावधान रखना कि कोई तुम्हारे सामने खून न खाए: खून को ढक देना, क्योंकि मुझे तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को, और सभी जानवरों को गवाही देने की आज्ञा दी गई है।
32 और आत्मा को मांस के साथ खाने मत दो, ताकि तुम्हारा खून, जो तुम्हारी जान है, किसी ऐसे मांस से न माँगा जाए जो उसे धरती पर बहाए।
33 क्योंकि धरती उस खून से साफ़ नहीं होगी जो उस पर बहाया गया है; बल्कि सिर्फ़ उसी के खून से धरती अपनी सभी पीढ़ियों के लिए साफ़ होगी जिसने उसे बहाया है।
34 और अब, मेरे बच्चों, ध्यान दो: न्याय और नेकी का काम करो ताकि तुम पूरी धरती पर नेकी में रोप जाओ, और मेरे परमेश्वर के सामने तुम्हारी महिमा बढ़े, जिसने मुझे बाढ़ के पानी से बचाया।
35 और देखो, तुम जाकर अपने लिए शहर बनाओगे, और उनमें धरती के सारे पेड़-पौधे और सब फल देने वाले पेड़ लगाओगे।
36 तीन साल तक जो कुछ खाया जाएगा उसका फल इकट्ठा नहीं किया जाएगा: और चौथे साल उसका फल पवित्र माना जाएगा [और वे पहला फल चढ़ाएंगे], जो सबसे ऊंचे परमेश्वर के सामने स्वीकार्य होगा, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजें बनाई हैं। वे पहले फल के रूप में पहली दाखमधु और तेल को प्रभु की वेदी पर, जो इसे ग्रहण करता है, खूब चढ़ाएं, और जो बचे उसे प्रभु के घर के सेवक उस वेदी के सामने खाएं जो इसे ग्रहण करती है।
37 और पांचवें साल में तुम उसे सही और नेकी से छोड़ो, और तुम नेक बनोगे, और जो कुछ तुम लगाओगे वह कामयाब होगा।

38 क्योंकि तुम्हारे पिता के पिता हनोक ने अपने बेटे मतूशेलह को और मतूशेलह के बेटे लेमेक को यही आज्ञा दी थी, और लेमेक ने मुझे वे सारी आज्ञाएँ दीं जो उसके पुरखों ने उसे दी थीं।
39 और मेरे बेटों, मैं भी तुम्हें वही आज्ञा देता हूँ, जो हनोक ने अपने बेटे को पहली जुबली में दी थी: जब वह ज़िंदा था, अपनी पीढ़ी में सातवाँ था, तो उसने अपने बेटे और उसके बेटों को अपनी मौत के दिन तक आज्ञा दी और गवाही दी।'

अध्याय 8

1 उनतीसवीं जयंती के पहले सप्ताह में, [1373 AM] इसके आरंभ में अर्पक्षद ने एक पत्नी ली, जिसका नाम रसूएजा था, जो एलाम की बेटी सुसान की बेटी थी, और उसने तीसरे वर्ष इसी सप्ताह में उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया, [1375 AM] और उसने उसका नाम कैनम रखा।
2 और बेटा बड़ा हो गया, और उसके पिता ने उसे लिखना सिखाया, और वह अपने लिए एक जगह ढूंढने चला गया जहाँ वह अपने लिए एक शहर बसा सके।
3 और उसे एक लिखावट मिली जो पिछली पीढ़ियों ने चट्टान पर खुदी हुई थी, और उसने उस पर लिखी बातें पढ़ीं, और उसे लिख लिया और उसके कारण पाप किया; क्योंकि उसमें पहरेदारों की शिक्षा थी जिसके अनुसार वे आकाश के सभी चिन्हों में सूर्य, चंद्रमा और तारों के शकुनों को मानते थे।
4 और उसने यह बात लिख ली और उसके बारे में कुछ नहीं कहा; क्योंकि वह नूह से इस बारे में बात करने से डरता था, कहीं ऐसा न हो कि वह इस वजह से उस पर गुस्सा हो जाए।
5 और तीसवीं जुबली के साल [1429 AM] के पहले साल के दूसरे हफ़्ते में, उसने एक पत्नी से शादी की, और उसका नाम मेल्का था, जो येपेत के बेटे मदाई की बेटी थी, और चौथे साल [1432 AM] उसे एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम शेला रखा; क्योंकि उसने कहा: 'सच में मुझे भेजा गया है।'
6 जब वह पैदा हुआ तो चौथे साल में शेलह बड़ा हुआ और उसने एक औरत से शादी कर ली, और उसका नाम मुआक था। वह उसके पिता केसेद की बेटी थी। यह शादी पहले साल के एक और तीसवें साल में हुई, जो पाँचवें हफ़्ते में हुई।
7 और उसने पांचवें साल [1503 AM] में उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम एबर रखा: और उसने अपनी एक पत्नी ली, और उसका नाम 'अज़ूराद' रखा, जो नेब्रोद की बेटी थी, यह बत्तीसवीं जुबली में, तीसरे साल के सातवें हफ़्ते में हुआ। [1564 AM]
8 और छठे साल [1567 AM] में, उसने उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम पेलेग रखा; क्योंकि जिन दिनों वह पैदा हुआ था, नूह के बच्चों ने धरती को आपस में बाँटना शुरू कर दिया था: इसी वजह से उसने उसका नाम पेलेग रखा।
9 और उन्होंने चुपके से आपस में यह बात बाँट ली और नूह को बता दी।
10 और ऐसा हुआ कि तैंतीसवीं जयंती [1569 AM] की शुरुआत में उन्होंने धरती को तीन हिस्सों में बाँट दिया, शेम, हाम और येपेत के लिए, हर एक की विरासत के हिसाब से, पहले साल के पहले हफ़्ते में, जब हम में से एक, जिसे भेजा गया था, उनके साथ था।
11 और उसने अपने बेटों को बुलाया, और वे और उनके बच्चे उसके पास आए, और उसने ज़मीन को चिट्ठियों में बाँट दिया, जिसे उसके तीन बेटों को लेना था, और उन्होंने अपने हाथ बढ़ाकर अपने पिता नूह के पेट से लिखा हुआ निकाला।
12 और शेम के हिस्से में धरती का बीच का हिस्सा लिखा था, जिसे वह अपने और अपने बेटों के लिए हमेशा की पीढ़ियों के लिए विरासत के तौर पर लेगा। यह हिस्सा राफा पहाड़ों के बीच से, टीना नदी के पानी के मुहाने से शुरू होता है। उसका हिस्सा इस नदी के बीच से पश्चिम की ओर जाता है, और यह उस गहरे गड्ढे तक फैला हुआ है, जहाँ से यह नदी निकलती है और अपना पानी मीट सागर में डालती है, और यह नदी बड़े समुद्र में मिलती है। और जो कुछ उत्तर की ओर है वह याफेथ का है, और जो कुछ दक्षिण की ओर है वह शेम का है।
13 और यह कारासो तक फैला हुआ है: यह उस जीभ के सीने में है जो दक्षिण की ओर देखती है।
14 और उसका हिस्सा बड़े समुद्र के किनारे-किनारे फैला हुआ है, और यह एक सीधी लाइन में तब तक फैला हुआ है जब तक यह दक्षिण की ओर देखने वाली जीभ के पश्चिम तक नहीं पहुँच जाता: क्योंकि इस समुद्र का नाम मिस्र के समुद्र की जीभ रखा गया है।
15 और यह यहाँ से दक्षिण की ओर मुड़कर महासागर के मुहाने की ओर (इसके) पानी के किनारे पर है, और यह पश्चिम में अफ़्रा तक फैली हुई है, और यह गीहोन नदी के पानी तक पहुँचती है, और गीहोन के पानी के दक्षिण में, इस नदी के किनारों तक फैली हुई है।
16 और यह पूरब की तरफ़ बढ़ता हुआ, उसके दक्षिण में अदन के बाग़ तक पहुँचता है, [दक्षिण की ओर] और पूरे अदन देश और पूरे पूरब के पूरब से, यह पूरब की तरफ़ मुड़ता है और तब तक आगे बढ़ता है जब तक यह राफ़ा नाम के पहाड़ के पूरब तक नहीं पहुँच जाता, और यह टीना नदी के मुहाने के किनारे तक उतरता है।
17 यह हिस्सा शेम और उसके बेटों के लिए चिट्ठी से निकला, ताकि वे इसे हमेशा के लिए अपनी पीढ़ियों तक अपने पास रखें।
18 और नूह खुश हुआ कि शेम और उसके बेटों के लिए यह हिस्सा निकला, और उसे वह सब याद आया जो उसने अपने मुँह से भविष्यवाणी में कहा था; क्योंकि उसने कहा था: 'शेम के परमेश्वर यहोवा धन्य हो, और यहोवा शेम के घर में वास करे।'
19 और वह जानता था कि अदन का बगीचा सबसे पवित्र जगह है, और प्रभु का निवास है, और सिनाई पर्वत रेगिस्तान का केंद्र है, और सिय्योन पर्वत - पृथ्वी की नाभि का केंद्र है: ये तीनों एक दूसरे के आमने-सामने पवित्र स्थानों के रूप में बनाए गए थे।
20 और उसने देवताओं के परमेश्वर को, जिसने यहोवा का वचन उसके मुंह में डाला था, और यहोवा को सदा के लिए धन्य कहा।
21 और वह जानता था कि शेम और उसके बेटों को पीढ़ियों तक एक धन्य हिस्सा और आशीर्वाद मिला है - अदन की पूरी ज़मीन और लाल सागर की पूरी ज़मीन, और पूरब और भारत की पूरी ज़मीन, और लाल सागर और उसके पहाड़, और बाशान की सारी ज़मीन, और लेबनान की सारी ज़मीन और कफ़्तूर के द्वीप, और सनीर और अमाना के सभी पहाड़, और उत्तर में अश्शूर के पहाड़, और एलाम, अश्शूर, और बाबेल, और सुसान और माएदाई की सारी ज़मीन, और अरारत के सभी पहाड़, और समुद्र के पार का सारा इलाका, जो उत्तर की ओर अश्शूर के पहाड़ों के

पार है, एक धन्य और बड़ी ज़मीन, और उसमें जो कुछ भी है वह बहुत अच्छा है।
22 और हाम के लिए दूसरा हिस्सा निकला, गीहोन के पार दक्षिण की ओर बाग़ के दाहिनी ओर, और यह दक्षिण की ओर फैला हुआ है और यह आग के सभी पहाड़ों तक फैला हुआ है, और यह पश्चिम की ओर 'अटेल के समुद्र तक फैला हुआ है और यह पश्चिम की ओर तब तक फैला हुआ है जब तक यह माउक के समुद्र तक नहीं पहुँच जाता - वह (समुद्र) जिसमें हर वह चीज़ उतरती है जो नष्ट नहीं हुई है।
23 और यह उत्तर की ओर गादीर की सीमा तक जाती है, और समुद्र के किनारे से होते हुए बड़े समुद्र के पानी तक जाती है जब तक कि यह गीहोन नदी के पास नहीं पहुँच जाती, और गीहोन नदी के साथ-साथ तब तक चलती है जब तक कि यह अदन के बगीचे के दाहिनी ओर नहीं पहुँच जाती।
24 और यह वही ज़मीन है जो हाम के लिए निकली, वह हिस्सा जो उसे हमेशा के लिए अपने और अपने बेटों के लिए उनकी पीढ़ियों तक रहने के लिए मिला।
25 और येपेत के लिए टीना नदी के पार का तीसरा हिस्सा उसके पानी के निकलने की जगह के उत्तर में निकला, और यह उत्तर-पूर्व में गोग के पूरे इलाके और उसके पूरब के पूरे देश तक फैला हुआ है।
26 और यह उत्तर की ओर उत्तर की ओर फैली हुई है, और यह उत्तर की ओर क़ेल्ट के पहाड़ों तक, और माउक के समुद्र की ओर फैली हुई है, और यह गादीर के पूर्व में समुद्र के पानी के क्षेत्र तक जाती है।
27 और यह फारा के पश्चिम तक फैली हुई है और फिर अफेराग की ओर लौटती है, और यह पूर्व की ओर मेआत सागर के पानी तक फैली हुई है।
28 और यह उत्तर-पूर्व दिशा में टीना नदी के इलाके तक फैली हुई है, जब तक कि यह राफा पहाड़ की ओर अपने पानी की सीमा तक नहीं पहुँच जाती, और फिर यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है।
29 यह वह ज़मीन है जो येपेत और उसके बेटों को विरासत में मिली थी, जो उसे और उसके बेटों को उनकी पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए मिलेगी; पाँच बड़े द्वीप और उत्तर में एक बड़ी ज़मीन।
30 लेकिन यह ठंडा है, और हाम की ज़मीन गर्म है, और शेम की ज़मीन न तो गर्म है और न ही ठंडी, बल्कि यह ठंड और गर्मी का मिला-जुला रूप है।

अध्याय 9

1 और हाम ने अपने बेटों में बँटवारा किया, और पहला हिस्सा कूश के लिए निकला, जो पूरब की तरफ़ था, और उसके पश्चिम में मिस्र, और उसके पश्चिम में पूत, और उसके पश्चिम में समुद्र के किनारे कनान।
2 और शेम ने भी अपने बेटों में हिस्सा बाँट लिया, और पहला हिस्सा हाम और उसके बेटों को मिला, टिगरिस नदी के पूरब में, जब तक वह पूरब तक नहीं पहुँच जाती, भारत की पूरी ज़मीन, और उसके किनारे लाल सागर, और ददान का पानी, और मेबरी और एला के सभी पहाड़, और सुसान की सारी ज़मीन और फरनाक के किनारे लाल सागर और टीना नदी तक का सारा हिस्सा।
3 और अश्शूर से दूसरा हिस्सा निकला, यानी अश्शूर, नीनवे, शिनार और भारत की सीमा तक का सारा इलाका, और यह नदी के किनारे-किनारे चढ़ता है।
4 और अर्पक्षद के हिस्से में तीसरा हिस्सा आया, यानी फरात नदी के पूरब में लाल सागर के किनारे कसदियों के इलाके की सारी ज़मीन, और मिस्र की तरफ़ दिखने वाले समुद्र के किनारे के रेगिस्तान का सारा पानी, फरात नदी के किनारे तक लेबनान, सनीर और अमाना की सारी ज़मीन।
5 और अराम के लिए चौथा हिस्सा निकला, यानी मेसोपोटामिया की सारी ज़मीन, जो टिगरिस और फरात नदी के बीच, कसदियों के उत्तर में, अश्शूर के पहाड़ों की सीमा तक और 'अरारा' की ज़मीन तक थी।
6 और लूद को पाँचवाँ हिस्सा मिला, अश्शूर के पहाड़ और उनसे जुड़ा सारा इलाका, जब तक वह समुद्र तक नहीं पहुँच जाता, और उसके भाई अश्शूर के पूरब तक नहीं पहुँच जाता।
7 और येपेत ने भी अपनी विरासत की ज़मीन अपने बेटों में बाँट दी।
8 और पहला हिस्सा गोमेर के लिए पूरब में उत्तर की ओर से टीना नदी तक निकला; और उत्तर में मागोग के लिए उत्तर के सभी अंदरूनी हिस्से निकले जब तक कि वह मेआत सागर तक नहीं पहुँच गया।
9 और मादई उसका हिस्सा बन गया, ताकि वह अपने दोनों भाइयों के पश्चिम से लेकर द्वीपों और द्वीपों के किनारों तक का इलाका अपने कब्ज़े में कर ले।
10 और यावान से चौथा हिस्सा निकला, हर द्वीप और वे द्वीप जो लूद की सीमा की ओर हैं।
11 और तूबल के लिए पाँचवाँ हिस्सा उस भाषा के बीच में निकला जो लूद के हिस्से की सीमा तक दूसरी भाषा तक, दूसरी भाषा के पार तीसरी भाषा तक पहुँचती है।
12 और मेशेक से छठा हिस्सा निकला, यानी तीसरी जीभ से आगे का सारा इलाका, जब तक वह गादीर के पूरब तक न पहुँच जाए।
13 और तीरास के लिए सातवां हिस्सा निकला, समुद्र के बीच में चार बड़े द्वीप, जो हाम के हिस्से तक पहुँचते हैं [और कामतुरी के द्वीप अर्पक्षद के बेटों के लिए उसकी विरासत के तौर पर चिट्ठी से निकले]।
14 और इस तरह नूह के बेटों ने अपने पिता नूह के सामने अपने बेटों को बाँट लिया, और उसने उन सभी को कसम से बाँध दिया, और हर उस व्यक्ति को श्राप दिया जो उस हिस्से को हथियाना चाहता था जो उसके हिस्से में नहीं आया था।
15 और सबने कहा, 'ऐसा ही हो; ऐसा ही हो' उनके और उनके बेटों के लिए, उनकी पीढ़ियों तक हमेशा के लिए, न्याय के दिन तक, जिस दिन प्रभु परमेश्वर उनके सारे बुरे कामों और गलतियों के लिए तलवार और आग से उनका न्याय करेगा, जिनसे उन्होंने धरती को अपराध, गंदगी, व्यभिचार और पाप से भर दिया है।

अध्याय 10

1 और इस जुबली के तीसरे हफ़्ते में, बुरी आत्माओं ने नूह के बेटों के बच्चों को गुमराह करना शुरू कर दिया, और उन्हें गुमराह करके खत्म कर दिया।

2 और नूह के बेटे अपने पिता नूह के पास आए, और उन्होंने उसे उन दुष्टात्माओं के बारे में बताया जो उसके बेटों के बेटों को भटका रही थीं, उन्हें अंधा कर रही थीं और मार रही थीं।
3 और उसने अपने परमेश्वर यहोवा के सामने प्रार्थना की, और कहा: 'हे सब प्राणियों की आत्माओं के परमेश्वर, तूने मुझ पर दया की है। और मुझे और मेरे बेटों को बाढ़ के पानी से बचाया है, और मुझे वैसे नहीं मारा जैसे तूने नाश के बेटों को किया था; क्योंकि तेरी कृपा मुझ पर बहुत रही है, और मेरी आत्मा पर तेरी दया बहुत रही है; तेरी कृपा मेरे बेटों पर बनी रहे, और बुरी आत्माएं उन पर राज न करें। कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें धरती से खत्म कर दें।
4 लेकिन तू मुझे और मेरे बेटों को आशीर्वाद दे, ताकि हम बढ़ें और बढ़ें और धरती को भर दें।
5 और तू जानता है कि तेरे पहरेदारों ने, इन आत्माओं के पिताओं ने मेरे दिनों में कैसे काम किया: और इन जीवित आत्माओं को कैद कर ले और उन्हें सज़ा की जगह पर मज़बूती से रख, और उन्हें तेरे सेवक, मेरे परमेश्वर के बेटों पर तबाही न लाने दे; क्योंकि ये बुरे हैं, और बर्बाद करने के लिए बनाए गए हैं।
6 और वे जीवितों की आत्माओं पर राज न करें; क्योंकि केवल तू ही उन पर राज कर सकता है। और उन्हें नेक लोगों के बेटों पर अब से और हमेशा के लिए अधिकार न रखने दें।'
7 और हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमें सब को बांधने के लिए कहा।
8 और आत्माओं का सरदार, मास्टेमा, आया और बोला: 'हे प्रभु, बनाने वाले, उनमें से कुछ को मेरे सामने रहने दो, और वे मेरी बात सुनें, और जो कुछ मैं उनसे कहूँ वह सब करें; क्योंकि अगर उनमें से कुछ मेरे पास नहीं रहेंगे, तो मैं इंसानों पर अपनी मर्ज़ी का ज़ोर नहीं चला पाऊँगा; क्योंकि ये लोग मेरे फैसले से पहले बिगाड़ने और गुमराह करने के लिए हैं, क्योंकि इंसानों की बुराई बहुत बड़ी है।'
9 और उसने कहा: उनमें से दसवां हिस्सा उसके सामने रहे, और नौ हिस्से सज़ा की जगह पर उतर जाएं।'
10 और उसने हम में से एक को हुक्म दिया कि हम नूह को उनकी सारी दवाइयाँ सिखाएँ; क्योंकि वह जानता था कि वे न तो सीधे रास्ते पर चलेंगे, न ही नेकी से लड़ेंगे।
11 और हमने उसकी सारी बातों के अनुसार किया: सभी बुरे लोगों को हमने सज़ा की जगह पर बाँध दिया और उनमें से दसवाँ हिस्सा छोड़ दिया ताकि वे धरती पर शैतान के सामने झुक सकें।
12 और हमने नूह को उनकी बीमारियों की सारी दवाइयां और उनके लालच के तरीके बताए, कि वह उन्हें धरती की जड़ी-बूटियों से कैसे ठीक कर सकता है।
13 और नूह ने हर तरह की दवा के बारे में जो कुछ हमने उसे बताया था, वह सब एक किताब में लिख लिया। इस तरह बुरी आत्माएँ नूह के बेटों को नुकसान पहुँचाने से बच गईं।
14 और उसने जो कुछ लिखा था, वह सब अपने बड़े बेटे शेम को दे दिया; क्योंकि वह उसे अपने सब बेटों से ज़्यादा प्यार करता था।
15 और नूह अपने पुरखों के साथ सो गया, और उसे अरारात देश में लूबर पहाड़ पर दफ़नाया गया।
16 उन्होंने अपने जीवन में नौ सौ पचास साल पूरे किए, उन्नीस जुबली, दो हफ़्ते और पाँच साल। [1659 AM]
17 और धरती पर अपनी ज़िंदगी में वह हनोक को छोड़कर इंसानों से बेहतर था, क्योंकि वह नेकी में एकदम सही था। क्योंकि हनोक का काम दुनिया की पीढ़ियों के लिए एक गवाही के तौर पर तय किया गया था, ताकि वह पीढ़ी दर पीढ़ी, फैसले के दिन तक सभी कामों का ज़िक्र करे।
18 और तैंतीसवीं जुबली में, पहले साल के दूसरे हफ़्ते में, पेलेग ने एक पत्नी ली, जिसका नाम लोम्ना था, जो सिनार की बेटी थी, और उसने इस हफ़्ते के चौथे साल में उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम रू रखा; क्योंकि उसने कहा: 'देखो, इंसान शिनार देश में अपने लिए एक शहर और एक मीनार बनाने के बुरे इरादे से बुरे बन गए हैं।'
19 क्योंकि वे अरारात देश से पूरब की ओर शिनार को चले गए; क्योंकि उसके दिनों में उन्होंने शहर और मीनार बनाई थी, और कहा था, 'चलो, हम इसी से स्वर्ग में चढ़ें।'
20 और उन्होंने बनाना शुरू किया, और चौथे हफ़्ते में उन्होंने आग जलाकर ईंटें बनाईं, और ईंटों ने पत्थर का काम किया, और जिस मिट्टी से उन्होंने उन्हें जोड़ा वह डामर था जो समुद्र से और शिनार देश के पानी के झरनों से निकलता है।
21 और उन्होंने इसे बनाया: इसे बनाने में 43 साल लगे [1645-1688 AM]; इसकी चौड़ाई 203 ईंटें थीं, और ऊंचाई (एक ईंट की) एक तिहाई थी; इसकी ऊंचाई 5433 हाथ और 2 खजूर थी, और (एक दीवार की लंबाई) तेरह स्टेड (और दूसरी तीस स्टेड) थी।
22 और हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमसे कहा: देखो, वे एक ही लोग हैं, और (यह) वे करने लगे हैं, और अब उनसे कुछ भी नहीं रोका जाएगा। चलो, हम नीचे जाकर उनकी भाषा में गड़बड़ कर दें, ताकि वे एक-दूसरे की बात न समझ सकें, और वे शहरों और देशों में बिखर जाएं, और न्याय के दिन तक उनका एक मकसद न रहे।'
23 और प्रभु नीचे उतरे, और हम उनके साथ नीचे उतरे ताकि उस शहर और उस मीनार को देख सकें जिसे इंसानों ने बनाया था।
24 और उसने उनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा कर दी, और वे एक-दूसरे की बात नहीं समझते थे, और तब उन्होंने शहर और मीनार बनाना बंद कर दिया।
25 इसी वजह से शिनार की पूरी ज़मीन का नाम बाबेल पड़ा, क्योंकि वहाँ यहोवा ने इंसानों की सारी भाषा में गड़बड़ी पैदा कर दी थी, और वहाँ से वे अपनी-अपनी भाषा और अपने देश के हिसाब से अपने-अपने शहरों में फैल गए।
26 और यहोवा ने उस मीनार पर ज़ोरदार हवा भेजी और उसे धरती पर गिरा दिया, और देखो, वह शिनार देश में अश्शूर और बेबीलोन के बीच में थी, और उन्होंने उसका नाम 'गिरा दिया' रखा।
27 पहले साल के चौथे हफ़्ते में, यानी चौंतीसवीं सालगिरह के साल में, वे शिनार देश से निकल गए।
28 और हाम और उसके बेटे उस ज़मीन पर चले गए जिस पर उसे कब्ज़ा करना था, जिसे उसने दक्षिण की ज़मीन में अपने हिस्से के तौर पर हासिल किया था।
29 और कनान ने मिस्र की नदी तक लेबनान की ज़मीन देखी, कि वह बहुत अच्छी है, और वह अपनी विरासत की ज़मीन में पश्चिम की ओर (यानी समुद्र तक) नहीं गया, बल्कि वह लेबनान की ज़मीन में, यरदन की सीमा से पूरब और पश्चिम की ओर और समुद्र की सीमा से बस गया।

30 और उसके पिता हाम, और उसके भाइयों कूश और मिस्र ने उससे कहा, 'तुम एक ऐसे देश में बस गए हो जो तुम्हारा नहीं है, और जो हमें चिट्ठी से नहीं मिला: ऐसा मत करो; क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम और तुम्हारे बेटे उस देश में गिर जाओगे और बगावत की वजह से शापित हो जाओगे; क्योंकि बगावत से तुम बसे हो, और बगावत से तुम्हारे बच्चे गिरेंगे, और तुम हमेशा के लिए जड़ से उखाड़ दिए जाओगे।
31 शेम के घर में मत रहो; क्योंकि यह शेम और उसके बेटों को उनके हिस्से में मिला है।
32 तू शापित है, और नूह के सभी बेटों से ज़्यादा शापित होगा, उस शाप से जिसके द्वारा हमने पवित्र जज के सामने और अपने पिता नूह के सामने कसम खाई थी।'
33 लेकिन उसने उनकी बात नहीं मानी, और वह और उसके बेटे आज तक हमात से लेकर मिस्र के अंदर तक लेबनान देश में रहते हैं।
34 और इसी कारण उस देश का नाम कनान पड़ा।
35 और येपेत और उसके बेटे समुद्र की तरफ़ गए और अपने हिस्से की ज़मीन में रहने लगे। और जब मदाई ने समुद्र की ज़मीन देखी, तो उसे वह पसंद नहीं आई। इसलिए उसने हाम, अश्शूर और अपनी पत्नी के भाई अर्पक्षद से एक हिस्सा माँगा। और वह आज तक अपनी पत्नी के भाई के पास मेदिया की ज़मीन में रहता है।
36 और उसने अपने और अपने बेटों के रहने की जगह का नाम उनके पिता मदाई के नाम पर मेदिया रखा।

अध्याय 11

1 और पैंतीसवीं जुबली के पहले साल के तीसरे हफ़्ते में, [1681 AM], रू ने एक पत्नी ली, और उसका नाम 'ओरा' था, जो केसेद के बेटे 'ऊर' की बेटी थी, और उसने उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम सेरोह रखा, इस जुबली के इस हफ़्ते के सातवें साल में। [1687 AM]
2 और नूह के बेटे एक-दूसरे से लड़ने लगे, एक-दूसरे को बंदी बनाने और मारने लगे, और धरती पर इंसानों का खून बहाने लगे, और खून खाने लगे, और मज़बूत शहर, दीवारें और मीनारें बनाने लगे, और लोग खुद को देश से ऊपर समझने लगे, और राज्यों की शुरुआत करने लगे, और लोगों के खिलाफ लोगों से, और देश के खिलाफ देश से, और शहर के खिलाफ शहर से लड़ने लगे, और सबने बुराई करना शुरू कर दिया, और हथियार हासिल कर लिए, और अपने बेटों को लड़ाई सिखाने लगे, और उन्होंने शहरों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया, और गुलामों और औरतों को बेचना शुरू कर दिया।
3 और केसेद के बेटे 'ऊर' ने कसदियों का 'आरा' शहर बसाया, और उसका नाम अपने और अपने पिता के नाम पर रखा। और उन्होंने अपने लिए ढली हुई मूर्तियाँ बनाईं, और वे हर एक उस मूर्ति की पूजा करने लगे, जो ढली हुई मूर्ति उन्होंने अपने लिए बनाई थी, और वे खुदी हुई मूर्तियाँ और गंदी नकलें बनाने लगे, और बुरी आत्माओं ने उनकी मदद की और उन्हें गलत काम और गंदगी करने में बहकाया।
4 और राजकुमार मास्टेमा ने यह सब करने के लिए खुद को तैयार किया, और उसने दूसरी आत्माओं को भेजा, जो उसके अधीन थीं, ताकि वे हर तरह का गलत काम और पाप करें, और हर तरह का अपराध करें, बिगाड़ें और बर्बाद करें, और धरती पर खून बहाएं।
5 इसी वजह से उसने सेरोह का नाम सेरूग रखा, क्योंकि हर कोई हर तरह के पाप और गुनाह करने लगा था।
6 और वह बड़ा हुआ, और अपनी पत्नी की माँ के पिता के पास, कसदियों के ऊर में रहने लगा, और उसने मूर्तियों की पूजा की, और उसने छत्तीसवीं जयंती में, उसके पहले वर्ष के पाँचवें सप्ताह में, [1744 पूर्वाह्न] एक पत्नी को अपने लिए लिया, और उसका नाम मेल्का था, जो उसके पिता के भाई काबेर की बेटी थी।
7 और इस हफ़्ते के पहले साल में उसने उसे नाहोर को जन्म दिया, और वह बड़ा होकर कसदियों के ऊर में रहने लगा, और उसके पिता ने उसे कसदियों की बातें सिखाईं, जैसे शकुन-अपशकुन, आसमान के संकेतों के हिसाब से।
8 और सैंतीसवीं जयंती के पहले वर्ष के छठे सप्ताह में, [1800 AM] उसने एक पत्नी को ब्याह लिया, और उसका नाम इज्का था, जो कसदियों के नेस्ताग की बेटी थी।
9 और उसने इस सप्ताह के सातवें वर्ष में उसके लिए तेरह को जन्म दिया। [1806 AM]
10 और राजकुमार मस्तेमा ने ज़मीन में बोए गए बीज को खाने के लिए कौवे और पक्षी भेजे, ताकि ज़मीन को बर्बाद कर दे और इंसानों की मेहनत लूट ले। इससे पहले कि वे बीज जोत पाते, कौवे उसे ज़मीन से उठा लेते थे।
11 और इसी वजह से उसने उसका नाम तेराह रखा, क्योंकि कौवों और पक्षियों ने उन्हें कंगाल कर दिया था और उनका बीज खा लिया था।
12 और पक्षियों की वजह से साल बंजर होने लगे, और वे पेड़ों के सारे फल खा गए: बहुत कोशिश करने पर ही वे अपने दिनों में धरती के सारे फलों में से थोड़ा-थोड़ा बचा पाते थे।
13 और इस उनतालीसवीं जयंती में, पहले वर्ष के दूसरे सप्ताह में, [1870 AM] तेरह ने अपने लिए एक पत्नी ब्याह ली, और उसका नाम एदना था, जो अब्राम की बेटी थी, जो उसके पिता की बहन की बेटी थी। और इस सप्ताह के सातवें वर्ष [1876 AM] उसने उसके लिए एक पुत्र को जन्म दिया, और उसने उसका नाम अपनी माँ के पिता के नाम पर अब्राम रखा;
14 क्योंकि उसकी बेटी के बेटा होने से पहले ही वह मर गया था।
15 और वह बालक पृथ्वी की गलतियों को समझने लगा, कि सब लोग खुदी हुई मूर्तियों और अशुद्धता के पीछे भटक गए हैं, और उसके पिता ने उसे लिखना सिखाया, और वह दो सप्ताह का था, [1890 AM] और उसने अपने पिता से खुद को अलग कर लिया, ताकि वह उसके साथ मूर्तियों की पूजा न करे।
16 और वह सब चीज़ों के बनाने वाले से प्रार्थना करने लगा कि वह उसे इंसानों की गलतियों से बचाए, और उसका हिस्सा गंदगी और बुरे कामों के बाद गलती में न पड़े।
17 और ज़मीन पर बीज बोने का समय आया, और वे सब कौवों से अपने बीज बचाने के लिए एक साथ निकले, और अब्राम भी उन लोगों के साथ निकला, और बच्चा चौदह साल का था।
18 और कौओं का एक झुंड बीज खाने आया, और अब्राम उनसे मिलने के लिए दौड़ा, इससे पहले कि वे ज़मीन पर बैठते, और इससे पहले कि वे बीज खाने के लिए ज़मीन पर बैठते, उसने उनसे कहा, 'नीचे मत उतरो: जिस जगह से आए हो, वहीं लौट जाओ,' और वे वापस लौट गए।

19 और उस दिन उसने कौओं के बादलों को सत्तर बार पीछे हटा दिया, और उस सारे देश में जहाँ अब्राम था, वहाँ एक भी कौवा नहीं बैठा।
20और सारे देश में जितने लोग उसके साथ थे, उन्होंने उसे चिल्लाते देखा, और सारे कौवे वापस चले गए, और कसदियों के सारे देश में उसका नाम बड़ा हो गया।
21 इस साल जितने लोग बोना चाहते थे, वे सब उसके पास आए, और वह उनके साथ तब तक चला जब तक बोने का समय खत्म नहीं हो गया। उन्होंने अपनी ज़मीन बोई, और उस साल वे घर पर बहुत सारा अनाज लाए और खाकर पेट भर गए।
22 और पहले साल के पाँचवें हफ़्ते में [1891 AM] अब्राम ने उन लोगों को सिखाया जो बैलों के लिए औज़ार बनाते थे, यानी लकड़ी के कारीगर, और उन्होंने ज़मीन से ऊपर एक बर्तन बनाया, जो हल के फ्रेम के सामने था, ताकि उस पर बीज डाल सकें, और बीज हल के हिस्से पर गिर गया, और ज़मीन में छिप गया, और उन्हें अब कौवों का डर नहीं रहा।
23 और इस तरह उन्होंने हल के सभी तख्तों पर ज़मीन के ऊपर बर्तन बनाए, और अब्राम की आज्ञा के अनुसार उन्होंने सारी ज़मीन पर बीज बोए और जोतें, और उन्हें अब चिड़ियों का डर नहीं रहा।

अध्याय 12

1 और यह सातवें वर्ष के छठे सप्ताह में हुआ, [1904 AM] कि अब्राम ने अपने पिता तेरह से कहा, 'पिताजी!'
2 तब उसने कहा, 'देख, मैं यहां हूं, मेरे बेटे।' फिर उसने कहा,
'जिन मूर्तियों की तुम पूजा करते हो, उनसे हमें क्या मदद और फ़ायदा है?
और किसके सामने तू सिर झुकाता है?
3 क्योंकि उनमें आत्मा नहीं है,
क्योंकि वे गूंगे रूप हैं, और दिल को गुमराह करने वाले हैं।
उनकी पूजा मत करो:
4 स्वर्ग के परमेश्वर की आराधना करो,
धरती पर बारिश और ओस कौन बरसाता है?
और पृथ्वी पर जो कुछ भी करता है,
और उसने अपने वचन से सब कुछ बनाया है,
और सारा जीवन उसके सामने से है।
5 तुम उन चीज़ों की पूजा क्यों करते हो जिनमें आत्मा नहीं है?
क्योंकि वे (मनुष्यों के) हाथों का काम हैं,
और तुम उन्हें अपने कंधों पर उठाओ,
और तुम्हें उनसे कोई मदद नहीं मिलती,
लेकिन ये उन्हें बनाने वालों के लिए शर्म की बड़ी वजह हैं,
और जो लोग उनकी पूजा करते हैं, उनके दिल को गुमराह करते हैं:
उनकी पूजा मत करो।
6 तब उसके पिता ने उससे कहा, "बेटा, मैं भी यह जानता हूँ, लेकिन जिन लोगों ने मुझे अपने सामने सेवा करने के लिए मजबूर किया है, उनके साथ मैं क्या करूँ?"
7 और अगर मैं उनसे सच बोलूंगा, तो वे मुझे मार डालेंगे; क्योंकि उनकी आत्मा उनसे चिपकी हुई है, ताकि वे उनकी पूजा करें और उनका आदर करें।
8 चुप रहो, मेरे बेटे, कहीं वे तुम्हें मार न डालें।' ये बातें उसने अपने दोनों भाइयों से कहीं, और वे उस पर गुस्सा हो गए और वह चुप रहा।
9 और चालीसवीं जयंती के दूसरे सप्ताह में, सातवें वर्ष में, अब्राम ने एक पत्नी को अपने लिए ब्याह लिया, और उसका नाम सारै था, जो उसके पिता की बेटी थी, और वह उसकी पत्नी हो गई।
10 और उसके भाई हारान ने तीसरे वर्ष के तीसरे सप्ताह में एक पत्नी ब्याह ली, [1928 AM] और उसने उसी सप्ताह के सातवें वर्ष में उसके लिये एक पुत्र उत्पन्न किया, और उसने उसका नाम लूत रखा।
11 और उसके भाई नाहोर ने एक पत्नी ले ली।
12 और अब्राम के जीवन के साठवें वर्ष में, अर्थात् उसके चौथे वर्ष के चौथे सप्ताह में, [1936 AM] अब्राम रात में उठा, और मूरतों के घर को फूंक दिया, और घर में जो कुछ था सब को जला दिया, और किसी को इसका पता भी न चला।
13 और वे रात में उठे और अपने देवताओं को आग से बचाने की कोशिश करने लगे।
14 और हारान उन्हें बचाने के लिए जल्दी से गया, लेकिन आग की लपटें उस पर पड़ गईं, और वह आग में जल गया, और वह अपने पिता तेराह के सामने कसदियों के ऊर में मर गया, और उन्होंने उसे कसदियों के ऊर में दफ़ना दिया।
15 और तेराह अपने बेटों के साथ कसदियों के ऊर से लेबनान और कनान देश में जाने के लिए निकला, और वह हारान देश में रहने लगा, और अब्राम अपने पिता तेराह के साथ हारान में दो हफ़्ते तक रहा।
16 और पाँचवें वर्ष के छठे सप्ताह में, [1951 AM] अब्राम सातवें महीने की अमावस्या को सारी रात जागकर तारों को देखता रहा, ताकि देखे कि वर्षा के सम्बन्ध में वर्ष का स्वरूप कैसा होगा, और वह अकेला बैठा हुआ देख रहा था।
17 और उसके दिल में एक बात आई और उसने कहा: सितारों के सारे निशान, और चाँद और सूरज के सारे निशान सब प्रभु के हाथ में हैं। मैं उन्हें क्यों ढूँढ़ता हूँ?
18 यदि वह चाहे तो प्रातःऔर सायं वर्षा करता है;
और अगर वह चाहे तो रोक लेता है,
और सब कुछ उसके हाथ में है।'
19 और उस रात उसने प्रार्थना की और कहा,
'हे मेरे परमेश्वर, परमप्रधान परमेश्वर, केवल तू ही मेरा परमेश्वर है,
और मैंने तुझे और तेरे राज को चुना है।
और तूने ही सब चीज़ें बनाई हैं,
और सब कुछ जो तेरे हाथ का काम है।
20 मुझे उन बुरी आत्माओं के हाथों से छुड़ाओ जो इंसानों के दिलों के विचारों पर राज करती हैं,
और हे मेरे परमेश्वर, वे मुझे अपने से भटका न दें।
और तू मुझे और मेरी संतान को हमेशा के लिए मज़बूत कर
ताकि हम अब से और हमेशा के लिए भटक न जाएं।'
21 और उसने कहा, 'क्या मैं कसदियों के ऊर में लौट जाऊं जो मेरा चेहरा ढूंढते हैं ताकि मैं उनके पास लौट सकूं, क्या मैं यहीं इसी जगह पर रहूं? तेरे सामने सही रास्ता तेरे सेवक के हाथों में कामयाब हो ताकि वह उसे पूरा कर सके और मैं अपने दिल के धोखे में न चलूं, हे मेरे परमेश्वर।'
22 जब वह बोल और प्रार्थना कर चुका, तो देखो, मेरे ज़रिए उसे प्रभु का संदेश भेजा गया, जिसमें कहा गया था: 'अपने देश, अपने

खानदान और अपने पिता के घर से निकलकर उस देश में जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा, और मैं तुम्हें एक बड़ा और ताकतवर देश बनाऊंगा।
23 और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा
और मैं तेरा नाम महान करूंगा,
और तुम पृथ्वी पर धन्य होगे,
और तेरे द्वारा पृथ्वी के सभी परिवार धन्य होंगे,
और जो तुझे आशीर्वाद देंगे, मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा,
और जो लोग तुम्हें कोसते हैं, उन्हें कोसना।
24 और मैं तेरा, तेरे बेटे का, तेरे पोते का, और तेरे सारे वंश का परमेश्वर रहूंगा; डरो मत, अब से लेकर पृथ्वी की सारी पीढ़ियों तक मैं तेरा परमेश्वर हूं।'
25 और प्रभु परमेश्वर ने कहा: 'उसका मुंह और कान खोलो, ताकि वह सुन सके और अपने मुंह से उस भाषा में बोल सके जो प्रकट हुई है'; क्योंकि (बाबेल के विनाश) के दिन से ही यह भाषा सभी मनुष्यों के मुंह से बंद हो गई थी।
26 और मैंने उसका मुंह, उसके कान और उसके होंठ खोले, और मैं उससे हिब्रू में, यानी दुनिया की भाषा में बात करने लगा।
27 और उसने अपने पुरखों की किताबें लीं, जो हिब्रू में लिखी थीं, और उसने उन्हें लिख लिया, और तब से वह उन्हें पढ़ने लगा, और मैंने उसे वह बताया जो वह (समझ नहीं पा रहा था), और उसने छह बरसात के महीनों में उन्हें पढ़ा।
28 और ऐसा हुआ कि सातवें साल के छठे हफ़्ते में उसने अपने पिता से बात की और उसे बताया कि वह हारान को छोड़कर कनान देश जाएगा, ताकि उसे देखे और फिर उसके पास लौट आए।
29 तब उसके पिता तेरह ने उससे कहा, "शांति से जाओ।"
अनंत ईश्वर तुम्हारा मार्ग सीधा करे।
और प्रभु तेरे साथ रहे, और तुझे सब बुराइयों से बचाए,
और जो लोग तुम्हें देखते हैं, उन पर कृपा, दया और कृपा बरसा,
और मनुष्यों में से किसी को तुझ पर अधिकार न हो कि वह तुझे हानि पहुंचा सके;
आपको शांति मिले।
30 और अगर तुम्हें कोई ऐसा देश दिखे जो तुम्हारी आँखों को रहने के लिए अच्छा लगे, तो उठो और मुझे अपने साथ ले जाओ और अपने भाई हारान के बेटे लूत को अपने बेटे की तरह ले जाओ: यहोवा तुम्हारे साथ रहे।
31 और तेरा भाई नाहोर मेरे साथ तब तक चला जा जब तक तू शांति से वापस न आ जाए, और हम सब तेरे साथ चलेंगे।'

अध्याय 13

1 अब्राम हारान से चला, और अपनी पत्नी सारै और अपने भाई हारान के बेटे लूत को लेकर कनान देश में चला गया। फिर वह अश्शूर पहुँचा और शेकेम में जाकर एक ऊँचे ओक के पेड़ के पास रहने लगा।
2 और उसने देखा, और देखो, हमात की घाटी से लेकर ऊँचे ओक के पेड़ तक की ज़मीन बहुत अच्छी थी।
3 और यहोवा ने उससे कहा, 'यह देश मैं तुझे और तेरे वंश को दूंगा।'
4 और उसने वहाँ एक वेदी बनाई, और उस पर यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाया, जो उसे दिखाई दिया था।
5 वहां से वह पहाड़ पर गया... पश्चिम में बेतेल और पूर्व में ऐ, और वहां अपना तंबू खड़ा किया।
6 और उसने देखा, ज़मीन बहुत बड़ी और अच्छी थी, और उस पर सब कुछ उग रहा था - अंगूर की बेलें, अंजीर, अनार, ओक, इलेक्स, टेरेबिन्थ, तेल के पेड़, देवदार, सरू, खजूर के पेड़, और मैदान के सभी पेड़, और पहाड़ों पर पानी था।
7 और उसने यहोवा को धन्यवाद दिया, जिसने उसे कसदियों के ऊर से निकालकर इस देश में पहुँचाया था।
8 और ऐसा हुआ कि पहले साल, सातवें हफ़्ते में, पहले महीने के नए चाँद को, 1954 AM] उसने इस पहाड़ पर एक वेदी बनाई, और यहोवा का नाम पुकारा: 'हे हमेशा रहने वाले परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है।'
9 और उसने वेदी पर यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाया ताकि वह उसके साथ रहे और जीवन भर उसे न छोड़े।
10 और वह वहाँ से चला गया और दक्षिण की ओर चला गया, और वह हेब्रोन पहुँचा। उस समय हेब्रोन बन रहा था, और वह वहाँ दो साल रहा, और वहाँ से वह दक्षिण के देश, बेलोथ में चला गया, और उस देश में अकाल पड़ा।
11 और अब्राम हफ़्ते के तीसरे साल मिस्र चला गया, और अपनी पत्नी को उससे छीनने से पहले वह पाँच साल तक मिस्र में रहा।
12 उस समय मिस्र में तानाइस बनाया गया था - हेब्रोन के सात साल बाद।
13 और जब फिरौन ने अब्राम की पत्नी सारै को पकड़ लिया, तो यहोवा ने अब्राम की पत्नी सारै के कारण फिरौन और उसके घराने पर बड़ी मुसीबतें डालीं।
14 और अब्राम भेड़, गाय, गधे, घोड़े, ऊँट, नौकर-चाकर, और सोने-चाँदी के मामले में बहुत अमीर था। और उसका भाई लूत भी अमीर था।
15 और फिरौन ने अब्राम की पत्नी सारै को वापस दे दिया, और उसे मिस्र देश से बाहर भेज दिया। वह उस जगह गया जहाँ उसने शुरू में अपना तंबू लगाया था, यानी वेदी की जगह पर, जिसके पूरब में ऐ और पश्चिम में बेतेल था। और उसने अपने परमेश्वर यहोवा को धन्यवाद दिया जिसने उसे शांति से वापस लाया था।
16 और ऐसा हुआ कि इकतालीसवीं जयंती के तीसरे साल के पहले हफ़्ते में, [1963 AM] वह इस जगह पर लौटा और यहाँ होमबलि चढ़ाया, और यहोवा का नाम पुकारा, और कहा: 'हे सबसे बड़े परमेश्वर, तू हमेशा-हमेशा के लिए मेरा परमेश्वर है।'
17 और इस सप्ताह के चौथे वर्ष में [1964 AM] लूत उससे अलग हो गया, और लूत सदोम में रहने लगा, और सदोम के लोग अत्यंत पापी थे।
18 और उसके मन में यह बात बहुत दुख देने लगी कि उसके भाई का बेटा उससे अलग हो गया है; क्योंकि उसके कोई बच्चे नहीं थे।
19 जिस साल लूत को बंदी बनाया गया, उस साल, जब लूत उससे अलग हो गया था, यानी इस हफ़्ते के चौथे साल में, प्रभु ने अब्राम से कहा: 'जिस जगह तुम रहते हो, वहाँ से अपनी आँखें ऊपर उठाओ, उत्तर और दक्षिण, पश्चिम और पूरब की ओर।
20 क्योंकि जितनी ज़मीन तू देख रहा है, वह सब मैं तुझे और तेरे वंश को हमेशा के लिए दूँगा, और मैं तेरे वंश को समुद्र की रेत के बराबर करूँगा; चाहे कोई इंसान धरती की धूल को भी गिन ले, फिर भी तेरे वंश को नहीं गिना जाएगा।

21 उठो, देश की लंबाई और चौड़ाई में घूमो और सब कुछ देखो; क्योंकि मैं इसे तुम्हारे वंश को दूंगा।' और अब्राम हेब्रोन गया और वहीं रहने लगा।
22 और इसी साल एलाम का राजा कदोर्लाओमेर, शिनार का राजा अम्रापेल, सेलासार का राजा अर्योक, और जातियों का राजा तेर्गल आए, और उन्होंने गमोरा के राजा को मार डाला, और सदोम का राजा भाग गया, और बहुत से लोग नमक के समुद्र के पास सिद्दीम की घाटी में घायल होकर गिर पड़े।
23 और उन्होंने सदोम, आदम और सबोईम को बंदी बना लिया, और अब्राम के भाई लूत को भी, और उसकी सारी संपत्ति को बंदी बनाकर दान को चले गए।
24 और जो बच गया था, उसने आकर अब्राम को बताया कि उसके भाई का बेटा बंदी बना लिया गया है और (अब्राम) ने अपने घर के नौकरों को हथियारबंद कर दिया...
25 . . . . अब्राम और उसके वंश के लिए, यहोवा को पहली उपज का दसवां हिस्सा दिया गया, और यहोवा ने इसे हमेशा के लिए एक नियम के तौर पर तय किया कि वे इसे उन याजकों को दें जो उसके सामने सेवा करते थे, ताकि वे इसे हमेशा के लिए अपने पास रखें।
26 और इस नियम के लिए दिनों की कोई सीमा नहीं है; क्योंकि उसने इसे पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए तय किया है कि वे हर चीज़ का दसवां हिस्सा प्रभु को दें, चाहे वह बीज हो, दाखमधु हो, तेल हो, गाय-बैल हो या भेड़ें हों।
27 और उसने अपने याजकों को दिया कि वे उसके सामने खुशी से खाएं और पिएं।
28 तब सदोम का राजा उसके पास आया और उसके सामने झुककर कहा, 'हे हमारे प्रभु अब्राम, जिन लोगों को तूने बचाया है, उन्हें हमें दे दे, परन्तु लूट का माल तेरा ही रहे।'
29 और अब्राम ने उससे कहा: 'मैं सबसे बड़े परमेश्वर के सामने हाथ जोड़कर कहता हूँ कि मैं धागे से लेकर जूते के फीते तक तुम्हारा कुछ भी नहीं लूँगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम कहो, मैंने अब्राम को अमीर बना दिया है; बस जो जवानों ने खाया है, और जो आदमी मेरे साथ गए थे - अनेर, एस्कोल और ममरे का हिस्सा। ये अपना हिस्सा लेंगे।'

अध्याय 14

1 इन बातों के बाद, चौथे साल इसी हफ़्ते के तीसरे महीने के नए चाँद को, प्रभु का संदेश अब्राम को सपने में आया, जिसमें कहा गया: 'डरो मत, अब्राम; मैं तुम्हारा रक्षक हूँ, और तुम्हारा इनाम बहुत बड़ा होगा।'
2 और उसने कहा: 'हे प्रभु, हे प्रभु, आप मुझे क्या देंगे, क्योंकि मैं तो बिना संतान के जा रहा हूँ, और मेरी दासी के बेटे मासेक का बेटा दम्मासेक एलीएज़ेर है: वही मेरा वारिस होगा, और आपने मुझे कोई संतान नहीं दी है।'
3 और उसने उससे कहा, 'यह आदमी तेरा वारिस नहीं होगा, बल्कि जो तेरे पेट से निकलेगा, वही तेरा वारिस होगा।'
4 तब उसने उसे बाहर ले जाकर कहा, 'आसमान की ओर देखो और अगर तुम तारों को गिन सकते हो तो उन्हें गिन लो।'
5 और उसने स्वर्ग की ओर देखा, और तारे देखे। और उसने उससे कहा: 'तेरा वंश ऐसा ही होगा।'
6 और उसने प्रभु पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।
7 और उसने उससे कहा: 'मैं वही यहोवा हूँ जो तुम्हें कसदियों के ऊर से बाहर लाया, ताकि तुम्हें कनानियों की ज़मीन दे सकूँ ताकि तुम उस पर हमेशा के लिए कब्ज़ा कर सको; और मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।'
8 तब उसने कहा, 'हे प्रभु, हे प्रभु, मैं कैसे जानूंगा कि मैं इसका वारिस बनूंगा?'
9 और उसने उससे कहा, 'मेरे लिए तीन साल की एक बछिया, तीन साल की एक बकरी, तीन साल की एक भेड़, एक कबूतर और एक कछुआ ले लो।'
10 और उसने इन सबको महीने के बीच में ले लिया और हेब्रोन के पास मम्रे के ओक के पेड़ पर रहने लगा।
11 और उसने वहाँ एक वेदी बनाई, और इन सब को बलि चढ़ाया; और उनका खून वेदी पर डाला, और उन्हें बीच से बाँट दिया, और एक-दूसरे के सामने रख दिया; लेकिन पक्षियों को उसने बाँटा नहीं।
12 और पक्षी टुकड़ों पर गिर पड़े, और अब्राम ने उन्हें भगा दिया, और पक्षियों को उन्हें छूने नहीं दिया।
13 और जब सूरज डूब गया, तो अब्राम को बहुत खुशी हुई, और देखो! उस पर बहुत डर और अंधेरा छा गया, और अब्राम से कहा गया: 'पक्का जान लो कि तुम्हारे बच्चे किसी दूसरे देश में परदेसी होंगे, और वे उन्हें गुलाम बना लेंगे, और चार सौ साल तक सताएंगे।
14 और जिस देश के वे गुलाम होंगे, मैं उसे भी सज़ा दूँगा, और उसके बाद वे वहाँ से बहुत सारा माल लेकर निकलेंगे।
15 और तुम शांति से अपने पुरखों के पास जाओगे, और अच्छे बुढ़ापे में दफ़नाए जाओगे।
16 लेकिन चौथी पीढ़ी में वे यहां लौट आएंगे; क्योंकि एमोरियों का अधर्म अभी पूरा नहीं हुआ है।'
17 और वह अपनी नींद से जागा, और उठा, और सूरज डूब चुका था; और एक आग जल रही थी, और देखो! एक भट्टी से धुआँ निकल रहा था, और आग की एक लौ टुकड़ों के बीच से निकल रही थी।
18 और उस दिन यहोवा ने अब्राम से एक वादा किया, और कहा: 'मैं तेरे वंश को यह देश दूँगा, मिस्र की नदी से लेकर बड़ी नदी, फरात नदी तक, केनी, कनिज्जी, कदमोनी, परिज्जी, रपाई, फाकोरी, हिव्वी, एमोरी, कनानी, गिर्गाशी और यबूसी।
19 और दिन बीत गया, और अब्राम ने टुकड़े, और पक्षी, और उनके फल, और उनके पेय चढ़ाए, और आग ने उन्हें भस्म कर दिया।
20 और उस दिन हमने अब्राम के साथ वैसा ही करार किया जैसा हमने इस महीने में नूह के साथ किया था; और अब्राम ने हमेशा के लिए अपने लिए त्योहार और नियम को नया कर लिया।
21 अब्राम खुश हुआ और उसने ये सब बातें अपनी पत्नी सारै को बताईं; और उसे यकीन था कि उसे बच्चा होगा, लेकिन सारै को बच्चा नहीं हुआ।
22 तब सारै ने अपने पति अब्राम को सलाह दी, और उससे कहा, 'मेरी मिस्री दासी हागार के पास जाओ: हो सकता है कि मैं उसके द्वारा तुम्हारे लिए संतान उत्पन्न करूँ।'

23 अब्राम ने अपनी पत्नी सारै की बात मानकर उससे कहा, 'ऐसा ही करो।' तब सारै ने अपनी मिस्री दासी हागार को लेकर अपने पति अब्राम को उसकी पत्नी होने के लिए दे दिया।
24 और वह उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम इश्माएल रखा, यह इस हफ़्ते के पाँचवें साल में हुआ [1965 AM]; और यह अब्राम की ज़िंदगी का छियासीवाँ साल था।

अध्याय 15

1 और पाँचवें वर्ष में इस जयंती के चौथे सप्ताह के तीसरे महीने के मध्य में अब्राम ने अनाज की पहली फसल का पर्व मनाया।
2 और उसने वेदी पर यहोवा के लिए नई भेंट चढ़ाई, यानी उपज का पहला फल, एक बछिया, एक बकरा और एक भेड़ वेदी पर यहोवा के लिए होमबलि के तौर पर; उनके फल-बलि और उनके पेय-बलि उसने वेदी पर लोबान के साथ चढ़ाए।
3 और प्रभु ने अब्राम को दर्शन देकर उससे कहा, 'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; मेरे सामने अपने आपको सिद्ध करो और सिद्ध बनो।
4 और मैं अपने और तुम्हारे बीच वाचा बाँधूँगा, और तुम्हारी संख्या बहुत बढ़ा दूँगा।
5 तब अब्राम मुंह के बल गिर पड़ा, और परमेश्वर ने उससे बातें कीं, और कहा:
6 'देख, मेरा नियम तेरे साथ है,
और तुम बहुत सी जातियों के पिता होगे।
7 और तेरा नाम अब्राम न रखा जाएगा,
परन्तु अब से, और सदा तक तेरा नाम अब्राहम रहेगा।
क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत सी जातियों का पिता बनाया है।
8 और मैं तुझे बहुत महान बनाऊंगा,
और मैं तुझसे राष्ट्र बनाऊंगा,
और तुझसे राजा निकलेंगे।
9 और मैं अपने और तुम्हारे बीच, और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान के बीच, उनकी पीढ़ियों के लिए, एक हमेशा का करार करूँगा, ताकि मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान का परमेश्वर बनूँ।
10 और मैं तुझे और तेरे बाद तेरे वंश को वह देश दूँगा जहाँ तू परदेशी रहा है, अर्थात् कनान देश, कि तू उस पर सदा के लिए अधिकार रखे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।'
11 और प्रभु ने अब्राहम से कहा: 'और तुम और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान मेरा वादा निभाना: और तुम में से हर एक पुरुष का खतना करना, और अपनी चमड़ी का खतना करना, और यह मेरे और तुम्हारे बीच हमेशा के वादे की निशानी होगी।
12 और आठवें दिन तुम बच्चे का खतना करोगे, तुम्हारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हर लड़के का, चाहे वह घर में पैदा हुआ हो, या जिसे तुमने किसी अजनबी से पैसे देकर खरीदा हो, या जिसे तुमने अपने वंश का नहीं खरीदा हो।
13 जो तेरे घर में पैदा होगा, उसका खतना ज़रूर होगा, और जिन्हें तूने पैसे से खरीदा है, उनका भी खतना होगा, और मेरा करार तेरे शरीर में हमेशा के लिए रहेगा।
14 और जिस आदमी का खतना न हुआ हो और आठवें दिन उसकी चमड़ी का खतना न हुआ हो, वह अपने लोगों में से अलग कर दिया जाएगा, क्योंकि उसने मेरा करार तोड़ा है।'
15 और परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'तेरी पत्नी सारै का नाम अब सारै नहीं रहेगा, बल्कि उसका नाम सारा होगा।
16 और मैं उसे आशीर्वाद दूंगा, और तुझे उससे एक बेटा दूंगा, और मैं उसे आशीर्वाद दूंगा, और वह एक राष्ट्र बनेगा, और राष्ट्रों के राजा उससे निकलेंगे।'
17 तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा, और खुश हुआ, और अपने मन में कहने लगा, 'क्या सौ साल के आदमी को बेटा होगा, और क्या सारा जो नब्बे साल की है, बच्चे को जन्म देगी?'
18 तब अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, 'काश इश्माएल तेरे सामने जीवित रहता!'
19 और परमेश्वर ने कहा: 'हाँ, और सारा भी तुम्हारे लिए एक बेटा पैदा करेगी, और तुम उसका नाम इसहाक रखना, और मैं उसके साथ अपना वादा करूँगा, एक हमेशा का वादा, और उसके बाद उसके वंश के लिए भी।
20 और इश्माएल के बारे में भी मैंने तुम्हारी बात सुनी है, और देखो, मैं उसे आशीर्वाद दूंगा, और उसे महान बनाऊंगा, और उसकी संख्या बहुत बढ़ाऊंगा, और वह बारह राजकुमारों को जन्म देगा, और मैं उससे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।
21 लेकिन मैं अपना करार इसहाक के साथ करूँगा, जिसे सारा अगले साल तुम्हारे लिए जन्म देगी।'
22 और उसने उससे बात करना बंद कर दिया, और परमेश्वर अब्राहम के पास से ऊपर चला गया।
23 और अब्राहम ने परमेश्वर की बात मानी, और उसने अपने बेटे इश्माएल को, और अपने घर में पैदा हुए सभी पुरुषों को, जिन्हें उसने अपने पैसे से खरीदा था, अपने घर के सभी पुरुषों को लिया, और उनकी चमड़ी का खतना किया।
24 और उसी दिन अब्राहम का खतना हुआ, और उसके घर के सभी आदमियों का, और घर में पैदा हुए लोगों का, और उन सभी का, जिन्हें उसने परदेशियों के बच्चों से पैसे देकर खरीदा था, उसके साथ खतना हुआ।
25 यह नियम हमेशा के लिए सभी पीढ़ियों के लिए है, और इसमें दिनों का कोई खतना नहीं है, और आठ दिनों में से एक दिन भी नहीं छूटेगा; क्योंकि यह हमेशा का नियम है, जो स्वर्ग की पट्टियों पर लिखा और तय किया गया है।
26 और हर वह इंसान जो पैदा हुआ है, जिसकी चमड़ी का आठवें दिन खतना नहीं हुआ है, वह उस वादे के बच्चों में से नहीं है जो प्रभु ने अब्राहम के साथ किया था, बल्कि वह तबाही के बच्चों में से है; और न ही उस पर कोई निशानी है कि वह प्रभु का है, बल्कि (वह तय है) धरती से खत्म किया जाएगा और मारा जाएगा, और धरती से जड़ से मिटा दिया जाएगा, क्योंकि उसने हमारे प्रभु परमेश्वर का वादा तोड़ा है।
27 क्योंकि मौजूदगी के सभी स्वर्गदूत और पवित्र करने वाले सभी स्वर्गदूत अपनी रचना के दिन से ही ऐसे बनाए गए हैं, और मौजूदगी के स्वर्गदूतों और पवित्र करने वाले स्वर्गदूतों से पहले उसने इस्राएल को पवित्र किया, ताकि वे उसके और उसके पवित्र स्वर्गदूतों के साथ रहें।
28 और तू इस्राएल के बच्चों को आज्ञा दे, और उन्हें इस वाचा का चिन्ह अपनी पीढ़ियों के लिए हमेशा के नियम के रूप में मानने दे, और वे देश से उखाड़े नहीं जाएंगे।
29 क्योंकि यह आज्ञा एक वाचा के रूप में दी गई है, कि इस्राएल के सभी बच्चों के बीच इसे हमेशा माना जाए।

30 क्योंकि इश्माएल, उसके बेटों, उसके भाइयों और एसाव को यहोवा ने अपने पास नहीं बुलाया, और उन्हें इसलिए नहीं चुना कि वे अब्राहम की संतान हैं, बल्कि इसलिए चुना कि वह उन्हें जानता था, बल्कि उसने इस्राएल को अपने लोग होने के लिए चुना।
31 और उसने उसे पवित्र किया, और सब इंसानों में से इकट्ठा किया; क्योंकि बहुत सी जातियाँ और बहुत से लोग हैं, और सब उसके हैं, और सब पर उसने आत्माओं को अधिकार दिया है कि वे उन्हें उससे दूर ले जाएँ।
32 लेकिन इस्राएल पर उसने कोई फ़रिश्ता या आत्मा नहीं रखी, क्योंकि सिर्फ़ वही उनका राजा है, और वही उन्हें बचाएगा और अपने फ़रिश्ते और अपनी आत्माओं के ज़रिए, और अपनी सारी ताकतों के ज़रिए उनसे पूछेगा ताकि वह उन्हें बचाए और आशीर्वाद दे, और वे हमेशा के लिए उसके हों और वह उनका हो।
33 और अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि इस्राएल के बच्चे इस नियम को नहीं मानेंगे, और वे इस पूरे नियम के अनुसार अपने बेटों का खतना नहीं करेंगे; क्योंकि अपने खतने के कारण वे अपने बेटों का यह खतना नहीं करेंगे, और वे सभी, जो बेलियार के बेटे हैं, अपने बेटों को जन्म से ही बिना खतना के छोड़ देंगे।
34 और इस्राएल के बच्चों पर प्रभु का बहुत गुस्सा होगा। क्योंकि उन्होंने उसके वादे को छोड़ दिया है और उसके वचन से दूर हो गए हैं, और गुस्सा दिलाया है और बुराई की है, क्योंकि वे इस कानून के नियम का पालन नहीं करते; क्योंकि उन्होंने अपने अंगों के साथ गैर-यहूदियों जैसा बर्ताव किया है, ताकि उन्हें देश से निकाल दिया जाए और जड़ से उखाड़ दिया जाए। और इस हमेशा की गलती के सारे पाप के लिए उन्हें फिर कभी माफ़ी या माफी नहीं मिलेगी।

अध्याय 16

1 और चौथे महीने के नए चाँद को हम मम्रे के ओक के पेड़ के पास अब्राहम के पास आए, और हमने उससे बात की, और उसे बताया कि उसकी पत्नी सारा से उसे एक बेटा होगा।
2 और सारा हँसी, क्योंकि उसने सुना कि हमने अब्राहम से ये बातें कही थीं, और हमने उसे समझाया, और वह डर गई, और उसने मना कर दिया कि वह इन बातों की वजह से हँसी थी।
3 और हमने उसे उसके बेटे का नाम बताया, जैसा उसका नाम स्वर्ग की तख्तियों पर लिखा है (यानी) इसहाक,
4 और जब हम निश्चित समय पर उसके पास लौटते तो उसके गर्भ में पुत्र उत्पन्न होता।
5 और इसी महीने में यहोवा ने सदोम, अमोरा, सबोईम और यरदन के पास के सारे इलाके पर अपना फैसला सुनाया। उसने उन्हें आग और गंधक से जलाकर आज तक खत्म कर दिया है। जैसा कि मैंने तुम्हें उनके सारे काम बताए हैं, कि वे बहुत बुरे और पापी हैं, और वे अपने शरीर में व्यभिचार करते हैं और धरती पर गंदगी करते हैं।
6 और इसी तरह, परमेश्वर उन जगहों पर भी सज़ा देगा जहाँ उन्होंने सदोमियों की तरह अशुद्ध काम किया है, जैसे सदोमियों ने किया था।
7 लेकिन लूत को हमने बचा लिया; क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम को याद रखा, और उसे तबाही के बीच से निकाल दिया।
8 और उसने और उसकी बेटियों ने धरती पर ऐसा पाप किया, जैसा आदम के दिनों से लेकर उसके समय तक धरती पर कभी नहीं हुआ था; क्योंकि वह आदमी अपनी बेटियों के साथ सोता था।
9 और देखो, उसके सारे वंश के बारे में स्वर्ग की तख्तियों पर यह हुक्म दिया गया था और खुदा हुआ था कि उन्हें हटा दिया जाए और जड़ से उखाड़ दिया जाए, और सदोम के न्याय की तरह उन पर सज़ा दी जाए, और सज़ा के दिन धरती पर उस आदमी का कोई वंश न छोड़ा जाए।
10 और इसी महीने अब्राहम हेब्रोन से चला गया, और कादेश और शूर के बीच गरार के पहाड़ों में रहने लगा।
11 और पांचवें महीने के बीच में वह वहां से चला गया, और शपथ के कुएं पर रहने लगा।
12 और छठे महीने के बीच में प्रभु ने सारा की सुधि ली, और जैसा उसने कहा था वैसा ही किया, और वह गर्भवती हो गई।
13 और तीसरे महीने में उसके एक बेटा हुआ, और महीने के बीच में, जिस समय यहोवा ने अब्राहम से कहा था, फसल की पहली फसल के त्योहार पर, इसहाक का जन्म हुआ।
14 और अब्राहम ने आठवें दिन अपने बेटे का खतना किया: वह पहला था जिसका खतना उस वाचा के अनुसार हुआ जो हमेशा के लिए तय है।
15 और छठे साल के चौथे हफ़्ते में हम अब्राहम के पास, शपथ के कुएँ पर पहुँचे, और हमने उसे दर्शन दिए [जैसा कि हमने सारा से कहा था कि हम उसके पास लौटेंगे, और वह एक बेटे को जन्म देगी।
16 और हम सातवें महीने में लौटे, और सारा को अपने सामने प्रेग्नेंट पाया] और हमने उसे आशीर्वाद दिया, और उसके बारे में जो कुछ तय किया गया था, उसे बताया, कि वह तब तक नहीं मरेगा जब तक उसके छह और बेटे न हो जाएं, और मरने से पहले वह उन्हें देख न ले; लेकिन इसहाक से उसका नाम और वंश कहा जाएगा:
17 और उसके बेटों की सारी औलाद गैर-यहूदी हो, और गैर-यहूदियों में गिनी जाए; लेकिन इसहाक के बेटों में से एक पवित्र औलाद बने, और गैर-यहूदियों में न गिनी जाए।
18 क्योंकि वह परमप्रधान का भाग बन गया, और उसका सारा वंश परमेश्वर के अधिकार में आ गया, कि वह सब जातियों से बढ़कर यहोवा की प्रजा हो, और वह एक राज्य, याजक और एक पवित्र राष्ट्र बने।
19 और हम चले गए, और सारा को वह सब बताया जो हमने उसे बताया था, और वे दोनों बहुत ज़्यादा खुश हुईं।
20 और उसने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई, जिसने उसे बचाया था, और जो उसे उसके रहने की जगह पर खुशियाँ दे रहा था, और उसने इस महीने में सात दिन खुशी का त्योहार मनाया, उस वेदी के पास जिसे उसने शपथ के कुएँ पर बनाया था।
21 और उसने इस त्योहार पर अपने और अपने सेवकों के लिए झोपड़ियाँ बनाईं, और वह धरती पर झोपड़ियों का त्योहार मनाने वाला पहला व्यक्ति था।
22 और इन सात दिनों में वह हर दिन वेदी पर यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाता था, दो बैल, दो मेढ़े, सात भेड़ें, और एक बकरा, पापबलि के तौर पर, ताकि वह अपने और अपने वंश के लिए प्रायश्चित कर सके।

23 और धन्यवाद-बलि के तौर पर सात मेढ़े, सात बकरी के बच्चे, सात भेड़ें, और सात बकरे, और उनके फल और अर्घ चढ़ाए; और उसने उनकी सारी चर्बी वेदी पर जलाई, यह यहोवा के लिए एक चुना हुआ चढ़ावा था जिससे खुशबू आए।
24 और सुबह और शाम वह खुशबूदार चीज़ें जलाता था, जैसे लोबान, धूप, खजूर, जटामांसी, गंधरस, मसाला और कंद; इन सातों को पीसकर, बराबर हिस्सों में मिलाकर (और) शुद्ध चढ़ाता था।
25 और उसने सात दिनों तक यह त्योहार मनाया, और वह और उसके घर के सभी लोग पूरे दिल और पूरी जान से खुश हुए; और उसके साथ कोई अजनबी या बिना खतना वाला नहीं था।
26 और उसने अपने बनाने वाले को धन्यवाद दिया जिसने उसे अपनी पीढ़ी में बनाया था, क्योंकि उसने उसे अपनी मर्ज़ी के हिसाब से बनाया था; क्योंकि वह जानता और समझता था कि उससे हमेशा की पीढ़ियों के लिए नेकी का पौधा निकलेगा, और उससे एक पवित्र बीज निकलेगा, ताकि वह उसके जैसा हो जाए जिसने सब कुछ बनाया है।
27 और उसने आशीर्वाद दिया और खुश हुआ, और उसने इस त्योहार का नाम यहोवा का त्योहार रखा, एक ऐसा आनंद जो सबसे ऊंचे परमेश्वर को स्वीकार्य हो।
28 और हमने उसे और उसके बाद धरती की सभी पीढ़ियों तक उसके सभी वंश को हमेशा आशीर्वाद दिया, क्योंकि उसने स्वर्ग की पट्टियों की गवाही के अनुसार इस त्योहार को समय पर मनाया।
29 इसी वजह से, इस्राएल के लिए आसमान की तख्तियों पर यह लिखा है कि वे सातवें महीने में, जो यहोवा को मंज़ूर है, सात दिन तक खुशी-खुशी झोपड़ियों का त्योहार मनाएँ - यह नियम हर साल उनकी पीढ़ियों के लिए हमेशा रहेगा।
30 और इसके लिए दिनों की कोई सीमा नहीं है; क्योंकि इस्राएल के लिए यह हमेशा के लिए तय किया गया है कि वे इसे मनाएँ और झोंपड़ियों में रहें, और अपने सिर पर मालाएँ रखें, और नाले से पत्तेदार टहनियाँ और विलो के पेड़ तोड़ें।
31 अब्राहम ने खजूर की डालियाँ और अच्छे पेड़ों के फल लिए, और हर दिन सुबह सात बार डालियों के साथ वेदी के चारों ओर घूमकर खुशी से सब बातों के लिए अपने परमेश्वर की तारीफ़ और शुक्रिया अदा किया।

अध्याय 17

1 और पहले वर्ष के पांचवें सप्ताह में इसहाक का दूध छुड़ाया गया, इसी जयंती के वर्ष में, [1982 AM] और तीसरे महीने में, जिस दिन उसके पुत्र इसहाक का दूध छुड़ाया गया था, अब्राहम ने एक बड़ी दावत की।
2 और मिस्री हागार का बेटा इश्माएल, अपने पिता अब्राहम के सामने उसकी जगह पर था, और अब्राहम खुश हुआ और परमेश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि उसने अपने बेटों को देखा था और वह बिना बच्चे के नहीं मरा था।
3 और उसे वे बातें याद आईं जो उसने लूत के उससे अलग होने के दिन कही थीं, और वह खुश हुआ क्योंकि प्रभु ने उसे धरती पर बीज दिया था ताकि वह धरती का वारिस हो सके, और उसने अपने मुंह से सब चीज़ों के बनाने वाले को आशीर्वाद दिया।
4 और सारा ने इश्माएल को खेलते और नाचते हुए देखा, और अब्राहम को बहुत खुशी से खुश होते हुए देखा, और उसे इश्माएल से जलन हुई और उसने अब्राहम से कहा, 'इस दासी और इसके बेटे को निकाल दो; क्योंकि इस दासी का बेटा मेरे बेटे इसहाक के साथ वारिस नहीं होगा।'
5 और यह बात अब्राहम को बुरी लगी, क्योंकि उसकी दासी और उसके बेटे की वजह से, कि वह उन्हें अपने पास से निकाल दे।
6 और परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'बच्चे और दासी के कारण यह बात तुझे बुरी न लगे; सारा ने जो कुछ तुझसे कहा है, उसे मान और मान; क्योंकि इसहाक से तेरा नाम और वंश चलेगा।
7 लेकिन इस दासी के बेटे से मैं एक बड़ी जाति बनाऊंगा, क्योंकि वह तेरे वंश का है।'
8 और अब्राहम सुबह जल्दी उठा, और रोटी और पानी की एक बोतल लेकर हागार और बच्चे के कंधों पर रखकर उसे विदा किया।
9 और वह चली गई और बेर्शेबा के जंगल में भटकती रही, और बोतल का पानी खत्म हो गया, और बच्चे को प्यास लगी, और वह आगे नहीं बढ़ सका, और गिर पड़ा।
10 और उसकी माँ ने उसे लेकर एक जैतून के पेड़ के नीचे डाल दिया, और जाकर उसके सामने, धनुष की दूरी पर बैठ गई; क्योंकि उसने कहा, 'मुझे अपने बच्चे की मौत नहीं देखनी चाहिए,' और वह बैठकर रोने लगी।
11 तब परमेश्वर के एक पवित्र स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'हाजर, तू क्यों रो रही है? उठ, बच्चे को ले और उसे अपने हाथ में थाम; क्योंकि परमेश्वर ने तेरी आवाज़ सुनी है, और बच्चे को देखा है।'
12 और उसने अपनी आँखें खोलीं, और उसे पानी का एक कुआँ दिखाई दिया, और वह गई और अपनी मटकी में पानी भरा, और अपने बच्चे को पिलाया, और वह उठकर पारान के जंगल की ओर चली गई।
13 और बच्चा बड़ा होकर तीरंदाज़ बन गया, और परमेश्वर उसके साथ था, और उसकी माँ ने मिस्र की बेटियों में से उसके लिए एक पत्नी चुन ली।
14 और उसने उसके लिए एक बेटा पैदा किया, और उसने उसका नाम नबायोत रखा; क्योंकि उसने कहा, 'जब मैंने यहोवा को पुकारा, तब वह मेरे पास था।'
15 और यह सातवें सप्ताह में हुआ, उसके पहले वर्ष में, [2003 AM] इस जयंती के पहले महीने में, इस महीने की बारहवीं तारीख को, अब्राहम के विषय में स्वर्ग में आवाज़ें आईं, कि वह जो कुछ उसने उससे कहा था, उसमें विश्वासयोग्य था, और उसने प्रभु से प्रेम किया, और हर क्लेश में वह विश्वासयोग्य था।
16 और राजकुमार मस्तेमा ने परमेश्वर के सामने आकर कहा, 'देखो, अब्राहम अपने बेटे इसहाक से प्यार करता है, और वह बाकी सब चीज़ों से ज़्यादा उससे खुश है; उसे आज्ञा दो कि उसे वेदी पर होम-बलि के तौर पर चढ़ाओ, और तुम देखोगे कि वह यह हुक्म मानेगा या नहीं, और तुम जानोगे कि वह हर उस बात में सच्चा है जिसमें तुम उसे परखते हो।
17 और यहोवा जानता था कि अब्राहम अपनी सारी मुसीबतों में सच्चा है; क्योंकि उसने उसे उसके देश में और अकाल में परखा था, और राजाओं की दौलत से परखा था, और उसकी पत्नी के ज़रिए भी परखा था, जब वह उससे अलग हो गई थी, और खतना से भी परखा था; और इश्माएल और उसकी दासी हागार के ज़रिए भी परखा था, जब उसने उन्हें जाने दिया था।

18 और हर बात में जिसमें उसने उसे परखा था, वह सच्चा पाया गया, और उसका मन अधीर नहीं हुआ, और वह काम करने में देर नहीं करता था; क्योंकि वह सच्चा था और प्रभु से प्यार करता था।

अध्याय 18

1 तब परमेश्वर ने उससे कहा, 'अब्राहम, अब्राहम'; और उसने कहा, 'देख, मैं यहां हूं।'
2 और उसने कहा, अपने प्यारे बेटे इसहाक को, जिसे तू प्यार करता है, लेकर ऊंचे इलाके में जा, और उसे उन पहाड़ों में से एक पर चढ़ा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।'
3 और वह सुबह जल्दी उठा और अपने गधे पर काठी कसी, और अपने दो जवानों और अपने बेटे इसहाक को साथ लिया, और होमबलि की लकड़ी चीर ली, और तीसरे दिन उस जगह पर गया, और उसने उस जगह को दूर से देखा।
4 और वह पानी के एक कुएं के पास आया, और उसने अपने जवानों से कहा, 'तुम गधे के साथ यहीं रुको, और मैं और लड़का (वहां) जाएंगे, और जब हम पूजा कर लेंगे तो तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।'
5 और उसने होम-बलि की लकड़ी ली और उसे अपने बेटे इसहाक पर लाद दिया, और अपने हाथ में आग और चाकू लिया, और वे दोनों एक साथ उस जगह पर गए।
6 तब इसहाक ने अपने पिता से कहा, 'पिताजी!' और उसने कहा, 'मैं यहाँ हूँ, मेरे बेटे।' और उसने उससे कहा, 'देखो, आग, चाकू और लकड़ी तो हैं; लेकिन होम-बलि के लिए भेड़ कहाँ है, पिता?'
7 और उसने कहा, 'बेटा, परमेश्वर होमबलि के लिए एक भेड़ खुद ही जुटा लेगा।' और वह परमेश्वर के पहाड़ की जगह के पास गया।
8 और उसने एक वेदी बनाई, और उस पर लकड़ी रखी, और अपने बेटे इसहाक को बांधकर वेदी पर रखी लकड़ी पर लिटा दिया, और अपने बेटे इसहाक को मारने के लिए चाकू लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।
9 और मैं उसके और राजकुमार मस्तेमा के सामने खड़ा हुआ, और प्रभु ने कहा, 'उसे कहो कि वह लड़के पर हाथ न डाले, और न ही उसे कुछ करे, क्योंकि मैंने दिखा दिया है कि वह प्रभु से डरता है।'
10 और मैंने स्वर्ग से उसे पुकारा, और उससे कहा: 'अब्राहम, अब्राहम;' और वह डर गया और बोला: 'देखो, मैं यहाँ हूँ।'
11 और मैंने उससे कहा: 'लड़के पर हाथ मत रखो, और न ही उससे कुछ करो; क्योंकि अब मैंने दिखा दिया है कि तुम यहोवा से डरते हो, और तुमने अपने बेटे, अपने जेठे बेटे को मुझसे नहीं छिपाया।'
12 और राजकुमार मस्तेमा शर्मिंदा हुआ; और अब्राहम ने अपनी आँखें उठाकर देखा, और देखो, एक मेढ़ा अपने सींगों से फंसा हुआ था, और अब्राहम गया और मेढ़े को लेकर अपने बेटे की जगह होम-बलि के लिए चढ़ाया।
13 और अब्राहम ने उस जगह का नाम 'प्रभु ने देखा है' रखा, इसलिए पहाड़ पर कहा गया है जिसे प्रभु ने देखा है: वह सिय्योन पहाड़ है।
14 और प्रभु ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को अपने नाम से पुकारा, क्योंकि उसने हमें प्रभु के नाम से उससे बात करने के लिए प्रकट किया था।
15 और उसने कहा: 'प्रभु कहता है, मैंने अपनी कसम खाई है, क्योंकि तूने यह काम किया है, और अपने बेटे, अपने प्यारे बेटे को मुझसे नहीं रोका, इसलिए मैं तुझे आशीर्वाद दूंगा, और तेरे वंश को बढ़ाऊंगा। आसमान के तारों की तरह, और समुद्र किनारे की रेत की तरह। और तेरा वंश अपने दुश्मनों के शहरों का वारिस होगा,
16 और तेरे वंश से पृथ्वी के सारे देश धन्य होंगे; क्योंकि तूने मेरी बात मानी है, और जो कुछ मैंने तुझसे कहा है, उसमें मैंने सबको दिखाया है कि तू मेरे प्रति वफ़ादार है: शांति से जा।'
17 तब अब्राहम अपने सेवकों के पास गया, और वे सब उठकर एक साथ बेर्शेबा को गए, और अब्राहम [2010 AM] शपथ के कुएँ के पास रहने लगा।
18 और वह हर साल सात दिन खुशी-खुशी यह त्योहार मनाता था, और जिन सात दिनों में वह जाता और शांति से लौटता था, उसके हिसाब से उसने इसे यहोवा का त्योहार कहा।
19 और इसी तरह यह नियम बनाया गया है और आसमान की तख्तियों पर इस्राएल और उसके वंश के बारे में लिखा गया है कि वे इस त्योहार को सात दिन तक खुशी-खुशी मनाएँ।

अध्याय 19

1 और बयालीसवें जुबली के पहले हफ़्ते के पहले साल में, अब्राहम वापस लौटा और हेब्रोन के सामने, यानी किर्यत अर्बा में रहने लगा, दो हफ़्ते साल तक।
2 और इस जुबली के पहले साल के तीसरे हफ़्ते में सारा की ज़िंदगी के दिन पूरे हुए, और वह हेब्रोन में मर गई।
3 और अब्राहम उसके लिए दुख मनाने और उसे दफ़नाने गया, और हमने उसे परखा कि क्या उसका मन सब्र रखता है और वह अपनी बातों में गुस्सा तो नहीं करता; और वह इस बात में सब्र रखता था, और परेशान नहीं होता था।
4 क्योंकि उसने सब्र से हित्तियों से बात की, ताकि वे उसे अपने मरे हुए को दफ़नाने के लिए जगह दें।
5 और यहोवा ने उसे देखने वाले सभी लोगों के सामने कृपा दिखाई, और उसने हेथ के बेटों से नरमी से विनती की, और उन्होंने उसे मम्रे के सामने दोहरी गुफा की ज़मीन, यानी हेब्रोन, चार सौ चांदी के सिक्कों में दे दी।
6 और उन्होंने उससे विनती की, "हम इसे तुम्हें मुफ़्त में दे देंगे; लेकिन उसने इसे उनके हाथ से मुफ़्त में नहीं लिया, क्योंकि उसने जगह की कीमत, यानी पूरा पैसा दे दिया, और वह उनके सामने दो बार झुका, और इसके बाद उसने अपने मरे हुए आदमी को दोहरी गुफा में दफ़ना दिया।"
7 और सारा की पूरी ज़िंदगी एक सौ सत्ताईस साल की थी, यानी दो जुबली, चार हफ़्ते और एक साल: ये सारा की ज़िंदगी के सालों के दिन हैं।
8 यह दसवीं परीक्षा है जिसमें अब्राहम को परखा गया, और वह विश्वासयोग्य और धीरजवन्त पाया गया।
9 और उसने देश में फैली इस अफवाह के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि परमेश्वर ने कहा है कि वह उसे और उसके बाद उसके वंश को यह जगह देगा, और उसने अपने मरे हुए को

दफ़नाने के लिए वहाँ जगह माँगी; क्योंकि वह सच्चा पाया गया, और स्वर्ग की तख्तियों पर परमेश्वर के दोस्त के तौर पर उसका नाम लिखा गया।

10 और चौथे साल में उसने अपने बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी ली और उसका नाम रेबेका [2020 AM] [बेथुएल की बेटी, नाहोर का बेटा, अब्राहम का भाई] था, जो लाबान की बहन और बेथुएल की बेटी थी; और बेथुएल मेल्का का बेटा था, जो अब्राहम के भाई नाहोर की पत्नी थी।

11 और अब्राहम ने अपने घर के नौकरों की बेटियों में से एक तीसरी पत्नी ली, जिसका नाम केतूरा था, क्योंकि हागार सारा से पहले मर गई थी। और उसने उसके छह बेटे पैदा किए, जिमराम, योकशान, मेदान, मिद्यान, इशबाक और शूआ, जो दो हफ़्ते के सालों में हुए।

12 और दूसरे साल के छठे हफ़्ते में, रिबका ने इसहाक से दो बेटे पैदा किए, याकूब और एसाव।

13 और [2046 AM] याकूब एक चिकना और सीधा आदमी था, और एसाव क्रूर, मैदान का आदमी और बालों वाला था, और याकूब तंबुओं में रहता था।

14 और लड़के बड़े हुए, और याकूब ने लिखना सीख लिया; लेकिन एसाव ने नहीं सीखा, क्योंकि वह खेत का आदमी और शिकारी था, और उसने युद्ध सीखा, और उसके सभी काम भयंकर थे।

15 अब्राहम याकूब से प्रेम करता था, परन्तु इसहाक एसाव से प्रेम करता था।

16 और अब्राहम ने एसाव के काम देखे, और वह जान गया कि याकूब में उसका नाम और वंश रखा जाएगा; और उसने रिबका को बुलाया और याकूब के बारे में आज्ञा दी, क्योंकि वह जानता था कि वह भी एसाव से ज़्यादा याकूब से प्यार करती है।

17 और उसने उससे कहा: मेरी बेटी, मेरे बेटे याकूब का ध्यान रखना, क्योंकि वह धरती पर मेरी जगह रहेगा, और इंसानों के बीच आशीर्वाद और शेम के पूरे वंश की शान का कारण होगा।

18 क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु उसे पृथ्वी के सब लोगों में से अपना निज भाग होने के लिये चुनेगा।

19 और देखो, मेरा बेटा इसहाक याकूब से ज़्यादा एसाव से प्यार करता है, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम सच में याकूब से प्यार करते हो।

20 उस पर अपनी कृपा और बढ़ा, और अपनी नज़रें उस पर प्यार से लगाए रख; क्योंकि वह अब से लेकर धरती की सभी पीढ़ियों तक हमारे लिए आशीर्वाद का कारण होगा।

21 तेरे हाथ मज़बूत हों, और तेरा दिल तेरे बेटे याकूब में खुश हो; क्योंकि मैंने उसे अपने सब बेटों से ज़्यादा प्यार किया है। वह हमेशा के लिए धन्य रहेगा, और उसका वंश पूरी धरती को भर देगा।

22 अगर कोई इंसान धरती की रेत को गिन सकता है, तो उसके वंश को भी गिना जाएगा।

23 और जितनी भी आशीषें प्रभु ने मुझे और मेरे वंश को दी हैं, वे हमेशा याकूब और उसके वंश की रहेंगी।

24 और उसके वंश में मेरा नाम, और मेरे पुरखों, शेम, और नोआब, और हनोक, और महललेल, और एनोस, और शेत, और आदम का नाम धन्य माना जाएगा।

25 और ये आकाश की नींव रखने, पृथ्वी को मजबूत करने, और आकाश में मौजूद सभी रोशनी को नया करने का काम करेंगे।

26 और उसने याकूब को उसकी माँ रिबका के सामने बुलाया, और उसे चूमा, और आशीर्वाद दिया, और कहा:

27 'याकूब, मेरे प्यारे बेटे, जिससे मेरा दिल प्यार करता है, भगवान तुझे आसमान से आशीर्वाद दे, और वो तुझे वो सारी आशीषें दे जिनसे उसने आदम, हनोक, नूह और शेम को आशीर्वाद दिया था; और वो सारी बातें जो उसने मुझे बताईं, और वो सारी बातें जो उसने मुझे देने का वादा किया था, वो तुझे और तेरे वंश को हमेशा के लिए, धरती के ऊपर आसमान के दिनों के हिसाब से मिले।

28 और मस्तेमा की आत्माएं तुम पर या तुम्हारे वंश पर राज नहीं करेंगी, ताकि तुम अब से हमेशा के लिए यहोवा से दूर हो जाओ, जो तुम्हारा परमेश्वर है।

29 और प्रभु परमेश्वर तेरा पिता रहे, और तू जेठा पुत्र रहे, और लोगों का भी।

30 मेरे बेटे, शांति से जाओ।' और वे दोनों अब्राहम के पास से एक साथ चले गए।

31 और रिबका तो याकूब से अपने पूरे दिल और पूरी जान से, एसाव से कहीं ज़्यादा प्यार करती थी; लेकिन इसहाक भी याकूब से कहीं ज़्यादा एसाव से प्यार करता था।

अध्याय 20

1 और बयालीसवें जयंती वर्ष में, सातवें सप्ताह के पहले वर्ष में, अब्राहम ने इश्माएल [2052 (2045?) AM] और उसके बारह बेटों, और इसहाक और उसके दो बेटों, और कतूरा के छह बेटों और उनके बेटों को बुलाया।

2 और उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे प्रभु के मार्ग पर चलें; कि वे नेकी के काम करें, और हर कोई अपने पड़ोसी से प्रेम करे, और सभी मनुष्यों के बीच इसी तरह व्यवहार करे; कि वे सब उनके साथ इस तरह से व्यवहार करें कि पृथ्वी पर न्याय और नेकी का काम करें।

3 कि वे अपने बेटों का खतना करें, उस वादे के अनुसार जो उसने उनसे किया था, और उन सभी रास्तों से दाएं या बाएं न मुड़ें जिनकी आज्ञा प्रभु ने हमें दी है; और हम खुद को हर तरह के व्यभिचार और गंदगी से दूर रखें, [और अपने बीच से हर तरह के व्यभिचार और गंदगी को त्याग दें]।

4 और अगर तुम्हारे बीच कोई औरत या लड़की बदचलनी करे, तो उसे आग में जला दो; और वे अपनी आँखों और अपने दिल के मुताबिक उसके साथ बदचलनी न करें; और वे कनान की लड़कियों में से अपनी बीवियाँ न लें; क्योंकि कनान के लोग देश से जड़ से खत्म हो जाएँगे।

5 और उसने उन्हें दानवों के न्याय और सदोमियों के न्याय के बारे में बताया, कि कैसे उनकी बुराई की वजह से उनका न्याय हुआ था, और वे अपने व्यभिचार, अशुद्धता और व्यभिचार के ज़रिए आपसी भ्रष्टाचार की वजह से मारे गए थे।

6 और हर तरह के व्यभिचार और गंदगी से, और पाप की हर गंदगी से खुद को बचाए रखो, कहीं ऐसा न हो कि तुम हमारे नाम को श्राप बना दो, और तुम्हारी पूरी ज़िंदगी को बदनामी का कारण बना दो, और तुम्हारे सभी बेटे तलवार से खत्म कर दिए जाएं, और तुम सदोम की तरह श्रापित बन जाओ, और तुम्हारे सभी बचे हुए लोग अमोरा के बेटों की तरह बन जाएं।

7 हे मेरे बेटों, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि स्वर्ग के परमेश्वर से प्रेम करो, और उसकी सभी आज्ञाओं को मानो। और उनकी मूर्तियों और उनकी अशुद्धियों के पीछे मत चलो।
8 और अपने लिए ढली हुई या खुदी हुई मूरतें न बनाओ; क्योंकि वे बेकार हैं, और उनमें कोई जान नहीं है; क्योंकि वे (इंसानों के) हाथ की बनाई हुई हैं, और जो कोई उन पर भरोसा करता है, वह किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता।
9 उनकी सेवा मत करो, न ही उनकी पूजा करो, बल्कि सबसे ऊँचे परमेश्वर की सेवा करो, और लगातार उसकी पूजा करो: और हमेशा उसके चेहरे की उम्मीद रखो, और उसके सामने सच्चाई और नेकी के काम करो, ताकि वह तुमसे खुश हो और तुम पर दया करे, और सुबह और शाम तुम पर बारिश भेजे, और तुम्हारे सभी कामों को आशीर्वाद दे जो तुमने धरती पर किए हैं, और तुम्हारी रोटी और तुम्हारे पानी को आशीर्वाद दे, और तुम्हारे पेट के फल और तुम्हारी ज़मीन की उपज, और तुम्हारे मवेशियों के झुंड, और तुम्हारी भेड़ों के झुंड को आशीर्वाद दे।
10 और तुम धरती पर आशीर्वाद का कारण बनोगे, और धरती की सारी जातियाँ तुम्हें चाहेंगी, और मेरे नाम से अपने बेटों को आशीर्वाद दोगी, कि वे भी मेरी तरह आशीर्वाद पाएं।
11 और उसने इश्माएल, उसके बेटों और कतूरा के बेटों को तोहफ़े दिए, और उन्हें अपने बेटे इसहाक के पास से विदा किया, और उसने सब कुछ अपने बेटे इसहाक को दे दिया।
12 और इश्माएल और उसके बेटे, और कतूरा के बेटे और उनके बेटे, सब मिलकर पारान से लेकर बेबीलोन के एंट्री गेट तक, रेगिस्तान के सामने वाले पूरे देश में रहने लगे।
13 और ये आपस में मिल गए, और उनके नाम अरब और इश्माएली रखे गए।

अध्याय 21

1 और इस जुबली के सातवें हफ़्ते के छठे साल में अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक को बुलाया, और [2057 (2050?) AM] उसे हुक्म दिया, 'मैं बूढ़ा हो गया हूँ, और अपनी मौत का दिन नहीं जानता, और मेरी ज़िंदगी बहुत लंबी हो गई है।
2 और देखो, मैं एक सौ पचहत्तर साल का हूँ, और अपनी ज़िंदगी के सभी दिनों में मैंने प्रभु को याद किया है, और पूरे दिल से उसकी इच्छा पूरी करने और उसके सभी मार्गों पर सीधे चलने की कोशिश की है।
3 मेरी आत्मा ने मूर्तियों से नफ़रत की है, <और मैंने उनकी सेवा करने वालों को तुच्छ जाना है, और मैंने अपना दिल और आत्मा दे दी है> ताकि मैं उसकी इच्छा पूरी करने का ध्यान रख सकूँ जिसने मुझे बनाया है।
4 क्योंकि वह जीवित परमेश्वर है, और वह पवित्र और विश्वासयोग्य है, और वह सबसे बढ़कर धर्मी है, और वह न तो किसी का पक्ष लेता है और न ही किसी से भेंट लेता है; क्योंकि परमेश्वर धर्मी है, और उन सब को सज़ा देता है जो उसकी आज्ञाओं को तोड़ते हैं और उसके करार को तुच्छ समझते हैं।
5 और हे मेरे बेटे, तू उसकी आज्ञाओं, नियमों और नियमों का पालन कर, और घिनौनी चीज़ों, खुदी हुई और ढली हुई मूर्तियों के पीछे न चल।
6 और किसी भी जानवर, गाय-बैल या आसमान में उड़ने वाले किसी भी पक्षी का खून मत खाना।
7 और अगर तुम शांति-बलि के लिए कोई जानवर मारते हो, तो उसे मार डालो, और उसका खून वेदी पर उंडेल दो, और उस बलि की सारी चर्बी को मैदे के साथ वेदी पर चढ़ाओ, और तेल मिला हुआ अन्न-बलि, और उसका अर्घ-बलि, इन सबको होम-बलि की वेदी पर एक साथ चढ़ाओ; यह यहोवा के सामने मीठी खुशबू है।
8 और तू धन्यवाद-बलि की चर्बी को वेदी पर रखी आग पर चढ़ाना, और पेट पर की चर्बी, और अंतड़ियों और दोनों गुर्दों पर की सारी चर्बी, और उन पर की सारी चर्बी, और कमर और कलेजे पर की सारी चर्बी, गुर्दों समेत अलग कर देना।
9 और इन सब को यहोवा के सामने मीठी खुशबू के लिए चढ़ाओ, यानी खाने-पीने की चीज़ों और अर्घ के साथ, यानी यहोवा को दी जाने वाली रोटी को मीठी खुशबू के लिए चढ़ाओ।
10 और उसका मांस उसी दिन और दूसरे दिन भी खाना, और दूसरे दिन सूरज डूबने तक उसे खाना न पड़े, और तीसरे दिन के लिए कुछ भी न बचे; क्योंकि वह खाने लायक नहीं है [क्योंकि वह मंज़ूर नहीं है] और उसे फिर कभी न खाना, और जो कोई उसे खाएगा वह अपने ऊपर पाप लाएगा; क्योंकि मैंने इसे अपने पुरखों की किताबों में, और हनोक की बातों में, और नूह की बातों में लिखा हुआ पाया है।
11 और अपनी सभी भेंटों पर नमक छिड़कना, और यहोवा के सामने अपनी सभी भेंटों में करार के नमक की कमी न होने देना।
12 और बलि की लकड़ी के बारे में, सावधान रहना कि तुम वेदी के लिए इनके अलावा कोई और लकड़ी न लाओ: सरू, तेजपत्ता, बादाम, देवदार, चीड़, देवदार, सेविन, अंजीर, जैतून, लोबान, लॉरेल, शतावरी।
13 और बलि के नीचे वेदी पर ऐसी लकड़ी रखना, जो दिखने में परखी हुई हो, और उस पर कोई फटी हुई या काली लकड़ी न रखना, बल्कि सख्त और साफ, बिना किसी गलती के, अच्छी और नई उगी हुई लकड़ी रखना; और उस पर पुरानी लकड़ी न रखना, [क्योंकि उसकी खुशबू चली गई है] क्योंकि उसमें अब पहले जैसी खुशबू नहीं रही।
14 इस तरह की लकड़ी के अलावा और कोई लकड़ी नहीं है जिसे तुम (वेदी पर) रखोगे, क्योंकि उसकी खुशबू फैलती है, और उसकी खुशबू आसमान तक नहीं जाती।
15 हे मेरे बेटे, इस आज्ञा को मानो और इसका पालन करो, ताकि तुम अपने सभी कामों में सीधे रहो।
16 और हर समय अपने शरीर से साफ रहो, और वेदी पर बलि चढ़ाने से पहले खुद को पानी से धो लो, और वेदी के पास जाने से पहले अपने हाथ और पैर धो लो; और जब तुम बलि चढ़ा चुके हो, तो फिर से अपने हाथ और पैर धो लो।
17 और अपने ऊपर या अपने कपड़ों पर खून न लगने देना; मेरे बेटे, खून से सावधान रहना, बहुत सावधान रहना; उसे धूल से ढक देना।
18 और किसी भी तरह का खून मत खाना, क्योंकि वह आत्मा है; किसी भी तरह का खून मत खाना।
19 और इंसान के खून के बदले कोई तोहफ़ा मत लो, कहीं ऐसा न हो कि वह बिना सज़ा के बहा दिया जाए, और कोई सज़ा न हो; क्योंकि जो खून बहाया जाता है, उसी से धरती पाप करती है, और इंसान के खून से धरती साफ़ नहीं हो सकती, सिवाय उसके खून के जिसने उसे बहाया है।

20 और किसी इंसान के खून के बदले कोई तोहफ़ा या गिफ़्ट मत लो: खून के बदले खून, ताकि तुम सबसे बड़े भगवान, प्रभु के सामने मंज़ूर हो जाओ; क्योंकि वह अच्छे लोगों की हिफ़ाज़त है: और ताकि तुम हर बुराई से बचे रहो, और वह तुम्हें हर तरह की मौत से बचाए।
21 हे मेरे बेटे, मैं देखता हूँ कि इंसानों के सारे काम पाप और बुराई से भरे हैं, और उनके सारे काम गंदगी, घिनौने और गंदे हैं, और उनमें कोई नेकी नहीं है।
22 सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उनके रास्तों पर चलो और उनके रास्तों पर चलकर, सबसे ऊँचे परमेश्वर के सामने मौत का पाप करो। नहीं तो वह तुमसे अपना चेहरा छिपा लेगा, और तुम्हें तुम्हारे गुनाहों के हाथों में वापस कर देगा, और तुम्हें ज़मीन से और तुम्हारे वंश को भी आसमान के नीचे से जड़ से मिटा देगा, और तुम्हारा नाम और तुम्हारा वंश पूरी धरती से मिट जाएगा।
23 अपने सभी कामों और अपनी सभी अशुद्धता से दूर रहो, और परमप्रधान परमेश्वर के नियमों का पालन करो, और उसकी इच्छा पूरी करो और सभी मामलों में सीधे रहो।
24 और वह तेरे सब कामों में तुझे आशीष देगा, और सारी धरती पर, धरती की सब पीढ़ियों में तेरे द्वारा नेकी का पौधा उगाएगा, और मेरा नाम और तेरा नाम स्वर्ग के नीचे सदा के लिए भुलाया नहीं जाएगा।
25 मेरे बेटे, शांति से जाओ। सबसे बड़ा परमेश्वर, मेरा परमेश्वर और तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए ताकत दे, और वह तुम्हारे सारे वंश और तुम्हारे बचे हुए वंश को पीढ़ियों तक, सभी नेक आशीर्वादों से हमेशा आशीर्वाद दे, ताकि तुम पूरी धरती पर आशीर्वाद बनो।'
26 और वह खुशी-खुशी उसके पास से चला गया।

अध्याय 22

1 और ऐसा हुआ कि दूसरे साल, यानी जिस साल अब्राहम की मौत हुई, यानी 44वीं जुबली के पहले हफ़्ते में, इसहाक और इश्माएल, हफ़्तों का त्योहार मनाने के लिए, यानी फसल के पहले फल का त्योहार मनाने के लिए, शपथ के कुएँ से अपने पिता अब्राहम के पास आए, और अब्राहम खुश हुआ क्योंकि उसके दोनों बेटे आ गए थे।
2 क्योंकि इसहाक के पास बेर्शेबा में बहुत सारी संपत्ति थी, और इसहाक अक्सर अपनी संपत्ति देखने जाता था और अपने पिता के पास लौट जाता था।
3 उन दिनों इश्माएल अपने पिता से मिलने आया, और वे दोनों साथ आए, और इसहाक ने होमबलि के लिए बलि चढ़ाई, और उसे अपने पिता की वेदी पर चढ़ाया जो उसने हेब्रोन में बनाई थी।
4 और उसने अपने भाई इश्माएल के सामने धन्यवाद की भेंट चढ़ाई और खुशी का जश्न मनाया: और रेबेका ने नए अनाज से नई रोटियां बनाईं, और उन्हें अपने बेटे याकूब को दिया, ताकि वह उन्हें अपने पिता अब्राहम के पास ले जाए, ज़मीन की पहली उपज से, ताकि वह खा सके और मरने से पहले सब चीज़ों के बनाने वाले को आशीर्वाद दे सके।
5 और इसहाक ने भी याकूब के हाथ से अब्राहम के लिए एक सबसे अच्छा धन्यवाद भेंट भेजा, ताकि वह खा-पी सके।
6 और उसने खाया-पिया और परमप्रधान परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है, जिसने पृथ्वी की सब मोटी-मोटी चीज़ें बनाईं और उन्हें इंसानों को दिया, ताकि वे खाएं-पिएं और अपने बनाने वाले का धन्यवाद करें।
7 'और अब मैं तेरा शुक्रिया अदा करता हूँ, मेरे भगवान, क्योंकि तूने मुझे यह दिन दिखाया है: देख, मैं एक सौ पच्चीस साल का हूँ, बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी उम्र बहुत ज़्यादा है, और मेरे सारे दिन शांति से बीते हैं।
8 तूने मुझे और मेरे बच्चों को जो कुछ दिया है, उसमें दुश्मन की तलवार ने मुझे आज तक नहीं हराया है।
9 हे मेरे परमेश्वर, तेरी दया और शांति तेरे दास और उसके बेटों पर बनी रहे, कि वे अब से लेकर पृथ्वी की पीढ़ियों के सभी दिनों तक, और सभी युगों तक, पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में से तेरे लिए एक चुना हुआ राष्ट्र और विरासत बनें।
10 और उसने याकूब को बुलाया और कहा: 'मेरे बेटे याकूब, सबका परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हें नेकी करने और अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मज़बूत करे, और वह तुम्हें और तुम्हारे वंश को चुने ताकि तुम हमेशा उसकी इच्छा के अनुसार उसकी विरासत के लोग बन सको।
11 और हे मेरे बेटे याकूब, पास आकर मुझे चूमो।' और वह पास आकर उसे चूमा, और कहा: 'मेरे बेटे याकूब को आशीर्वाद मिले, और परमप्रधान परमेश्वर के सभी बेटों को, हर युग में: परमेश्वर तुम्हें नेकी का वंश दे; और तुम्हारे कुछ बेटों को वह पूरी धरती के बीच पवित्र ठहराए; देश तुम्हारी सेवा करें, और सभी देश तुम्हारे वंश के सामने झुकें।
12 लोगों के सामने मज़बूत बनो, और शेत के सभी वंशों पर अधिकार रखो। तब तुम्हारे और तुम्हारे बेटों के रास्ते सही माने जाएँगे, ताकि वे एक पवित्र राष्ट्र बन जाएँ।
13 सबसे ऊँचा परमेश्वर तुम्हें वे सारी आशीषें दे, जिनसे उसने मुझे आशीष दी है, और जिनसे उसने नूह और आदम को आशीष दी है; वे तुम्हारी संतान के पवित्र सिर पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा बनी रहें।
14 और वह तुम्हें सारे अधर्म और गंदगी से साफ़ करे, ताकि तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ हो जाएं; जो तुमने अनजाने में किए हैं। और वह तुम्हें मज़बूत करे, और तुम्हें आशीर्वाद दे। और तुम पूरी धरती के वारिस बनो,
15 और वह तुम्हारे साथ अपना करार फिर से करे। ताकि तुम हमेशा के लिए उसकी विरासत के लिए एक राष्ट्र बनो, और वह तुम्हारे और तुम्हारे वंश के लिए धरती के सभी दिनों में सच्चाई और नेकी से परमेश्वर बने।
16 और हे मेरे बेटे याकूब, तू मेरी बातें याद रख, और अपने पिता अब्राहम की आज्ञाओं का पालन कर। दूसरे देशों से अलग हो जा, और उनके साथ न खा; और उनके जैसे काम न कर, और उनके साथी न बन; क्योंकि उनके काम अशुद्ध हैं, और उनके सब काम गंदे, घिनौने और अशुद्ध हैं।
17 वे मरे हुओं को बलि चढ़ाते हैं, और बुरी आत्माओं की पूजा करते हैं, और कब्रों पर खाते हैं, और उनके सारे काम बेकार और बेकार हैं।
18 उनके पास समझने के लिए दिल नहीं है, और उनकी आँखें नहीं देखतीं कि उनके काम क्या हैं, और वे कैसे लकड़ी के टुकड़े से यह कहने में गलती करते हैं: 'तू मेरा भगवान है,' और पत्थर से: 'तू मेरा भगवान है और तू ही मेरा बचाने वाला है।' [और उनके पास दिल नहीं है।]

19 और हे मेरे बेटे याकूब, परमप्रधान परमेश्वर तेरी सहायता करे, और स्वर्ग का परमेश्वर तुझे आशीष दे, और तुझे उनकी अशुद्धता और सब अधर्म से दूर करे।
20 हे मेरे बेटे याकूब, कनान की बेटियों में से किसी से शादी करने से सावधान रहना; क्योंकि उसकी सारी संतानें धरती से मिटा दी जाएंगी।
21 क्योंकि हाम के गुनाह की वजह से कनान ने गलती की, और उसके सारे वंश और बाकी सब कुछ धरती से खत्म हो जाएगा, और उसके वंश में से कोई भी इंसाफ़ के दिन नहीं बचेगा।
22 और सभी मूर्तिपूजकों और अपवित्र लोगों के लिए
(क) जीवितों की दुनिया में उनके लिए कोई आशा नहीं होगी;
(ख) और पृथ्वी पर उनका कोई स्मरण न रहेगा;
(ग) क्योंकि वे अधोलोक में उतरेंगे,
(d) और वे निंदा के स्थान में जाएंगे,
जैसे सदोम के बच्चों को धरती से उठा लिया गया था, वैसे ही मूर्तियों की पूजा करने वाले सभी लोगों को भी उठा लिया जाएगा।
23 हे मेरे बेटे याकूब, मत डर, और हे अब्राहम के बेटे, घबरा मत; परमप्रधान परमेश्वर तुझे विनाश से बचाए, और भटकने के सब रास्तों से तुझे छुड़ाए।
24 यह घर मैंने अपने लिए बनाया है ताकि मैं इस पर धरती पर अपना नाम रख सकूँ: [यह तुम्हें और तुम्हारे वंश को हमेशा के लिए दिया गया है], और इसका नाम अब्राहम का घराना होगा; यह तुम्हें और तुम्हारे वंश को हमेशा के लिए दिया गया है; क्योंकि तुम मेरा घर बनाओगे और मेरा नाम परमेश्वर के सामने हमेशा के लिए स्थापित करोगे: तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम धरती की सभी पीढ़ियों तक बना रहेगा।'
25 और उसने उसे आज्ञा देना और आशीर्वाद देना बंद कर दिया।
26 और वे दोनों एक ही बिस्तर पर साथ लेटे रहे, और याकूब अपने पिता के पिता अब्राहम की गोद में सो गया, और उसने उसे सात बार चूमा, और उसका प्यार और उसका दिल उसके लिए खुश हुआ।
27 और उसने पूरे दिल से उसे आशीर्वाद दिया और कहा: 'सबसे महान परमेश्वर, सबका परमेश्वर, और सबका बनाने वाला, जिसने मुझे कसदियों के ऊर से निकाला ताकि वह मुझे यह ज़मीन दे ताकि मैं इसे हमेशा के लिए विरासत में पा सकूँ, और मैं एक पवित्र वंश बना सकूँ - सबसे महान हमेशा के लिए धन्य हो।'
28 और उसने याकूब को आशीर्वाद दिया और कहा: 'मेरे बेटे, जिस पर मैं पूरे दिल और प्यार से खुश हूँ, तेरी कृपा और दया उस पर और उसके वंश पर हमेशा बनी रहे।
29 और उसे न त्यागना, और न ही उसे अब से लेकर हमेशा के दिनों तक तुच्छ समझना, और तेरी नज़र उस पर और उसके वंश पर खुली रहे, कि तू उसे बचाए रखे, और उसे आशीर्वाद दे, और उसे अपनी विरासत के लिए एक राष्ट्र के रूप में पवित्र करे;
30 और अब से लेकर हमेशा तक उसे अपनी सारी आशीषें दे, और अपनी वाचा और अपनी कृपा उसके और उसके वंश के साथ अपनी सारी अच्छी इच्छा के अनुसार धरती की सभी पीढ़ियों के लिए नई कर।'

अध्याय 23

1 और उसने याकूब की दो उंगलियां उसकी आंखों पर रखीं, और उसने देवताओं के परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और उसने अपना चेहरा ढक लिया और अपने पैर फैला दिए और हमेशा की नींद सो गया, और अपने पूर्वजों के पास जा मिला।
2 और यह सब होने पर भी याकूब अपनी गोद में लेटा रहा, और उसे पता नहीं था कि उसके पिता का पिता अब्राहम मर चुका है।
3 और याकूब नींद से जागा, और देखा कि अब्राहम बर्फ की तरह ठंडा था, और उसने कहा, 'पिता, पिता'; लेकिन कोई भी बोलने वाला नहीं था, और उसने जान लिया कि वह मर गया है।
4 तब वह अपनी गोद से उठा, और दौड़कर अपनी माँ रिबका को यह बात बताई; और रिबका रात में इसहाक के पास गई, और उसे यह बात बताई; और वे दोनों साथ-साथ चले, और याकूब भी उनके साथ गया, और उसके हाथ में एक दीया था, और जब वे अंदर गए तो उन्होंने अब्राहम को मरा हुआ पाया।
5 तब इसहाक अपने पिता के मुंह पर गिरकर रोया और उसे चूमा।
6 और अब्राहम के घराने में आवाज़ें सुनाई दीं, और उसका बेटा इश्माएल उठा, और अपने पिता अब्राहम के पास गया, और अपने पिता अब्राहम के लिए, और वह और अब्राहम का सारा घराना फूट-फूट कर रोया, और वे फूट-फूट कर रोए।
7 और उसके बेटों इसहाक और इश्माएल ने उसे उसकी पत्नी सारा के पास, दोहरी गुफा में दफ़नाया; और उसके घर के सभी आदमी, और इसहाक और इश्माएल, और उनके सभी बेटे, और कतूरा के सभी बेटे अपनी-अपनी जगह पर उसके लिए चालीस दिन तक रोते रहे; और अब्राहम के लिए रोने के दिन खत्म हो गए।
8 और वह तीन जुबली और चार हफ़्ते, यानी एक सौ पचहत्तर साल तक ज़िंदा रहा, और बूढ़ा होकर अपनी ज़िंदगी के दिन पूरे किए।
9 क्योंकि पुरखों की ज़िंदगी के दिन उन्नीस जुबली साल थे; और बाढ़ के बाद वे उन्नीस जुबली साल से कम होने लगे, और जुबली साल कम होने लगे, और जल्दी बूढ़े होने लगे, और अब्राहम को छोड़कर, कई तरह की मुसीबतों और अपने बुरे कामों की वजह से उनकी उम्र पूरी होने लगी।
10 क्योंकि अब्राहम अपने सभी कामों में प्रभु के साथ परफेक्ट था, और अपनी ज़िंदगी के सभी दिनों में नेकी से खुश था; और देखो, जब वह बुराई की वजह से बूढ़ा हो गया, तो उसकी ज़िंदगी में चार जुबली भी पूरी नहीं हुईं, और उसकी ज़िंदगी के दिन पूरे हो गए।
11 और इस समय से लेकर बड़े न्याय के दिन तक जितनी भी पीढ़ियाँ आएंगी, वे दो जुबली पूरी होने से पहले ही जल्दी बूढ़ी हो जाएँगी, और बुढ़ापे की वजह से उनका ज्ञान उन्हें छोड़ देगा, और उनका सारा ज्ञान मिट जाएगा।
12 और उन दिनों में, अगर कोई आदमी डेढ़ साल तक जीता है, तो उसके बारे में कहा जाएगा: 'वह बहुत जीया है, और उसके ज़्यादातर दिन दुख, तकलीफ़ और तकलीफ़ में बीते हैं, और कोई शांति नहीं है:
13 क्योंकि मुसीबत पर मुसीबत, और घाव पर घाव, और मुसीबत पर मुसीबत, और बुरी खबर पर बुरी खबर, और बीमारी पर बीमारी, और इस तरह के सभी बुरे फैसले, एक के बाद एक, बीमारी और तबाही, और बर्फ और पाला और बर्फ, और बुखार,

और ठंड, और सुस्ती, और अकाल, और मौत, और तलवार, और कैद, और हर तरह की मुसीबतें और दर्द आते रहते हैं।'
14 और ये सब उस बुरी पीढ़ी पर आएँगे, जो धरती पर गलत काम करती है: उनके काम हैं गंदगी, बदचलनी, गंदगी और घिनौने काम।
15 तब वे कहेंगे: 'पुरखों के दिन बहुत थे, हज़ार साल तक, और अच्छे थे; लेकिन देखो, हमारी ज़िंदगी के दिन, अगर कोई आदमी बहुत जीया है, तो सत्तर साल हैं, और अगर वह ताकतवर है, तो सत्तर साल हैं, और वे बुरे हैं, और इस बुरी पीढ़ी के दिनों में कोई शांति नहीं है।'
16 और उस पीढ़ी में बेटे अपने पिता और अपने बड़ों को पाप और गलत कामों के लिए, और उनके मुँह की बातों और उन बड़ी बुराइयों के लिए जो वे करते हैं, और उस वादे को तोड़ने के लिए दोषी ठहराएँगे जो प्रभु ने उनके और उनके बीच किया था, कि वे उसकी सभी आज्ञाओं, उसके नियमों और उसके सभी कानूनों का पालन करें, न तो दाएँ हाथ हटें और न बाएँ।
17 क्योंकि सब ने बुरा किया है, और हर मुँह से बुरी बातें निकलती हैं, और उनके सारे काम अशुद्ध और घिनौने हैं, और उनके सारे रास्ते गंदगी, अशुद्धता और तबाही से भरे हैं।
18 देखो, उनके सब कामों की वजह से धरती खत्म हो जाएगी, और न तो अंगूर का बीज होगा, और न ही तेल; क्योंकि उनके काम पूरी तरह से गलत हैं, और वे सब एक साथ खत्म हो जाएंगे, जानवर, गाय-बैल, पक्षी, और समुद्र की सारी मछलियां, इंसानों की संतानों की वजह से।
19 और वे एक-दूसरे से झगड़ेंगे, छोटे बूढ़े से, और बूढ़े जवान से, गरीब अमीर से, गरीब बड़े से, और गरीब अमीर से, क्योंकि वे नियम और करार को भूल गए हैं; क्योंकि वे आज्ञा, करार, त्योहार, महीने, सब्त, जुबली और सभी फैसले भूल गए हैं।
20 और वे धनुष और तलवार लेकर खड़े होंगे और उन्हें वापस रास्ते पर लाने के लिए लड़ेंगे; लेकिन वे तब तक नहीं लौटेंगे जब तक धरती पर एक-दूसरे का बहुत खून न बह जाए।
21 और जो बच गए हैं, वे अपनी बुराई से नेकी के रास्ते पर नहीं लौटेंगे, बल्कि वे सब धोखे और दौलत में खुद को ऊंचा उठाएंगे, ताकि वे अपने पड़ोसी का सब कुछ हड़प सकें, और वे बड़ा नाम लेंगे, लेकिन सच्चाई और नेकी से नहीं, और वे अपनी गंदगी और अपनी गंदगी की वजह से सबसे पवित्र जगह को भी गंदा कर देंगे।
22 और इस पीढ़ी के कामों पर प्रभु की ओर से बड़ी सज़ा पड़ेगी, और वह उन्हें तलवार, न्याय, कैद, लूटे जाने और खाए जाने के लिए सौंप देगा।
23 और वह उनके खिलाफ गैर-यहूदियों के पापियों को जगाएगा, जिनमें न तो दया है और न ही करुणा, और जो किसी का भी सम्मान नहीं करेंगे, न बूढ़े, न जवान, न किसी का, क्योंकि वे सभी इंसानों से ज़्यादा दुष्ट और बुराई करने में ताकतवर हैं। और वे इज़राइल के खिलाफ हिंसा और याकूब के खिलाफ अपराध करेंगे, और धरती पर बहुत खून बहाया जाएगा, और कोई इकट्ठा करने वाला नहीं होगा और कोई दफनाने वाला नहीं होगा।
24 उन दिनों वे ज़ोर से पुकारेंगे, और पुकारेंगे और प्रार्थना करेंगे कि वे पापियों, यानी गैर-यहूदियों के हाथ से बच जाएं; लेकिन कोई भी नहीं बचेगा।
25 और बच्चों के सिर सफेद हो जाएंगे और बाल सफेद हो जाएंगे, और तीन हफ़्ते का बच्चा सौ साल के आदमी जैसा बूढ़ा दिखेगा, और मुसीबत और ज़ुल्म से उनका कद खत्म हो जाएगा।
26 और उन दिनों बच्चे नियमों को पढ़ना शुरू करेंगे, और आज्ञाओं को खोजेंगे, और धर्म के मार्ग पर लौटेंगे।
27 और उन इंसानों के दिन बढ़ने लगेंगे और बढ़ते जाएंगे, जब तक कि उनके दिन एक हज़ार साल के करीब न हो जाएं। और इतने साल जितने पहले दिनों की गिनती थी, उससे भी ज़्यादा।
28 और कोई बूढ़ा न होगा, न कोई ऐसा होगा जो अपने दिनों से खुश न हो, क्योंकि सब बच्चे और जवान जैसे होंगे।
29 और वे अपने सारे दिन शांति और खुशी से पूरे करेंगे और रहेंगे, और न कोई शैतान होगा, न कोई बुरा विनाश करने वाला; क्योंकि उनके सारे दिन आशीर्वाद और चंगाई के दिन होंगे।
30 और उस समय प्रभु अपने सेवकों को ठीक करेगा, और वे उठेंगे और बड़ी शांति देखेंगे, और अपने दुश्मनों को निकाल देंगे। और नेक लोग देखेंगे और शुक्रगुजार होंगे, और हमेशा-हमेशा के लिए खुशी से झूम उठेंगे, और अपने सभी फैसलों और अपने दुश्मनों पर उनके सभी श्रापों को देखेंगे।
31 और उनकी हड्डियाँ धरती में आराम करेंगी, और उनकी आत्माएँ बहुत खुश होंगी, और वे जान लेंगे कि यह प्रभु ही है जो न्याय करता है, और सैकड़ों और हज़ारों पर और उन सभी पर दया करता है जो उससे प्यार करते हैं।
32 और हे मूसा, तू इन बातों को लिख ले; क्योंकि ये इसी तरह लिखी गई हैं, और ये स्वर्ग की तख्तियों पर लिखी हैं, ताकि पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए गवाही बनी रहे।

अध्याय 24

1 अब्राहम की मौत के बाद यहोवा ने उसके बेटे इसहाक को आशीर्वाद दिया। और वह हेब्रोन से चला गया। और इस जयंती के पहले साल के तीसरे हफ़्ते में, यानी सात साल तक, दर्शन के कुएँ पर रहने लगा।
2 और पहले वर्ष के चौथे सप्ताह में देश में अकाल पड़ा, [2080 AM] यह उस पहले अकाल से अलग था जो अब्राहम के दिनों में पड़ा था।
3 और याकूब ने मसूर की दाल बोई, और एसाव भूखा खेत से आया। और उसने अपने भाई याकूब से कहा: 'मुझे यह लाल दाल दे दो।' और याकूब ने उससे कहा: 'मुझे अपना [ज्येष्ठाधिकार, यह] जन्मसिद्ध अधिकार बेच दो और मैं तुम्हें रोटी दूंगा, और इस मसूर की दाल में से भी कुछ दूंगा।'
4 तब एसाव ने मन में कहा, 'मैं तो मर जाऊंगा; इस जन्मसिद्ध अधिकार से मुझे क्या लाभ होगा?
5 तब उसने याकूब से कहा, 'मैं यह तुम्हें देता हूँ।' याकूब ने कहा, 'आज ही मुझसे कसम खाओ,' और उसने उससे कसम खाई।
6 और याकूब ने अपने भाई एसाव को रोटी और खीर दी, और वह पेट भर खाकर तृप्त हो गया; और एसाव ने अपने पहिलौठे के अधिकार को तुच्छ जाना; इसी कारण एसाव का नाम एदोम पड़ा, क्योंकि याकूब ने उसे उसके पहिलौठे के अधिकार के रूप में लाल खीर दी थी।
7 और याकूब बड़ा हो गया, और एसाव अपनी शान से नीचे गिरा दिया गया।

8 और देश में अकाल पड़ा, और इसहाक इस हफ़्ते के दूसरे साल मिस्र जाने के लिए निकल पड़ा, और गरार में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया।
9 और प्रभु ने उसे दर्शन देकर कहा, 'मिस्र मत जाओ; उस देश में रहो जिसके बारे में मैं तुम्हें बताऊंगा, और इसी देश में रहो, और मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।
10 क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को यह सारा देश दूंगा, और अपनी वह कसम पूरी करूंगा जो मैंने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, और तेरे वंश को आकाश के तारों के समान बढ़ाऊंगा, और तेरे वंश को यह सारा देश दूंगा।
11 और तेरे वंश से धरती की सारी जातियां धन्य होंगी, क्योंकि तेरे पिता ने मेरी बात मानी, और मेरी आज्ञाओं, मेरे नियमों, मेरे नियमों, और मेरे करार को माना; और अब तू मेरी बात मानकर इस देश में बसा रहेगा।'
12 और वह गेलर में तीन हफ़्ते तक रहा।
13 और अबीमेलेक ने उसके बारे में, [2080-2101 AM] और जो कुछ उसका था, उसके बारे में यह कहकर आरोप लगाया, 'जो कोई भी उसे या उसकी किसी चीज़ को छुएगा, वह ज़रूर मर जाएगा।'
14 और इसहाक पलिश्तियों के बीच ताकतवर हो गया, और उसे बहुत सारी चीज़ें मिलीं, बैल, भेड़, ऊँट, गधे और एक बड़ा घराना।
15 और उसने पलिश्तियों के देश में बोया और सौ गुना फ़ायदा हुआ, और इसहाक बहुत बड़ा हो गया, और पलिश्ती उससे जलने लगे।
16 अब्राहम के सेवकों ने अब्राहम के जीवन में जितने भी कुएँ खोदे थे, पलिश्तियों ने अब्राहम की मृत्यु के बाद उन्हें बंद कर दिया और उन्हें मिट्टी से भर दिया।
17 और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, 'हमारे पास से चले जाओ, क्योंकि तुम हमसे ज़्यादा ताकतवर हो।' और इसहाक पहले साल के सातवें हफ़्ते में वहाँ से चला गया, और गरार की घाटियों में रहने लगा।
18 और उन्होंने पानी के उन कुओं को फिर से खोदा जो उसके पिता अब्राहम के सेवकों ने खोदे थे, और जिन्हें पलिश्तियों ने उसके पिता अब्राहम की मौत के बाद बंद कर दिया था, और उसने उनके नाम वही रखे जो उसके पिता अब्राहम ने रखे थे।
19 और इसहाक के सेवकों ने घाटी में एक कुआँ खोदा, और उन्हें जीवन का पानी मिला, और गेरार के चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा: 'पानी हमारा है'; और इसहाक ने कुएँ का नाम 'बदमाश' रखा, क्योंकि उन्होंने हमारे साथ बदतमीज़ी की थी।
20 और उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उसके लिए भी उन्होंने झगड़ा किया, और उसने उसका नाम 'दुश्मनी' रखा। और वह वहाँ से उठा और उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उसके लिए भी उन्होंने झगड़ा नहीं किया, और उसने उसका नाम 'जगह' रखा, और इसहाक ने कहा: 'अब प्रभु ने हमारे लिए जगह बना दी है, और हम ज़मीन में बढ़ गए हैं।'
21 वहां से वह पहले वर्ष के पहले सप्ताह के चालीसवें जयंती वर्ष में शपथ के कुएँ पर गया।
22 और प्रभु उस रात, पहले महीने के नए चाँद को, उसे दिखाई दिए, और उससे कहा: 'मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा और अपने सेवक अब्राहम के कारण तुम्हारे वंश को धरती की रेत के समान ज़रूर बढ़ाऊँगा।'
23 और उसने वहाँ एक वेदी बनाई, जिसे उसके पिता अब्राहम ने पहले बनाया था, और उसने यहोवा का नाम पुकारा, और अपने पिता अब्राहम के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया।
24 और उन्होंने एक कुआँ खोदा और उन्हें जीवन का जल मिला।
25 और इसहाक के सेवकों ने एक और कुआँ खोदा, लेकिन उन्हें पानी नहीं मिला। वे जाकर इसहाक से कहने लगे कि उन्हें पानी नहीं मिला। इसहाक ने कहा: 'मैंने आज पलिश्तियों से कसम खाई है और यह बात हमें बताई गई है।'
26 और उसने उस जगह का नाम 'शपथ का कुआँ' रखा; क्योंकि वहाँ उसने अबीमेलेक, उसके दोस्त अहुज्जत और उसके सेनापति फिकोल से शपथ ली थी।
27 और उस दिन इसहाक को पता चला कि उसने मजबूर होकर उनसे शांति की कसम खाई थी।
28 और उस दिन इसहाक ने पलिश्तियों को कोसा और कहा: 'पलिश्तिनों को शाप दिया जाए, जब तक कि सभी देशों में गुस्सा और रोष न फैल जाए; परमेश्वर उन्हें पापियों, गैर-यहूदियों और कित्तियों के हाथों में मज़ाक, श्राप और गुस्से और क्रोध का कारण बनाए।
29 और जो कोई दुश्मन और कित्तियों की तलवार से बच जाए, उसे नेक जाति स्वर्ग के नीचे से न्याय के द्वारा जड़ से उखाड़ फेंके; क्योंकि वे पृथ्वी पर अपनी पीढ़ियों तक मेरे बच्चों के दुश्मन और शत्रु रहेंगे।
30 और उनका कोई बचा हुआ हिस्सा नहीं बचेगा, न ही न्याय के दिन कोई बचेगा; क्योंकि पलिश्तियों का पूरा वंश खत्म हो जाएगा, जड़ से उखाड़ दिया जाएगा और धरती से निकाल दिया जाएगा, और इन कप्तोरियों का धरती पर कोई नाम या वंश नहीं बचेगा।
31 क्योंकि चाहे वह स्वर्ग पर चढ़ जाए, वहाँ से नीचे उतारा जाएगा, और चाहे वह धरती पर मज़बूत हो जाए, वहाँ से घसीटा जाएगा, और चाहे वह राष्ट्रों के बीच छिप जाए, वहाँ से भी उसे जड़ से उखाड़ दिया जाएगा; और चाहे वह अधोलोक में उतर जाए, वहाँ भी उसकी सज़ा बड़ी होगी, और वहाँ भी उसे शांति नहीं मिलेगी।
32 और अगर वह कैदी बन जाए, तो जो लोग उसकी जान के पीछे पड़े हैं, वे उसे रास्ते में ही मार डालेंगे, और सारी धरती पर उसका न तो नाम बचेगा, न वंश; क्योंकि वह हमेशा के लिए शाप में चला जाएगा।'
33 और उसके बारे में आसमान की पट्टियों पर ऐसा ही लिखा और खुदा हुआ है, कि इंसाफ़ के दिन उसके साथ ऐसा किया जाए, ताकि वह ज़मीन से जड़ से उखाड़ दिया जाए।

अध्याय 25

1 और इसी हफ्ते के दूसरे साल, इसी जुबली में, रिबका ने अपने बेटे याकूब को बुलाकर उससे कहा, 'मेरे बेटे, अपने भाई एसाव की तरह कनान की लड़कियों में से किसी से शादी मत करना, जिसने कनान की दो लड़कियों से शादी की थी, और उन्होंने अपने सब गंदे कामों से मेरी जान खराब कर दी है: क्योंकि उनके सब काम बदचलनी और हवस के हैं, और उनमें कोई नेकी नहीं है, क्योंकि (उनके काम) बुरे हैं।

2 और मैं, मेरे बेटे, तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, और मेरा दिल और मेरा प्यार दिन के हर घंटे और रात के हर पहर में तुम्हें आशीर्वाद देते हैं।
3 और अब, मेरे बेटे, मेरी बात सुनो, और अपनी माँ की मर्ज़ी पूरी करो, और इस देश की बेटियों में से शादी मत करना, बल्कि सिर्फ़ मेरे पिता के घराने और मेरे पिता के खानदान में से ही शादी करना। तुम मेरे पिता के घराने में से ही शादी करना, और सबसे ऊँचा परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद देगा, और तुम्हारे बच्चे एक नेक पीढ़ी और पवित्र वंश होंगे।'
4 तब याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, 'देखो, माँ, मैं नौ हफ़्ते का हूँ, और मैं न तो किसी औरत को जानता हूँ, न ही मैंने किसी से शादी की है, और न ही मैंने कनान की किसी लड़की से शादी करने के बारे में सोचा है।
5 क्योंकि माँ, मुझे हमारे पिता अब्राहम की बातें याद हैं, कि उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि मैं कनान की लड़कियों में से किसी से शादी न करूँ, बल्कि अपने पिता के घराने और अपने रिश्तेदारों में से किसी से शादी करूँ।
6 मैंने पहले सुना है कि तेरे भाई लाबान के घर बेटियाँ पैदा हुई हैं, और मैंने उनमें से किसी एक को ब्याहने की सोची है।
7 और इसी वजह से मैंने अपनी आत्मा में खुद को पाप करने या अपने सभी कामों में बिगड़ने से बचाए रखा है; क्योंकि हवस और व्यभिचार के बारे में, मेरे पिता अब्राहम ने मुझे बहुत सी आज्ञाएँ दी थीं।
8 और, उसने मुझे जो भी हुक्म दिया, उसके बावजूद, इन 22 साल से मेरा भाई मुझसे लड़ता रहा है, और बार-बार मुझसे कहता रहा है: 'हे मेरे भाई, मेरी दोनों पत्नियों में से किसी एक की बहन से शादी कर लो'; लेकिन मैंने वैसा करने से मना कर दिया जैसा उसने किया।
9 हे माँ, मैं तेरे सामने कसम खाता हूँ कि मैं अपनी पूरी ज़िंदगी कनान देश की लड़कियों में से किसी से शादी नहीं करूँगा, और न ही अपने भाई की तरह बुरा काम करूँगा।
10 हे माँ, डरो मत; भरोसा रखो कि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा और सीधाई से चलूँगा, और हमेशा के लिए अपने रास्ते खराब नहीं करूँगा।
11 और तब उसने अपना चेहरा आसमान की तरफ उठाया और अपने हाथों की उंगलियां फैला दीं, और अपना मुंह खोला और सबसे ऊंचे परमेश्वर को धन्यवाद दिया, जिसने आसमान और धरती को बनाया था, और उसने उसे धन्यवाद और तारीफ दी।
12 और उसने कहा: 'प्रभु परमेश्वर धन्य है, और उसका पवित्र नाम सदा सर्वदा धन्य रहे, जिसने मुझे याकूब को एक पवित्र पुत्र और पवित्र वंश के रूप में दिया है; क्योंकि वह तेरा है, और उसका वंश सदा और सभी पीढ़ियों तक सदा तेरा ही रहेगा।
13 हे यहोवा, उसे आशीर्वाद दे, और मेरे मुंह में नेकी का आशीर्वाद डाल, ताकि मैं उसे आशीर्वाद दे सकूं।'
14 और उसी समय, जब नेकी की आत्मा उसके मुंह में उतरी, तो उसने अपने दोनों हाथ याकूब के सिर पर रखे, और कहा:
15 हे नेकी के मालिक और हमेशा के भगवान, तुम धन्य हो, और वह तुम्हें इंसानों की सभी पीढ़ियों से ज़्यादा आशीर्वाद दे। हे मेरे बेटे, वह तुम्हें नेकी का रास्ता दिखाए, और तुम्हारी संतानों को नेकी दिखाए।
16 और वह तेरे जीवन में तेरे बेटों को बहुत बढ़ाए, और वे साल के महीनों की गिनती के हिसाब से बढ़ें। और तेरे बेटे बहुत हों और आसमान के तारों से भी ज़्यादा महान हों, और उनकी गिनती समुद्र की रेत से भी ज़्यादा हो।
17 और वह उन्हें यह अच्छी ज़मीन दे - जैसा उसने कहा था कि वह इसे अब्राहम और उसके बाद उसके वंश को हमेशा देगा - और वे इसे हमेशा के लिए अपने पास रखें।
18 और हे मेरे बेटे, मैं अपने जीवन में तेरे लिए धन्य संतानें देखूं, और तेरे सभी वंश धन्य और पवित्र हों।
19 और जैसे तूने अपनी माँ की आत्मा को उसके जीवन के दौरान ताज़ा किया है, वैसे ही उसकी कोख जिसने तुझे जन्म दिया, तुझे आशीर्वाद देती है, [मेरा स्नेह] और मेरे स्तन तुझे आशीर्वाद देते हैं और मेरा मुँह और मेरी जीभ तेरी बहुत प्रशंसा करते हैं।
20 धरती पर बढ़ो और फैलो, और तुम्हारा वंश हमेशा स्वर्ग और धरती की खुशी में पूरा रहे; और तुम्हारा वंश खुशियाँ मनाए, और शांति के बड़े दिन में उसे शांति मिले।
21 और तेरा नाम और तेरा वंश हमेशा तक बना रहे, और सबसे ऊँचा परमेश्वर उनका परमेश्वर हो, और नेकी का परमेश्वर उनके साथ रहे, और उनके द्वारा उसका पवित्र स्थान हमेशा तक बना रहे।
22 जो तुझे आशीर्वाद दे, वह धन्य हो, और जो प्राणी तुझे झूठा श्राप दे, वह श्रापित हो।
23 और उसने उसे चूमा, और उससे कहा; 'दुनिया का मालिक तुमसे वैसे ही प्यार करे जैसे तुम्हारी माँ का दिल और उसका प्यार तुमसे खुश होता है और तुम्हें आशीर्वाद दे।' और उसने आशीर्वाद देना बंद कर दिया।

अध्याय 26

1 और इसी हफ़्ते के सातवें साल में इसहाक ने अपने बड़े बेटे एसाव को बुलाकर उससे कहा, 'बेटा, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, और मेरी आँखें धुंधली हो गई हैं, और मैं अपनी मौत का दिन नहीं जानता।
2 और अब अपने शिकार के हथियार, अपना तरकश और अपना धनुष लेकर मैदान में जाओ, और शिकार करके मेरे लिए (हिरन का मांस) पकड़ो, मेरे बेटे, और मेरे लिए स्वादिष्ट मांस बनाओ, जैसा मेरी आत्मा को पसंद है, और उसे मेरे पास लाओ ताकि मैं खाऊं, और मरने से पहले मेरी आत्मा तुम्हें आशीर्वाद दे।'
3 लेकिन रेबेका ने इसहाक को एसाव से बात करते हुए सुना।
4 और एसाव सुबह-सुबह शिकार करने, मछली पकड़ने और अपने पिता के पास लाने के लिए खेत में चला गया।
5 और रिबका ने अपने बेटे याकूब को बुलाकर उससे कहा, 'देख, मैंने तेरे पिता इसहाक को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना, 'मेरे लिए शिकार करो, और मेरे लिए स्वादिष्ट खाना बनाओ, और उसे मेरे पास ले आओ।
6 मैं मरने से पहले प्रभु के सामने खाकर तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" और अब, मेरे बेटे, मेरी बात मान जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ: अपने झुंड के पास जाओ और मेरे लिए बकरियों के दो अच्छे बच्चे ले आओ, और मैं तुम्हारे पिता के लिए उनके लिए स्वादिष्ट मांस बनाऊँगा, जैसा उन्हें पसंद है, और तुम उसे अपने पिता के पास ले आना ताकि वह मरने से पहले प्रभु के सामने खाकर तुम्हें आशीर्वाद दें, और तुम्हें आशीर्वाद मिले।'
7 और याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा: 'माँ, मैं अपने पिता को कुछ भी खाने से नहीं रोकूँगा, जो उन्हें पसंद हो: बस मुझे डर

है, मेरी माँ, कि वह मेरी आवाज़ पहचान लेंगे और मुझे छूना चाहेंगे।

8 और तुम जानते हो कि मैं चिकना हूँ, और मेरा भाई एसाव बालों वाला है, और मैं उसकी आँखों के सामने एक बुरा काम करने वाला दिखूँगा, और वह काम करूँगा जिसकी उसने मुझे आज्ञा नहीं दी, और वह मुझसे नाराज़ होगा, और मैं अपने ऊपर आशीर्वाद नहीं, बल्कि श्राप लाऊँगा।'

9 तब उसकी माँ रिबका ने उससे कहा, 'बेटा, तेरा श्राप मुझ पर हो, बस मेरी बात सुन।'

10 और याकूब ने अपनी माँ रिबका की बात मानकर दो अच्छे और मोटे बकरे के बच्चे ले आया, और उन्हें अपनी माँ के पास ले आया, और उसकी माँ ने उनके लिए ~स्वादिष्ट मांस~ बनाया, जैसा उसे पसंद था।

11 और रेबेका ने अपने बड़े बेटे एसाव की अच्छी-अच्छी चादरें लीं, जो उसके पास घर में थीं, और उनसे अपने छोटे बेटे याकूब को कपड़े पहनाए, और बकरी के बच्चों की खालें उसके हाथों और गर्दन के खुले हिस्सों पर लपेट दीं।

12 और उसने जो मांस और रोटी तैयार की थी, वह अपने बेटे याकूब के हाथ में दे दी।

13 तब याकूब अपने पिता के पास गया और कहा, 'मैं आपका बेटा हूँ: मैंने वैसा ही किया है जैसा आपने मुझसे कहा था: उठिए और बैठकर जो कुछ मैंने पकड़ा है उसे खाइए, पिता, ताकि आपकी आत्मा मुझे आशीर्वाद दे।'

14 इसहाक ने अपने बेटे से कहा, 'बेटा, तुम्हें इतनी जल्दी कैसे मिल गई?

15 तब याकूब ने कहा, 'क्योंकि <प्रभु> तुम्हारे परमेश्वर ने मुझे खोजने में मदद की।'

16 इसहाक ने उससे कहा, 'पास आओ, ताकि मैं तुम्हें टटोलकर देख सकूं, मेरे बेटे, कि तुम मेरे बेटे एसाव हो या नहीं।'

17 तब याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया, और उसे छूकर कहा, 'आवाज़ तो याकूब की है, पर हाथ एसाव के हैं।'

18 और उसने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि स्वर्ग से उसकी सोचने की शक्ति खत्म करने का इंतज़ाम हुआ था और इसहाक ने भी नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई एसाव की तरह बालों वाले थे, इसलिए उसने उसे आशीर्वाद दिया।

19 तब उसने पूछा, 'क्या तू मेरा बेटा एसाव है?' उसने कहा, 'मैं तेरा बेटा हूँ': और उसने कहा, 'मेरे पास आ, ताकि जो कुछ तूने पकड़ा है, उसे मैं खा सकूँ, मेरे बेटे, ताकि मैं तुझे आशीर्वाद दूँ।'

20 तब वह उसके पास ले आया, और उसने खाया; और वह उसके पास दाखमधु लाया, और उसने पिया।

21 तब उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, 'मेरे बेटे, पास आओ और मुझे चूमो।

22 और वह पास आया और उसे चूमा। और उसने उसके कपड़ों की खुशबू सूंघी, और उसे आशीर्वाद दिया और कहा: 'देखो, मेरे बेटे की खुशबू एक भरे हुए खेत की खुशबू जैसी है जिसे भगवान ने आशीर्वाद दिया है।

23 और यहोवा तुम्हें आसमान और धरती की ओस, और बहुत सारा अनाज और तेल दे; देश-देश के लोग तुम्हारी सेवा करें, और लोग तुम्हें दण्डवत करें।

24 अपने भाइयों पर मालिक बनो, और तुम्हारी माँ के बेटे तुम्हें झुककर प्रणाम करें; और वे सारी आशीषें जिनसे प्रभु ने मुझे और मेरे पिता अब्राहम को आशीष दी है, वे तुम्हें और तुम्हारे वंश को हमेशा मिलती रहें: जो तुम्हें शाप दे वह शापित हो, और जो तुम्हें आशीर्वाद दे वह धन्य हो।'

25 और जैसे ही इसहाक ने अपने बेटे याकूब को आशीर्वाद देना खत्म किया, और याकूब अपने पिता इसहाक के पास से चला गया, वह छिप गया और उसका भाई एसाव शिकार से वापस आ गया।

26 और उसने भी स्वादिष्ट खाना बनाया और अपने पिता के पास ले गया, और अपने पिता से कहा, 'मेरे पिता उठें और मेरे हिरन का मांस खाएं ताकि आप मुझे आशीर्वाद दें।'

27 तब उसके पिता इसहाक ने उससे पूछा, 'तू कौन है?' उसने उससे कहा, 'मैं तेरा जेठा, तेरा बेटा एसाव हूँ: मैंने वही किया है जो तूने मुझे आज्ञा दी थी।'

28 और इसहाक बहुत हैरान हुआ, और बोला: 'वह कौन है जिसने शिकार किया और पकड़ा और मेरे पास लाया, और मैंने तुम्हारे आने से पहले सब कुछ खा लिया, और उसे आशीर्वाद दिया: (और) वह और उसका सारा वंश हमेशा के लिए आशीर्वाद पाएगा।'

29 और जब एसाव ने अपने पिता इसहाक की बातें सुनीं, तो वह बहुत ज़ोर से और दुख के साथ रोया, और अपने पिता से कहा: 'पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दें।'

30 और उसने उससे कहा: 'तेरा भाई धोखे से आया, और तेरा आशीर्वाद ले गया।' और उसने कहा: 'अब मुझे पता चला कि उसका नाम याकूब क्यों रखा गया है: देखो, उसने मुझे दो बार हराया है: उसने मेरा जन्म का अधिकार छीन लिया, और अब उसने मेरा आशीर्वाद भी छीन लिया है।'

31 तब उसने कहा: 'पिताजी, क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद नहीं रखा है?' इसहाक ने जवाब दिया और एसाव से कहा: 'देख, मैंने उसे तेरा मालिक बना दिया है, और उसके सभी भाइयों को मैंने उसके नौकरों के तौर पर दे दिया है, और बहुत सारा अनाज, दाखमधु और तेल देकर उसे मज़बूत किया है: और अब मैं तेरे लिए क्या करूँ, मेरे बेटे?'

32 तब एसाव ने अपने पिता इसहाक से कहा, 'हे पिता, क्या आपके पास एक ही आशीर्वाद है? हे पिता, मुझे भी आशीर्वाद दीजिए।'

33 तब एसाव ने ऊँची आवाज़ में रोना शुरू कर दिया। इसहाक ने जवाब दिया, 'देख, तेरा घर धरती की ओस से दूर होगा, और ऊपर से आसमान की ओस से भी दूर होगा।

34 और तू अपनी तलवार से जीवित रहेगा, और अपने भाई की सेवा करेगा। और जब तू बड़ा हो जाएगा, और अपनी गर्दन से उसका जुआ उतार फेंकेगा, तो तू मौत तक पूरा पाप करेगा, और तेरा वंश स्वर्ग के नीचे से जड़ से मिटा दिया जाएगा।'

35 और एसाव ने याकूब को उसके पिता के आशीर्वाद के कारण धमकाया, और उसने मन में कहा, 'मेरे पिता के लिए अब शोक के दिन आएं, ताकि मैं अपने भाई याकूब को मार डालूं।'

अध्याय 27

1 और अपने बड़े बेटे एसाव की बातें रिबका को सपने में बताई गईं, और रिबका ने अपने छोटे बेटे याकूब को बुला भेजा,

2 और उससे कहा, 'देख, तेरा भाई एसाव तुझसे बदला लेगा और तुझे मार डालेगा।

3 इसलिए, अब मेरे बेटे, मेरी बात सुनो, और उठकर हारान में मेरे भाई लाबान के पास भाग जाओ, और उसके पास कुछ दिन रुको जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा शांत न हो जाए, और वह अपना गुस्सा तुम पर से हटा न ले, और जो कुछ तुमने किया है वह सब भूल न जाए; तब मैं तुम्हें वहां से बुला लाऊंगा।'
4 तब याकूब ने कहा, 'मैं नहीं डरता; यदि वह मुझे मारना चाहे तो मैं उसे मार डालूंगा।'
5 लेकिन उसने उससे कहा, 'मुझे एक ही दिन में अपने दोनों बेटों से दूर न होना पड़े।'
6 और याकूब ने अपनी माँ रेबेका से कहा: 'देखो, तुम जानती हो कि मेरे पिता बूढ़े हो गए हैं, और उनकी आँखें कमज़ोर होने की वजह से उन्हें दिखाई नहीं देता, और अगर मैं उन्हें छोड़ दूँ तो यह उनकी नज़र में बुरा होगा, क्योंकि मैं उन्हें छोड़कर तुम्हारे पास से चला जाऊँगा, और मेरे पिता गुस्सा होंगे, और मुझे श्राप देंगे। मैं नहीं जाऊँगा; जब वह मुझे भेजेंगे, तभी मैं जाऊँगा।'
7 तब रिबका ने याकूब से कहा, 'मैं अंदर जाकर उससे बात करूंगी, और वह तुम्हें भेज देगा।'
8 और रेबेका अंदर गई और इसहाक से कहा: 'मुझे अपनी जान से नफ़रत है, क्योंकि हेथ की दो बेटियों को एसाव ने अपनी पत्नी बना लिया है; और अगर याकूब भी इन जैसी देश की बेटियों में से किसी को अपनी पत्नी बना ले, तो मैं और क्यों जीऊंगी, क्योंकि कनान की बेटियां बुरी हैं।'
9 तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया, और उसको समझाया, और कहा, 'किसी कनान देश की लड़की से विवाह मत करना।
10 उठकर मेसोपोटामिया में अपने नाना बेथुएल के घर जाओ, और वहाँ से अपने मामा लाबान की बेटियों में से एक को ब्याह लो।
11 और सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और बढ़ाए और बढ़ाए ताकि तुम राष्ट्रों का समूह बन जाओ, और तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को मेरे पिता अब्राहम का आशीर्वाद दे, ताकि तुम अपने रहने की भूमि और उस सारी भूमि के अधिकारी हो सको जो ईश्वर ने अब्राहम को दी थी: मेरे बेटे, शांति से जाओ।'
12 और इसहाक ने याकूब को विदा किया, और वह मेसोपोटामिया में लाबान के पास गया, जो सीरिया के बेथुएल का बेटा था, और याकूब की माँ रेबेका का भाई था।
13 और जब याकूब मेसोपोटामिया जाने के लिए उठा, तो रेबेका का मन अपने बेटे के लिए दुखी हुआ, और वह रोने लगी।
14 इसहाक ने रेबेका से कहा, 'मेरी बहन, मेरे बेटे याकूब के लिए मत रो; क्योंकि वह शांति से गया है, और शांति से ही लौटेगा।
15 परमप्रधान परमेश्वर उसे सब विपत्ति से बचाएगा, और उसके संग रहेगा; क्योंकि वह जीवन भर उसका साथ न छोड़ेगा;
16 क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह जहाँ भी जाएगा, उसके काम सफल होंगे, जब तक कि वह शांति से हमारे पास वापस न आ जाए, और हम उसे शांति से न देख लें।
17 हे मेरी बहन, उसके कारण मत डर, क्योंकि वह सीधे रास्ते पर है और वह एक खरा आदमी है: और वह वफ़ादार है और नाश नहीं होगा। रोओ मत।'
18 इसहाक ने रिबका को उसके बेटे याकूब के बारे में दिलासा दिया और उसे आशीर्वाद दिया।
19 और याकूब शपथ के कुएं से हारान जाने के लिए चला, पहले साल के दूसरे हफ्ते के चालीसवें जुबली के साल में, और वह लूज पहाड़ों पर, यानी बेतेल में, इस हफ्ते के पहले महीने के नए चांद के दिन, [2115 AM] पहुंचा। वह शाम को उस जगह पहुंचा और उस रात सड़क से पश्चिम की ओर मुड़ गया: और वहीं सो गया; क्योंकि सूरज डूब चुका था।
20 और उसने उस जगह के पत्थरों में से एक पत्थर लिया और उसे पेड़ के नीचे अपने सिरहाने रख दिया, और वह अकेला सफर कर रहा था, और सो गया।
21 और उसने उस रात सपना देखा, और देखो, धरती पर एक सीढ़ी खड़ी है, और उसका ऊपरी हिस्सा स्वर्ग तक पहुँच रहा है, और देखो, प्रभु के फ़रिश्ते उस पर चढ़ते-उतरते हैं: और देखो, प्रभु उस पर खड़े हैं।
22 और उसने याकूब से कहा, 'मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर यहोवा और इसहाक का परमेश्वर हूँ; जिस ज़मीन पर तू सो रहा है, वह मैं तुझे और तेरे बाद तेरे वंश को दूँगा।
23 और तुम्हारा वंश धरती की धूल के कणों जैसा होगा, और तुम पश्चिम और पूरब, उत्तर और दक्षिण की ओर बढ़ोगे, और तुम्हारे और तुम्हारे वंश के द्वारा राष्ट्रों के सभी परिवार आशीर्वाद पाएंगे।
24 और देखो, मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, और जहां कहीं तुम जाओगे, वहां तुम्हारी रक्षा करूंगा, और तुम्हें शांति से इस देश में वापस ले आऊंगा; क्योंकि मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक मैं वह सब न कर लूं जो मैंने तुमसे कहा है।'
25 और याकूब नींद से जागा और बोला, 'सच में यह जगह भगवान का घर है, और मैं इसे नहीं जानता था।' और वह डर गया और बोला: 'यह जगह डरावनी है जो भगवान के घर के अलावा और कुछ नहीं है, और यह स्वर्ग का दरवाज़ा है।'
26 और याकूब सुबह जल्दी उठा, और उस पत्थर को जो उसने अपने सिर के नीचे रखा था, उठाकर एक निशानी के तौर पर खड़ा किया, और उसके ऊपर तेल डाला। और उसने उस जगह का नाम बेतेल रखा; लेकिन पहले उस जगह का नाम लूज़ था।
27 और याकूब ने यहोवा से यह मन्नत मानी: 'अगर यहोवा मेरे साथ रहे, और इस रास्ते में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिए रोटी और पहनने के लिए कपड़े दे, ताकि मैं शांति से अपने पिता के घर लौट आऊं, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा, और यह पत्थर जिसे मैंने इस जगह पर निशानी के तौर पर खड़ा किया है, यहोवा का घर होगा, और जो कुछ तू मुझे देगा, उसका दसवां हिस्सा मैं तुझे दूंगा, मेरे परमेश्वर।'

अध्याय 28

1 और वह अपनी यात्रा पर निकला और पूरब के देश में रेबेका के भाई लाबान के पास पहुँचा। वह उसके साथ रहा और एक हफ़्ते तक उसकी बेटी राहेल के लिए उसकी सेवा करता रहा।
2 और पहले साल के तीसरे हफ़्ते में [2122 AM] उसने उससे कहा: 'मुझे मेरी पत्नी दे दो, जिसके लिए मैंने सात साल तक तुम्हारी सेवा की है'; और लाबान ने याकूब से कहा: 'मैं तुम्हें तुम्हारी पत्नी दूँगा।'
3 तब लाबान ने दावत की, और अपनी बड़ी बेटी लिआ को लेकर याकूब को ब्याह दिया, और अपनी दासी ज़िल्पा को भी दासी करके दिया; और याकूब को पता नहीं चला, क्योंकि उसने सोचा कि वह राहेल है।
4 और वह उसके पास गया, और देखा कि वह लिआ थी; और याकूब लाबान पर गुस्सा हुआ, और उससे कहा: 'तूने मेरे साथ

ऐसा क्यों किया? क्या मैंने राहेल के लिए तेरी सेवा नहीं की, लिआ के लिए नहीं? तूने मेरे साथ गलत क्यों किया?
5 अपनी बेटी को ले जा, और मैं जाऊँगा; क्योंकि तूने मेरे साथ बुरा किया है।' क्योंकि याकूब राहेल को लिआ से ज़्यादा प्यार करता था; क्योंकि लिआ की आँखें कमज़ोर थीं, लेकिन उसका रूप बहुत सुंदर था; लेकिन राहेल की आँखें सुंदर थीं और उसका रूप बहुत सुंदर और सुंदर था।
6 और लाबान ने याकूब से कहा: 'हमारे देश में ऐसा नहीं होता कि बड़ी से पहले छोटी को दे दिया जाए।' और ऐसा करना सही नहीं है; क्योंकि स्वर्ग की तख्तियों पर ऐसा ही लिखा है, कि कोई भी अपनी छोटी बेटी को बड़ी से पहले न दे; बल्कि बड़ी बेटी पहले दे और उसके बाद छोटी को - और जो आदमी ऐसा करता है, स्वर्ग में उसके खिलाफ गुनाह लिखा जाता है, और जो कोई ऐसा करता है वह नेक नहीं है, क्योंकि यह काम प्रभु के सामने बुरा है।
7 और इस्राएलियों को हुक्म दे कि वे ऐसा न करें; वे बड़े को दिए बिना छोटे को न लें और न दें, क्योंकि यह बहुत बुरा है।
8 तब लाबान ने याकूब से कहा, 'इस त्योहार के सात दिन बीत जाने दो, और मैं तुम्हें राहेल दूंगा, कि तुम और सात साल मेरी सेवा करो, और जैसे तुमने पिछले हफ्ते किया था, वैसे ही मेरी भेड़ें चराओ।'
9 और जिस दिन लिआ के त्योहार के सात दिन बीत गए, उस दिन लाबान ने राहेल को याकूब को दे दिया, कि वह और सात साल उसकी सेवा करे, और उसने राहेल को ज़िल्पा की बहन बिल्हा को भी दासी के रूप में दे दिया।
10 और उसने राहेल के लिए और सात साल तक सेवा की, क्योंकि लिआह उसे बिना कुछ दिए दे दी गई थी।
11 और यहोवा ने लिआ की कोख खोली, और वह गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम रूबेन रखा, यह पहले वर्ष के तीसरे सप्ताह के नौवें महीने के चौदहवें दिन हुआ। [2122 AM]
12 लेकिन राहेल की कोख बंद हो गई, क्योंकि यहोवा ने देखा कि लिआ से नफ़रत की जाती है और राहेल से प्यार किया जाता है।
13 और याकूब फिर लिआ के पास गया, और वह गर्भवती हुई, और याकूब के एक और बेटे को जन्म दिया, और उसने उसका नाम शिमोन रखा, यह दसवें महीने की इक्कीसवीं तारीख को, और इस हफ़्ते के तीसरे साल में हुआ। [2124 AM]
14 और याकूब फिर लिआ के पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उसके एक तीसरा बेटा हुआ, और उसने उसका नाम लेवी रखा, यह छठे साल के पहले महीने के नए चाँद के दिन हुआ। [2127 AM]
15 और याकूब फिर उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उसके चौथे बेटे को जन्म दिया, और उसने उसका नाम यहूदा रखा, यह पहले साल के चौथे हफ़्ते के तीसरे महीने की पंद्रहवीं तारीख को हुआ। [2129 AM]
16 और इन सब बातों की वजह से राहेल को लिआ से जलन हुई, क्योंकि वह बच्चे पैदा नहीं कर रही थी, और उसने याकूब से कहा: 'मुझे बच्चे दे'; और याकूब ने कहा: 'क्या मैंने तेरे पेट का फल तुझे नहीं दिया? क्या मैंने तुझे छोड़ दिया है?'
17 और जब राहेल ने देखा कि लिआ ने याकूब से चार बेटे पैदा किए हैं, रूबेन, शिमोन, लेवी और यहूदा, तो उसने उससे कहा, 'मेरी दासी बिल्हा के पास जाओ, वह गर्भवती होगी और मेरे लिए एक बेटा पैदा करेगी।' (और उसने उसे अपनी दासी बिल्हा को पत्नी के रूप में दे दिया)।
18 और वह उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम दान रखा, यह छठे वर्ष के तीसरे सप्ताह के छठे महीने की नौवीं तिथि को हुआ। [2127 AM]
19 और याकूब दूसरी बार बिल्हा के पास गया, और वह गर्भवती हुई, और याकूब को एक और बेटा हुआ, और राहेल ने उसका नाम नप्ताली रखा, यह दूसरे साल के चौथे हफ़्ते के सातवें महीने की पाँचवीं तारीख को हुआ। [2130 AM]
20 और जब लिआ ने देखा कि वह बांझ हो गई है और बच्चे नहीं देती, तो उसे राहेल से जलन हुई, और उसने अपनी दासी ज़िल्पा को भी याकूब को पत्नी के रूप में दे दिया, और वह गर्भवती हुई, और उसके एक बेटा हुआ, और लिआ ने उसका नाम गाद रखा, यह तीसरे साल के चौथे हफ्ते के आठवें महीने की बारहवीं तारीख को हुआ। [2131 AM]
21 और वह फिर उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ, और लिआ ने उसका नाम आशेर रखा, यह पांचवें वर्ष के चौथे सप्ताह के ग्यारहवें महीने के दूसरे दिन हुआ। [2133 AM]
22 और याकूब लिआ के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम इस्साकार रखा, यह चौथे वर्ष के चौथे सप्ताह के पांचवें महीने के चौथे दिन हुआ, और उसने उसे एक धाय को दे दिया।
23 और याकूब फिर उसके पास गया, और वह गर्भवती हुई, और उसके दो बच्चे हुए, एक बेटा और एक बेटी, और उसने बेटे का नाम ज़बूलोन और बेटी का नाम दीना रखा, यह छठे साल के चौथे हफ़्ते के सातवें महीने के सातवें दिन हुआ। [2134 AM]
24 और यहोवा ने राहेल पर मेहरबानी की, और उसकी कोख खोली, और वह गर्भवती हुई, और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम यूसुफ रखा, यह छठे साल के चौथे महीने के नए चाँद के दिन, इसी चौथे हफ़्ते में हुआ। [2134 AM]
25 और जिन दिनों यूसुफ पैदा हुआ, याकूब ने लाबान से कहा, 'मुझे मेरी पत्नियाँ और बेटे दे दो, और मैं अपने पिता इसहाक के पास जाऊँ, और अपना घर बसा लूँ; क्योंकि मैंने जितने साल तेरी सेवा की है, वे तेरी दोनों बेटियों के लिए पूरे कर लिए हैं, और मैं अपने पिता के घर जाऊँगा।'
26 तब लाबान ने याकूब से कहा, 'अपनी मज़दूरी के लिए मेरे साथ रुको, और मेरे झुंड को फिर से चराओ, और अपनी मज़दूरी ले लो।'
27 और वे आपस में इस बात पर सहमत हुए कि उसे अपनी मज़दूरी में वे मेमनों और बकरियों के बच्चे देने चाहिए जो काले, चितकबरे और सफेद पैदा हुए थे, (ये) उसकी मज़दूरी होंगी।
28 और सब भेड़ों ने चित्तीदार, धब्बेदार और काले, अलग-अलग निशान वाले बच्चे पैदा किए, और फिर अपने जैसे ही मेमने पैदा किए, और जो चित्तीदार थे वे सब याकूब के थे और जो नहीं थे वे लाबान के थे।
29 और याकूब की संपत्ति बहुत बढ़ गई, और उसके पास बैल, भेड़, गधे, ऊँट, और नौकर-चाकर और दासियाँ हो गईं।
30 और लाबान और उसके बेटे याकूब से जलने लगे, और लाबान ने उसकी भेड़ें उससे छीन लीं, और उसे बुरी नज़र से देखने लगा।

अध्याय 29

1 जब राहेल ने यूसुफ को जन्म दिया, तो लाबान अपनी भेड़ों का ऊन कतरने गया; क्योंकि वे उससे तीन दिन की दूरी पर थीं।
2 और याकूब ने देखा कि लाबान अपनी भेड़ों का ऊन कतरने जा रहा है, और याकूब ने लिआ और राहेल को बुलाया, और उनसे प्यार से कहा कि वे उसके साथ कनान देश चलें।
3 क्योंकि उसने उन्हें बताया कि उसने सपने में सब कुछ देखा था, यहाँ तक कि उसने उससे जो कुछ कहा था कि वह अपने पिता के घर लौट जाए, और उन्होंने कहा: 'जहाँ भी तू जाएगा, हम तेरे साथ चलेंगे।'
4 और याकूब ने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर और अपने पिता के पिता अब्राहम के परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और वह उठा, और अपनी पत्नियों और बच्चों पर सवार होकर, और अपना सारा सामान लेकर नदी पार करके गिलाद देश में पहुँचा, और याकूब ने लाबान से अपना इरादा छिपाया और उसे नहीं बताया।
5 और सातवें साल के चौथे हफ़्ते के पहले महीने में, इक्कीसवें हफ़्ते को याकूब गिलाद की तरफ़ मुड़ा। [2135 AM] और लाबान ने उसका पीछा किया और तीसरे महीने की तेरहवीं तारीख़ को गिलाद के पहाड़ पर याकूब को पकड़ लिया।
6 और यहोवा ने उसे याकूब को नुकसान पहुँचाने नहीं दिया; क्योंकि वह रात में सपने में उसे दिखाई दिया था। और लाबान ने याकूब से बात की।
7 और उन दिनों की पंद्रहवीं तारीख को याकूब ने लाबान और उसके साथ आए सभी लोगों के लिए दावत रखी, और उस दिन याकूब ने लाबान से कसम खाई, और लाबान ने भी याकूब से, कि कोई भी बुरे इरादे से गिलाद पहाड़ पार करके दूसरी जगह न जाए।
8 और उसने वहाँ गवाही के लिए एक ढेर बनाया; इसलिए उस जगह का नाम इस ढेर के नाम पर 'गवाही का ढेर' पड़ा।
9 लेकिन पहले गिलाद की ज़मीन को रपाई लोगों की ज़मीन कहा जाता था; क्योंकि वह रपाई लोगों की ज़मीन थी, और वहाँ रपाई लोग पैदा हुए थे, जिनकी लंबाई दस, नौ, आठ से लेकर सात हाथ तक थी।
10 और उनका ठिकाना अम्मोनियों के देश से लेकर हरमोन पहाड़ तक था, और उनके राज के ठिकाने करनैम, अश्तारोत, एद्रेई, मिसूर और बीओन थे।
11 और यहोवा ने उनके बुरे कामों की वजह से उन्हें खत्म कर दिया; क्योंकि वे बहुत बुरे थे, और एमोरी लोग उनकी जगह रहने लगे, जो बुरे और पापी थे, और आज कोई भी ऐसा देश नहीं है जिसने उनके सारे पाप पूरे किए हों, और वे धरती पर ज़्यादा दिन नहीं जी पाते।
12 और याकूब ने लाबान को विदा किया, और वह मेसोपोटामिया, जो पूरब का देश है, चला गया, और याकूब गिलाद देश में लौट आया।
13 और वह नौवें महीने के ग्यारहवें दिन, जबोक नदी पार कर गया। उसी दिन उसका भाई एसाव उसके पास आया, और उससे सुलह करके सेईर देश चला गया, लेकिन याकूब तंबुओं में रहने लगा।
14 और इस जयंती के पांचवें सप्ताह के पहले वर्ष में [2136 AM] वह यरदन पार कर गया, और यरदन के पार रहने लगा, और उसने ढेर के समुद्र से लेकर बेतशान, और दोतान और अक्रब्बीम के जंगल तक अपनी भेड़-बकरियां चराईं।
15 और उसने अपने पिता इसहाक के लिए अपनी सारी संपत्ति, कपड़े, खाना, मांस, पानी, दूध, मक्खन, पनीर और घाटी के कुछ खजूर भेजे।
16 और उसकी माँ रेबेका भी साल में चार बार, महीनों के समय के बीच, हल चलाने और कटाई के बीच, और पतझड़ और बारिश (मौसम) के बीच और सर्दी और बसंत के बीच, अब्राहम के टावर पर जाती थी।
17 क्योंकि इसहाक शपथ के कुएं से लौटकर अपने पिता अब्राहम के टावर पर गया था, और वह अपने बेटे एसाव से अलग वहीं रहने लगा।
18 क्योंकि जिन दिनों याकूब मेसोपोटामिया गया, एसाव ने इश्माएल की बेटी महलत से शादी कर ली, और अपने पिता और अपनी पत्नियों के सारे झुंड इकट्ठा करके सेईर पहाड़ पर जाकर रहने लगा, और अपने पिता इसहाक को शपथ के कुएं पर अकेला छोड़ दिया।
19 और इसहाक शपथ के कुएं से ऊपर चला गया और हेब्रोन के पहाड़ों पर अपने पिता अब्राहम के टॉवर में रहने लगा।
20 और याकूब ने अपने पिता और माता के लिए जो कुछ भी समय-समय पर भेजा था, जो कुछ भी उन्हें चाहिए था, वह सब वहाँ भेजा, और उन्होंने याकूब को अपने पूरे दिल और पूरी आत्मा से आशीर्वाद दिया।

अध्याय 30

1 और पहले वर्ष के छठे सप्ताह के चौथे महीने में वह शांतिपूर्वक शकेम के पूर्व में शालेम तक गया।
2 और वहाँ वे याकूब की बेटी दीना को उस देश के राजकुमार हिव्वी हामोर के बेटे शेकेम के घर ले गए, और उसने उसके साथ सोकर उसे अशुद्ध किया; और वह एक छोटी लड़की थी, बारह साल की।
3 और उसने अपने पिता और उसके भाइयों से विनती की कि वह उसे पत्नी के रूप में दे दी जाए। और याकूब और उसके बेटे शेकेम के आदमियों से बहुत नाराज़ हुए; क्योंकि उन्होंने उनकी बहन दीना को अपवित्र किया था, और उनसे बुरी नीयत से बात की थी और उनके साथ धोखा किया था और उन्हें बहकाया था।
4 और शिमोन और लेवी अचानक शेकेम पहुँचे और शेकेम के सभी आदमियों को सज़ा दी, और जितने भी आदमी उन्हें वहाँ मिले, उन्हें मार डाला, और एक भी आदमी को नहीं छोड़ा: उन्होंने सबको तकलीफ़ में मार डाला क्योंकि उन्होंने उनकी बहन दीना का अपमान किया था।
5 और अब से ऐसा दोबारा न हो कि इस्राएल की कोई बेटी अपवित्र हो; क्योंकि स्वर्ग में उनके खिलाफ़ सज़ा तय हो गई है कि वे तलवार से शकेम के सभी लोगों को खत्म कर दें, क्योंकि उन्होंने इस्राएल को शर्मिंदा किया था।
6 और यहोवा ने उन्हें याकूब के बेटों के हाथों में सौंप दिया ताकि वे उन्हें तलवार से खत्म कर दें और उन पर सज़ा दें, और ऐसा फिर कभी न हो कि इस्राएल में किसी कुंवारी लड़की को अपवित्र किया जाए।
7 और अगर इस्राएल में कोई आदमी अपनी बेटी या बहन को किसी ऐसे आदमी को देना चाहे जो गैर-यहूदी वंश का हो, तो

उसे ज़रूर मार दिया जाएगा, और वे उसे पत्थर मारेंगे; क्योंकि उसने इस्राएल में शर्म की बात की है; और वे उस औरत को आग में जला देंगे, क्योंकि उसने अपने पिता के घराने का नाम बदनाम किया है, और उसे इस्राएल से निकाल दिया जाएगा।
8 और इस्राएल में कोई व्यभिचारिणी और कोई अशुद्धता पृथ्वी की पीढ़ियों तक न पाई जाए; क्योंकि इस्राएल यहोवा के लिए पवित्र है, और हर आदमी जिसने उसे अशुद्ध किया है, वह ज़रूर मरेगा: वे उसे पत्थरों से मार डालेंगे।
9 क्योंकि स्वर्ग की तख्तियों पर इस्राएल के सभी वंशों के लिए यह नियम लिखा और ठहराया गया है: जो कोई इसे अपवित्र करेगा, वह ज़रूर मरेगा, और उसे पत्थरों से मार डाला जाएगा।
10 और इस कानून में न तो दिनों की कोई सीमा है, न कोई माफ़ी, न ही कोई प्रायश्चित: बल्कि जो आदमी अपनी बेटी को अपवित्र करता है, उसे पूरे इस्राएल में से जड़ से उखाड़ दिया जाएगा, क्योंकि उसने अपने वंश में से मोलोक को दिया है, और अपवित्र काम करके उसे अपवित्र कर दिया है।
11 और हे मूसा, तू इस्राएल के बच्चों को आज्ञा दे और उन्हें समझा कि वे अपनी बेटियों को गैर-यहूदियों को न दें, और न ही अपने बेटों के लिए गैर-यहूदियों की बेटियों में से कोई लें, क्योंकि यह यहोवा के सामने घिनौना है।
12 इसलिए मैंने तुम्हारे लिए कानून की बातों में शकेम के लोगों के सारे काम लिखे हैं, जो उन्होंने दीना के खिलाफ किए थे, और याकूब के बेटों ने कैसे कहा था, 'हम अपनी बेटी का ब्याह ऐसे आदमी से नहीं करेंगे जिसका खतना न हुआ हो; क्योंकि यह हमारे लिए बदनामी की बात थी।'
13 और यह इस्राएल के लिए, और जो जीवित हैं, और जो अन्यजातियों की बेटियों को ले जाते हैं, उनके लिए भी बदनामी की बात है; क्योंकि यह इस्राएल के लिए अशुद्ध और घिनौना है।
14 और अगर इस्राएल की पत्नी गैर-यहूदी लड़कियों में से हो, या उसने अपनी बेटियों में से किसी को गैर-यहूदी आदमी को दे दिया हो, तो वह इस अशुद्धता से बचा नहीं रहेगा।
15 क्योंकि उस पर मुसीबत पर मुसीबत आएगी, और श्राप पर श्राप आएगा, और हर तरह का इंसाफ़, मुसीबत और श्राप उस पर आएगा: अगर वह ऐसा करे, या उन लोगों से अपनी आँखें फेर ले जो गंदगी करते हैं, या जो प्रभु के पवित्र स्थान को अपवित्र करते हैं, या जो उसके पवित्र नाम को अपवित्र करते हैं, (तो) पूरे देश को एक साथ उस आदमी की सारी गंदगी और अपवित्रता के लिए सज़ा दी जाएगी।
16 और कोई किसी का पक्ष नहीं लेगा [और न ही किसी का लिहाज़ करेगा] और न ही उसके हाथ से फल, भेंट, होम-बलि और चर्बी, न ही मीठी खुशबू, जिसे कोई स्वीकार करे: और इस्राएल में हर उस आदमी या औरत के साथ ऐसा ही होगा जो पवित्र जगह को अपवित्र करता है।
17 इसी वजह से मैंने तुम्हें हुक्म दिया है, 'इस्राएल के सामने यह गवाही दो: देखो कि शकेम के लोगों और उनके बेटों का क्या हाल हुआ: कैसे उन्हें याकूब के दो बेटों के हाथों सौंप दिया गया, और उन्होंने उन्हें तकलीफ़ देकर मार डाला, और यह उनके लिए नेकी गिना गया, और यह उनके लिए नेकी लिखा गया है।
18 और लेवी के वंश को याजकपद के लिए और लेवीय होने के लिए चुना गया, ताकि वे हमारी तरह लगातार प्रभु के सामने सेवा करते रहें, और लेवी और उसके बेटे हमेशा के लिए धन्य रहें; क्योंकि वह उन सभी लोगों पर नेकी, न्याय और बदला लेने के लिए जोशीला था जो इस्राएल के खिलाफ उठे थे।
19 और इसलिए उन्होंने स्वर्ग की पट्टियों पर उसके पक्ष में गवाही के तौर पर सभी के परमेश्वर के सामने आशीर्वाद और धार्मिकता लिखी:
20 और हम उस नेकी को याद करते हैं जो उस आदमी ने अपनी ज़िंदगी में, साल के हर समय पूरी की; जब तक कि हज़ार पीढ़ियों तक वे इसे लिखते रहेंगे, और यह उसे और उसके बाद उसके वंश को मिलेगा, और वह स्वर्ग की तख्तियों पर एक दोस्त और नेक आदमी के तौर पर लिखा गया है।
21 यह सारा ब्यौरा मैंने तुम्हारे लिए लिखा है, और तुम्हें इस्राएल के बच्चों से यह कहने का हुक्म दिया है कि वे पाप न करें, न ही नियमों को तोड़ें, और न ही उस वादे को तोड़ें जो उनके लिए तय किया गया है, बल्कि वे उसे पूरा करें और दोस्त के तौर पर लिखे जाएं।
22 लेकिन अगर वे गुनाह करते हैं और हर तरह से गंदा काम करते हैं, तो उनका नाम आसमान की तख्तियों पर दुश्मनों के तौर पर लिखा जाएगा, और उन्हें जीवन की किताब से मिटा दिया जाएगा, और उनका नाम उन लोगों की किताब में लिखा जाएगा जो खत्म हो जाएंगे और उन लोगों के साथ जो धरती से जड़ से उखाड़ दिए जाएंगे।
23 और जिस दिन याकूब के बेटों ने शेकेम को मारा, उस दिन स्वर्ग में उनके पक्ष में एक लिखावट लिखी गई कि उन्होंने नेकी, सच्चाई और पापियों से बदला लिया है, और यह आशीर्वाद के लिए लिखा गया था।
24 और वे अपनी बहन दीना को शेकेम के घर से ले आए, और शेकेम में जो कुछ था, सब कुछ, उनकी भेड़ें, बैल, गधे, और उनका सारा माल, और उनके सारे झुंड, सब कुछ बंदी बनाकर अपने पिता याकूब के पास ले आए।
25 और उसने उन्हें डांटा क्योंकि उन्होंने शहर को तलवार से मार डाला था, क्योंकि वह उस देश में रहने वाले कनानी और परिज्जी लोगों से डरता था।
26 और यहोवा का डर शेकेम के आस-पास के सभी शहरों पर छा गया, और वे याकूब के बेटों का पीछा करने के लिए नहीं उठे; क्योंकि उन पर डर छा गया था।

अध्याय 31

1 और महीने के नए चाँद को याकूब ने अपने घर के सब लोगों से कहा, 'खुद को साफ़ करो और अपने कपड़े बदलो, और आओ हम उठकर बेतेल चलें, जहाँ मैंने उससे मन्नत मानी थी, उस दिन जब मैं अपने भाई एसाव के सामने से भागा था, क्योंकि वह मेरे साथ रहा है और मुझे शांति से इस देश में लाया है, और तुम अपने बीच के अजीब देवताओं को दूर कर दो।'
2 और उन्होंने अजीब देवताओं को, और जो उनके कानों और गले में था, उसे छोड़ दिया और जो मूर्तियाँ राहेल ने अपने पिता लाबान से चुराई थीं, वे सब उसने याकूब को दे दीं। और उसने उन्हें जलाकर, तोड़कर, नष्ट करके, शेकेम देश में एक ओक के पेड़ के नीचे छिपा दिया।
3 और वह सातवें महीने के नए चाँद को बेतेल गया। और उसने उस जगह पर एक वेदी बनाई जहाँ वह सोया था, और वहाँ एक

खंभा खड़ा किया, और अपने पिता इसहाक को और अपनी माँ रेबेका को अपने बलिदान के लिए आने के लिए कहा।
4 इसहाक ने कहा, 'मेरे बेटे याकूब को आने दो, और मरने से पहले मुझे उसे देखने दो।'
5 और याकूब अपने पिता इसहाक और अपनी माँ रिबका के पास, अपने पिता अब्राहम के घर गया, और अपने दो बेटों, लेवी और यहूदा को साथ लेकर अपने पिता इसहाक और अपनी माँ रिबका के पास आया।
6 और रिबका टावर से निकलकर उसके सामने आई ताकि याकूब को चूमे और गले लगाए; क्योंकि जब उसने सुना, 'देखो याकूब तेरा बेटा आ गया है' तो उसकी जान में जान आई थी; और उसने उसे चूमा।
7 और उसने उसके दोनों बेटों को देखा, और उन्हें पहचान लिया, और उससे कहा: 'क्या ये तुम्हारे बेटे हैं, मेरे बेटे?' और उसने उन्हें गले लगाया और चूमा, और उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा: 'तुम्हारे ज़रिए अब्राहम का वंश मशहूर होगा, और तुम धरती पर आशीर्वाद साबित होगे।'
8 और याकूब अपने पिता इसहाक के पास उस कमरे में गया जहाँ वह लेटा था, और उसके दोनों बेटे भी उसके साथ थे, और उसने अपने पिता का हाथ पकड़ा, और झुककर उसे चूमा, और इसहाक अपने बेटे याकूब के गले से लिपट गया, और उसके गले से लिपटकर रोने लगा।
9 और इसहाक की आंखों से अंधेरा हट गया, और उसने याकूब के दोनों बेटों, लेवी और यहूदा को देखा, और कहा: 'क्या ये तुम्हारे बेटे हैं, मेरे बेटे? क्योंकि वे तुम्हारे जैसे हैं।'
10 और उसने उससे कहा कि वे सचमुच मेरे बेटे हैं: 'और तुमने सच में देखा है कि वे सचमुच मेरे बेटे हैं।'
11 और वे उसके पास आए, और उसने मुड़कर उन्हें चूमा और दोनों को गले लगाया।
12 और भविष्यवाणी की आत्मा उसके मुंह में उतरी, और उसने लेवी को अपने दाहिने हाथ से और यहूदा को अपने बाएं हाथ से लिया।
13 और वह सबसे पहले लेवी की ओर मुड़ा, और उसे आशीर्वाद देना शुरू किया, और उससे कहा: सबका परमेश्वर, सब युगों का प्रभु, तुझे और तेरे बच्चों को सब युगों तक आशीर्वाद दे।
14 और प्रभु तुम्हें और तुम्हारे वंश को महानता और बड़ी शान दे, और तुम्हें और तुम्हारे वंश को, सभी इंसानों में से, अपने पास आने दे ताकि वे उसके पवित्र स्थान में उपस्थिति के स्वर्गदूतों और पवित्र लोगों के रूप में सेवा करें। (यहां तक कि) उनके जैसे ही, तुम्हारे बेटों का वंश भी महिमा, महानता और पवित्रता के लिए होगा, और वह उन्हें हमेशा के लिए महान बनाए।
15 और वे याकूब के बेटों के सभी वंश के जज, हाकिम और सरदार होंगे; वे सही तरीके से प्रभु का वचन बोलेंगे, और वे उसके सभी फैसलों का सही तरीके से फैसला करेंगे। और वे याकूब को मेरे रास्ते और इस्राएल को मेरे रास्ते बताएंगे। प्रभु का आशीर्वाद उनके मुंह में दिया जाएगा ताकि प्यारे के सभी वंश को आशीर्वाद मिले।
16 तेरी माँ ने तेरा नाम लेवी रखा है, और उसने तेरा नाम सही रखा है; तू यहोवा से जुड़ जाएगा और याकूब के सभी बेटों का साथी बन जाएगा; उसकी मेज़ तेरी हो, और तू और तेरे बेटे उसमें से खाएँ; और तेरी मेज़ पीढ़ी-दर-पीढ़ी भरी रहे, और तेरा खाना हमेशा तक कम न हो।
17 और जो तुझसे नफ़रत करते हैं, वे सब तेरे सामने गिर पड़ें, और तेरे सब दुश्मन जड़ से उखाड़कर नाश हो जाएं; और जो तुझे आशीर्वाद दे, वह धन्य हो, और जो देश तुझे शाप दे, वह शापित हो।'
18 और यहूदा से उसने कहा: 'प्रभु तुम्हें ताकत और शक्ति दे ताकि तुम उन सभी को कुचल सको जो तुमसे नफरत करते हैं; तुम और तुम्हारे बेटों में से एक, याकूब के बेटों पर राज करेंगे; तुम्हारा नाम और तुम्हारे बेटों का नाम हर देश और इलाके में फैलेगा। तब गैर-यहूदी तुम्हारे सामने डरेंगे, और सभी देश कांप उठेंगे।
19 याकूब की मदद तुझमें होगी, और इस्राएल की मुक्ति तुझमें ही मिलेगी।
20 और जब तुम अपनी नेकी की शान की गद्दी पर बैठोगे, तो तुम्हारे प्यारे बेटों की सारी औलाद को बड़ी शांति मिलेगी; जो तुम्हें आशीर्वाद देगा, वह धन्य होगा, और जो तुमसे नफ़रत करते हैं, तुम्हें दुख देते हैं, और तुम्हें कोसते हैं, वे सब धरती से जड़ से उखाड़ दिए जाएँगे, और नाश हो जाएँगे और श्रापित हो जाएँगे।'
21 और उसने मुड़कर उसे फिर चूमा और गले लगाया, और बहुत खुश हुआ; क्योंकि उसने अपने बेटे याकूब के बेटों को सच में देखा था।
22 और वह उसके पैरों के बीच से निकला, और झुककर उसे प्रणाम किया, और उसने उन्हें आशीर्वाद दिया, और उस रात अपने पिता इसहाक के साथ वहीं विश्राम किया, और उन्होंने आनन्द से खाया और पिया।
23 और उसने याकूब के दोनों बेटों को सुला दिया, एक को उसके दाहिने हाथ और दूसरे को उसके बाएं हाथ, और यह उसके लिए नेकी गिना गया।
24 और याकूब ने रात में अपने पिता को सब कुछ बताया, कि कैसे यहोवा ने उस पर बड़ी दया की है, और कैसे उसने उसके सभी कामों में उसे सफलता दी है, और उसे सभी बुराइयों से बचाया है।
25 और इसहाक ने अपने पिता अब्राहम के परमेश्वर को धन्यवाद दिया, जिसने अपने सेवक इसहाक के बेटों से अपनी दया और नेकी नहीं हटाई थी।
26 और सुबह याकूब ने अपने पिता इसहाक को बताया कि उसने यहोवा से क्या मन्नत मानी है, और उसने क्या दर्शन देखा है, और यह भी कि उसने एक वेदी बना ली है, और जैसा उसने मन्नत मानी थी, यहोवा के सामने बलि चढ़ाने के लिए सब कुछ तैयार है, और वह उसे गधे पर चढ़ाने आया है।
27 तब इसहाक ने अपने बेटे याकूब से कहा, 'मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता; क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और रास्ता नहीं सह सकता; मेरे बेटे, शांति से जाओ; क्योंकि मैं आज एक सौ पैंसठ साल का हूँ; मैं अब यात्रा नहीं कर सकता; अपनी माँ को गधे पर बिठाकर अपने साथ जाने दो।
28 और मैं जानता हूँ, मेरे बेटे, कि तू मेरे लिए आया है, और आज का दिन धन्य हो जिस दिन तूने मुझे जीवित देखा है, और मैंने भी तुझे देखा है, मेरे बेटे।
29 तू कामयाब हो और जो मन्नत तूने मानी है, उसे पूरा कर; और अपनी मन्नत मत टाल; क्योंकि तुझे अपनी मन्नत के बारे में हिसाब देना होगा; इसलिए अब उसे जल्दी से पूरा कर, और जिसने सब कुछ बनाया है, जिससे तूने मन्नत मानी है, वह खुश हो।'

30 तब उसने रिबका से कहा, 'अपने बेटे याकूब के साथ जाओ'; और रिबका अपने बेटे याकूब के साथ चली गई, और दबोरा उसके साथ चली गई, और वे बेतेल पहुँचे।
31 और याकूब को वह प्रार्थना याद आई जिससे उसके पिता ने उसे और उसके दोनों बेटों, लेवी और यहूदा को आशीर्वाद दिया था, और वह खुश हुआ और अपने पूर्वजों, अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर को धन्यवाद दिया।
32 और उसने कहा: 'अब मैं जानता हूँ कि मुझे और मेरे बेटों को भी, सबके परमेश्वर के सामने हमेशा की उम्मीद है'; और ऐसा ही उन दोनों के लिए तय किया गया है; और उन्होंने इसे स्वर्ग की पट्टियों पर एक हमेशा की गवाही के तौर पर लिखा है कि कैसे इसहाक ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

अध्याय 32

1 और वह उस रात बेतेल में रहा, और लेवी ने सपना देखा कि उन्होंने उसे और उसके बेटों को हमेशा के लिए परमप्रधान परमेश्वर का पुजारी बना दिया है; और वह अपनी नींद से जागा और यहोवा को धन्यवाद दिया।
2 और याकूब इस महीने की चौदह तारीख को सुबह जल्दी उठा, और उसने अपने साथ जो कुछ भी लाया था, उसका दसवां हिस्सा दिया, क्या आदमी, क्या जानवर, क्या सोना, क्या बर्तन, क्या कपड़ा, हाँ, उसने सबका दसवां हिस्सा दिया।
3 और उन्हीं दिनों राहेल अपने बेटे बिन्यामीन से प्रेग्नेंट हुई। और याकूब ने अपने बेटों को अपने से ऊपर तक गिना और लेवी यहोवा के हिस्से में चला गया, और उसके पिता ने उसे याजक के कपड़े पहनाए और उसके हाथ भर दिए।
4 और इस महीने की पंद्रह तारीख को, वह वेदी पर चौदह बैल, अट्ठाईस मेढ़े, उन्तालीस भेड़ें, सात मेमने और इक्कीस बकरे बलि की वेदी पर होम-बलि के तौर पर चढ़ाए, जो परमेश्वर के सामने मीठी खुशबू के लिए बहुत अच्छे थे।
5 यह उसकी भेंट थी, क्योंकि उसने मन्नत मानी थी कि वह उनके फल-बलि और अर्घ के साथ दसवाँ हिस्सा देगा।
6 और जब आग ने उसे भस्म कर दिया, तो उसने आग पर धूप जलाया, और धन्यवाद-बलि के लिए दो बैल, चार मेढ़े, चार भेड़ें, चार बकरे, एक-एक साल की दो भेड़ें, और बकरियों के दो बच्चे चढ़ाए; और ऐसा उसने सात दिनों तक हर दिन किया।
7 और वह और उसके सभी बेटे और उसके आदमी सात दिनों तक खुशी-खुशी वहाँ खाते रहे और यहोवा का धन्यवाद करते रहे, जिसने उसे उसकी सभी मुश्किलों से बचाया था और उसकी मन्नत पूरी की थी।
8 और उसने सभी शुद्ध जानवरों का दसवां हिस्सा दिया और होमबलि चढ़ाया, लेकिन अशुद्ध जानवर उसने अपने बेटे लेवी को नहीं दिए, बल्कि उसने सभी लोगों की जान उसे दे दी।
9 और लेवी ने अपने दस भाइयों से बढ़कर अपने पिता याकूब के सामने बेथेल में पुजारी का काम किया, और वह वहाँ पुजारी था, और याकूब ने अपनी मन्नत मानी: इस तरह उसने दसवां हिस्सा फिर से यहोवा को दिया और उसे पवित्र किया, और वह उसके लिए पवित्र हो गया।
10 और इसी वजह से स्वर्ग की तख्तियों पर यह नियम लिखा है कि हर साल दसवाँ हिस्सा प्रभु के सामने उस जगह पर खाया जाए जहाँ उसका नाम रहने के लिए चुना गया है, और इस नियम के लिए हमेशा दिनों की कोई सीमा नहीं है।
11 यह नियम इसलिए लिखा गया है कि हर साल दूसरा दसवाँ हिस्सा प्रभु के सामने उस जगह पर खाया जाए जहाँ वह चुना गया है, और इस साल से लेकर अगले साल तक उसमें से कुछ भी बाकी न रहे।
12 क्योंकि बीज तो अपने-अपने साल में तब तक खाया जाएगा जब तक साल भर के बीज इकट्ठा करने के दिन न आ जाएं, और दाखमधु दाखमधु के दिनों तक, और तेल अपने मौसम के दिनों तक खाया जाएगा।
13 और जो कुछ बचा हुआ और पुराना हो जाए, उसे गंदा समझो; उसे आग में जला दो, क्योंकि वह अशुद्ध है।
14 और वे इसे पवित्र जगह में एक साथ खाएं, और इसे पुराना न होने दें।
15 और बैलों और भेड़ों का सारा दशांश यहोवा के लिए पवित्र होगा, और उसके पुजारियों का होगा, जिसे वे साल-दर-साल उसके सामने खाएंगे; क्योंकि दशांश के बारे में स्वर्ग की पट्टियों पर यही लिखा और लिखा है।
16 और अगली रात, इसी महीने के बाईसवें दिन, याकूब ने उस जगह को बनाने, और आँगन को दीवार से घेरने, और उसे अपने और अपने बाद आने वाले बच्चों के लिए हमेशा के लिए पवित्र करने का फैसला किया।
17 और प्रभु ने रात में उसे दर्शन दिया और उसे आशीर्वाद दिया और उससे कहा: 'तेरा नाम याकूब नहीं, बल्कि इस्राएल रखा जाएगा।'
18 और उसने उससे फिर कहा: 'मैं वह प्रभु हूँ जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है, और मैं तुम्हें बढ़ाऊँगा और बहुत ज़्यादा बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे वंश से राजा निकलेंगे, और वे हर जगह न्याय करेंगे जहाँ भी इंसानों के बेटों के पैर पड़े हैं।
19 और मैं तेरे वंश को आसमान के नीचे की सारी धरती दूंगा, और वे सब देशों का उनकी इच्छा के अनुसार न्याय करेंगे, और उसके बाद वे सारी धरती पर कब्ज़ा कर लेंगे और हमेशा के लिए उसके वारिस बन जाएंगे।'
20 जब वह उससे बात कर चुका, तो वह उसके पास से ऊपर चला गया। और याकूब ने तब तक देखा जब तक वह स्वर्ग में नहीं चढ़ गया।
21 और उसने रात में एक सपना देखा, और देखो, एक फ़रिश्ता हाथों में सात तख्तियाँ लिए स्वर्ग से उतरा, और उसने उन्हें याकूब को दे दिया, और उसने उन्हें पढ़ा और वह सब जान लिया जो उसमें लिखा था, जो हर ज़माने में उसके और उसके बेटों के साथ होगा।
22 और उसने उसे वह सब दिखाया जो तख्तियों पर लिखा था, और उससे कहा: 'यह जगह मत बनाओ, और इसे हमेशा के लिए पवित्र जगह मत बनाओ, और यहाँ मत रहो; क्योंकि यह वह जगह नहीं है। अपने पिता अब्राहम के घर जाओ और अपने पिता इसहाक के साथ तब तक रहो जब तक तुम्हारे पिता की मौत न हो जाए।
23 क्योंकि मिस्र में तुम शांति से मरोगे, और इसी देश में तुम्हें तुम्हारे पुरखों की कब्र में, अब्राहम और इसहाक के साथ, सम्मान के साथ दफ़नाया जाएगा।

24 डरो मत, क्योंकि जैसा तुमने देखा और पढ़ा है, वैसा ही सब कुछ होगा; और जैसा तुमने देखा और पढ़ा है, वैसा ही सब कुछ लिख लो।'
25 तब याकूब ने कहा, 'हे प्रभु, मैंने जो कुछ पढ़ा और देखा है, वह सब मुझे कैसे याद रहे?' और उसने उससे कहा, 'मैं सब बातें तुझे याद दिलाऊंगा।'
26 और वह उसके पास से ऊपर चला गया, और अपनी नींद से जागा, और उसे वह सब कुछ याद आया जो उसने पढ़ा और देखा था, और उसने वे सब बातें लिख लीं जो उसने पढ़ी और देखी थीं।
27 और उसने वहाँ एक और दिन मनाया, और उसमें भी उसने उन सब बलिदानों के अनुसार बलिदान चढ़ाए जो उसने पहले के दिनों में चढ़ाए थे, और उसका नाम 'जोड़' रखा, क्योंकि यह दिन जोड़ा गया था और पहले के दिनों को उसने 'पर्व' कहा।
28 और इस तरह यह ज़ाहिर हुआ कि ऐसा होना चाहिए, और यह आसमान की पट्टियों पर लिखा है: इसलिए उसे बताया गया कि उसे इसे मनाना चाहिए, और इसे त्योहार के सात दिनों में जोड़ना चाहिए।
29 और इसका नाम 'जोड़' इसलिए रखा गया क्योंकि यह साल के दिनों की गिनती के हिसाब से त्योहारों के दिनों में लिखा जाता था।
30 और इसी महीने की तेईस तारीख की रात को, डेबोरा रेबेका की नर्स मर गई, और उसे शहर के नीचे नदी के किनारे ओक के पेड़ के नीचे दफ़ना दिया गया, और उसने उस जगह का नाम 'डेबोरा की नदी' और ओक का नाम 'डेबोरा के दुख का ओक' रखा।
31 तब रिबका अपने घर जाकर उसके पिता इसहाक के पास लौट आई; और याकूब ने उसके हाथ से मेढ़े, भेड़ें और बकरे भेजे, कि वह उसके पिता के लिए वैसा खाना बनाए जैसा वह चाहता था।
32 और वह अपनी माँ के पीछे-पीछे चलता हुआ कबरतान नाम की जगह पर पहुँचा, और वहीं रहने लगा।
33 और राहेल ने रात में एक बेटे को जन्म दिया, और उसका नाम 'मेरे दुख का बेटा' रखा; क्योंकि उसे जन्म देते समय तकलीफ़ हुई थी: लेकिन उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा, इस जुबली के छठे हफ़्ते के पहले, आठवें महीने की ग्यारहवीं तारीख़ को। [2143 AM]
34 और राहेल वहीं मर गई और उसे एप्रात नाम देश में दफ़नाया गया, जो बेतलेहेम भी कहलाता है, और याकूब ने राहेल की कब्र पर, उसकी कब्र के ऊपर वाली सड़क पर एक खंभा बनवाया।

अध्याय 33

1 और याकूब मगदलाद्रा के दक्षिण में जाकर रहने लगा। और वह दसवें महीने के नए चाँद को अपने पिता इसहाक के पास गया, वह और उसकी पत्नी लिआह।
2 और रूबेन ने राहेल की दासी बिल्हा को, जो उसके पिता की रखैल थी, एक गुप्त स्थान में जल में नहाते हुए देखा, और वह उससे प्रेम करने लगा।
3 और वह रात में छिप गया, और बिल्हा के घर में घुस गया, और उसे अपने घर में बिस्तर पर अकेली सोती हुई पाया।
4 और वह उसके साथ लेटा, और वह जाग गई और उसने देखा, और देखो रूबेन उसके साथ बिस्तर पर लेटा हुआ है, और उसने अपने ओढ़ने का किनारा खोला और उसे पकड़ लिया, और चिल्लाई, और पाया कि यह रूबेन है।
5 और वह उसके कारण शर्मिंदा हुई, और उसने अपना हाथ उससे छुड़ा लिया, और वह भाग गया।
6 और वह इस बात पर बहुत दुखी हुई, और यह बात किसी को नहीं बताई।
7 और जब याकूब वापस आया और उसे ढूँढ़ने लगा, तो उसने उससे कहा, 'मैं तुम्हारे लिए साफ़ नहीं हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए अशुद्ध हो गई हूँ; क्योंकि रूबेन ने मुझे अशुद्ध किया है, और रात में मेरे साथ सोया है, और मैं सो रही थी, और जब तक उसने मेरा घाघरा नहीं खोला और मेरे साथ सोया, तब तक मुझे पता नहीं चला।'
8 और याकूब रूबेन से बहुत नाराज़ हुआ, क्योंकि उसने बिल्हा के साथ सोया था, क्योंकि उसने उसके पिता का घाघरा उघाड़ा था।
9 और याकूब फिर उसके पास नहीं गया, क्योंकि रूबेन ने उसे अपवित्र कर दिया था। और जो कोई अपने पिता का वस्त्र उतारता है, उसका काम बहुत बुरा है, क्योंकि वह यहोवा के सामने घिनौना है।
10 इसी वजह से आसमान की तख्तियों पर लिखा और हुक्म दिया गया है कि कोई आदमी अपनी पिता की पत्नी के साथ सोए नहीं, और न ही अपने पिता का कपड़ा खोले, क्योंकि यह अशुद्ध है: वे ज़रूर एक साथ मरेंगे, जो आदमी अपनी पिता की पत्नी के साथ सोता है और वह औरत भी, क्योंकि उन्होंने धरती पर अशुद्धता फैलाई है।
11 और उस देश में, जिसे हमारे परमेश्वर ने अपनी जागीर के तौर पर चुना है, कुछ भी अशुद्ध नहीं रहेगा।
12 और फिर दूसरी बार लिखा है: 'शापित हो वह जो अपने पिता की पत्नी के साथ सोता है, क्योंकि उसने अपने पिता की शर्म को उजागर किया है'; और प्रभु के सभी पवित्र लोगों ने कहा 'ऐसा ही हो; ऐसा ही हो।'
13 और हे मूसा, तू इस्राएल के बच्चों को आज्ञा दे कि वे इस बात को मानें; क्योंकि इसके लिए मौत की सज़ा है; और यह अशुद्ध है, और जिसने यह किया है उसके लिए हमेशा के लिए कोई प्रायश्चित नहीं है, बल्कि उसे मौत की सज़ा दी जाए और मार डाला जाए, और पत्थरों से मारा जाए, और हमारे परमेश्वर के लोगों के बीच से जड़ से निकाल दिया जाए।
14 क्योंकि जो कोई इस्राएल में ऐसा करता है, उसे धरती पर एक दिन भी ज़िंदा रहने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि वह घिनौना और अशुद्ध है।
15 और वे यह न कहें: रूबेन को जीवन और क्षमा तब मिली जब उसने अपने पिता की रखैल के साथ संबंध बनाए थे, और उसे भी, यद्यपि उसका पति था, और उसका पति याकूब, जो उसका पिता था, अभी भी जीवित था।
16 क्योंकि उस समय तक सबके लिए नियम, न्याय और कानून पूरी तरह से ज़ाहिर नहीं हुए थे, लेकिन तुम्हारे दिनों में यह समयों और दिनों के कानून के तौर पर, और हमेशा की पीढ़ियों के लिए एक हमेशा का कानून बनकर ज़ाहिर हुआ है।
17 और इस कानून के लिए कोई दिन पूरे नहीं होते, और न ही इसके लिए कोई प्रायश्चित होता है, बल्कि उन दोनों को देश के बीच से जड़ से उखाड़ फेंकना होगा: जिस दिन उन्होंने यह किया है, उसी दिन उन्हें मार डाला जाएगा।

18 और हे मूसा, तू इसे इस्राएल के लिए लिख ले, ताकि वे इसे मानें, और इन बातों के अनुसार करें, और ऐसा पाप न करें जिससे मौत हो जाए; क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर न्यायी है, जो किसी का पक्ष नहीं लेता और न ही तोहफ़े लेता है।
19 और उन्हें करार की ये बातें बताओ, ताकि वे सुनकर उन पर ध्यान दें, और उनके बारे में सावधान रहें, और वे नाश न हो जाएं और देश से उखाड़े न जाएं; क्योंकि जो लोग धरती पर ऐसा करते हैं, वे सब हमारे परमेश्वर के सामने अशुद्धता, घिनौना काम, गंदगी और गंदगी हैं।
20 और धरती पर उनके किए गए व्यभिचार से बड़ा कोई पाप नहीं है; क्योंकि इस्राएल अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र राष्ट्र है, और विरासत का राष्ट्र है, और एक पुरोहितों और शाही राष्ट्र है और (उसकी) अपनी संपत्ति है; और पवित्र राष्ट्र के बीच ऐसी कोई अशुद्धता दिखाई नहीं देगी।
21 और छठे सप्ताह के तीसरे वर्ष में [2145 AM] याकूब और उसके सभी पुत्र गए और अब्राहम के घर में उसके पिता इसहाक और उसकी माता रिबका के पास रहने लगे।
22 और याकूब के बेटों के नाम ये थे: जेठा रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून, लिआ के बेटे; और राहेल के बेटे यूसुफ और बिन्यामीन; और बिल्हा के बेटे दान और नप्ताली; और ज़िल्पा के बेटे गाद और आशेर; और लिआ की बेटी दीना, जो याकूब की इकलौती बेटी थी।
23 और वे आए और इसहाक और रेबेका को प्रणाम किया, और जब उन्होंने उन्हें देखा तो उन्होंने याकूब और उसके सभी बेटों को आशीर्वाद दिया, और इसहाक बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसने याकूब के बेटों, अपने छोटे बेटे को देखा और उन्हें आशीर्वाद दिया।

अध्याय 34

1 और इस चवालीसवीं जयंती के इस सप्ताह के छठे वर्ष में [2148 AM] याकूब ने अपने पुत्रों को उनकी भेड़-बकरियां चराने के लिए, और अपने सेवकों को उनके साथ शकेम की चरागाहों में भेजा।
2 और एमोरियों के सातों राजा उनके खिलाफ़ इकट्ठा हुए, ताकि उन्हें मार डालें, और पेड़ों के नीचे छिपकर उनके जानवरों को लूट लें।
3 और याकूब, लेवी, यहूदा और यूसुफ अपने पिता इसहाक के साथ घर में थे; क्योंकि उसका मन बहुत दुखी था, और वे उसे छोड़ नहीं सकते थे; और बिन्यामीन सबसे छोटा था, और इस कारण अपने पिता के पास ही रहा।
4 और तफू के राजा, अरेसा के राजा, सेरागान के राजा, सेलो के राजा, गास के राजा, बेथोरोन के राजा, मानीसाकीर के राजा, और वे सब जो इन पहाड़ों में और कनान देश के जंगलों में रहते हैं, आए।
5 और उन्होंने याकूब को यह बताया: 'देखो, एमोरियों के राजाओं ने तुम्हारे बेटों को घेर लिया है, और उनके झुंड लूट लिए हैं।'
6 और वह अपने घर से निकला, वह और उसके तीन बेटे, उसके पिता के सभी नौकर और उसके अपने नौकर, और वह छह हज़ार आदमियों के साथ, जो तलवारें लिए हुए थे, उनका सामना करने गया।
7 और उसने उन्हें शकेम के चरागाहों में मार डाला, और जो भाग रहे थे उनका पीछा किया, और उन्हें तलवार से मार डाला, और उसने अरेसा, ताफू, सारेगान, सेलो, अमानी-साकीर और गागास को मार डाला, और अपने झुण्ड वापस ले लिए।
8 और उसने उन पर दबाव डाला, और उन पर कर लगाया कि वे उसे अपनी ज़मीन के पाँच फल दें, और उसने रोबेल और तमनातेरेस बनाए।
9 और वह शांति से लौट आया, और उनके साथ शांति कर ली, और वे उसके सेवक बने, उस दिन तक जब तक वह और उसके बेटे मिस्र नहीं चले गए।
10 और इसी सप्ताह के सातवें वर्ष में [2149 AM] उसने यूसुफ को अपने घर से अपने भाइयों का कुशल क्षेम जानने के लिये शेकेम देश में भेजा, और वह उन्हें दोतान देश में मिला।
11 और उन्होंने उसके साथ धोखा किया, और उसे जान से मारने की साज़िश रची, लेकिन अपना मन बदलकर, उन्होंने उसे इश्माएली व्यापारियों को बेच दिया, और वे उसे मिस्र ले आए, और उन्होंने उसे फिरौन के खोजे पोतीपर को बेच दिया, जो रसोइयों का सरदार और एलू शहर का पुजारी था।
12 और याकूब के बेटों ने एक बकरी का बच्चा मारा, और यूसुफ का कपड़ा उसके खून में डुबोकर, सातवें महीने की दसवीं तारीख को अपने पिता याकूब के पास भेज दिया।
13 और वह उस रात सारी रात शोक मनाता रहा, क्योंकि वे उसे शाम को उसके पास लाए थे, और वह उसकी मौत के शोक में पागल हो गया, और उसने कहा: 'एक बुरे जानवर ने यूसुफ को खा लिया है'; और उसके घर के सभी सदस्यों ने उस दिन उसके साथ शोक मनाया, और वे उस दिन सारे दिन उसके साथ शोक मनाते रहे।
14 तब उसके बेटे और बेटी उसे दिलासा देने के लिए उठे, लेकिन उसने अपने बेटे के लिए दिलासा लेने से मना कर दिया।
15 और उस दिन बिल्हा ने सुना कि यूसुफ मर गया है, और वह उसके लिए शोक मनाते हुए मर गई, और वह क़फ़रातफ़ में रहने लगी, और यूसुफ के मरने के बाद उसकी बेटी दीना भी मर गई।
16 और एक महीने में इस्राएल पर ये तीन मातम आए। और उन्होंने बिल्हा को राहेल की कब्र के सामने दफ़नाया, और उसकी बेटी दीना को भी वहीं दफ़नाया।
17 और उसने यूसुफ के लिए एक साल तक शोक मनाया, और रुका नहीं, क्योंकि उसने कहा, 'मुझे अपने बेटे के लिए कब्र में जाकर शोक मनाने दो।'
18 इसी वजह से इस्राएल के बच्चों के लिए यह तय किया गया है कि वे सातवें महीने की दसवीं तारीख को खुद को तकलीफ़ दें - जिस दिन यूसुफ के लिए रोने की खबर उसके पिता याकूब को मिली थी - कि वे साल में एक बार, सातवें महीने की दसवीं तारीख को एक बकरी का बच्चा जलाकर अपने पापों के लिए प्रायश्चित करें; क्योंकि उन्होंने अपने पिता के बेटे यूसुफ के लिए प्यार को ठेस पहुँचाई थी।
19 और यह दिन इसलिए तय किया गया है कि वे अपने पापों, अपनी सभी गलतियों और अपनी सभी गलतियों के लिए दुख मनाएं, ताकि वे साल में एक बार उस दिन खुद को शुद्ध कर सकें।
20 और यूसुफ के मरने के बाद, याकूब के बेटों ने अपनी-अपनी पत्नियाँ कर लीं। रूबेन की पत्नी का नाम 'आदा' था; और शिमोन की पत्नी का नाम 'अदल्बा' था, जो एक कनानी थी; और लेवी की

पत्नी का नाम मेल्का था, जो अराम की बेटियों में से थी, तेराह के बेटों के वंश से; और यहूदा की पत्नी का नाम बेतासुएल था, जो एक कनानी थी; और इस्साकार की पत्नी का नाम हिजाका था; और जबूलून की पत्नी का नाम नीमान था; और दान की पत्नी का नाम 'एग्ला' था; और नप्ताली की पत्नी का नाम मेसोपोटामिया की रासू था; और गाद की पत्नी का नाम माका था; और आशेर की पत्नी का नाम 'इयोना' था; और यूसुफ की पत्नी का नाम मिस्र की असनेत था; और बेंजामिन की पत्नी का नाम 'इजासका' था।
21 और शिमोन ने पश्चाताप किया, और अपने भाइयों के रूप में मेसोपोटामिया से दूसरी पत्नी ले ली।

अध्याय 35

1 और पहले वर्ष में पैंतालीसवीं जयंती के पहले सप्ताह में [2157 AM] रिबका ने अपने पुत्र याकूब को बुलाकर उसे अपने पिता और भाई के विषय में आज्ञा दी, कि वह जीवन भर उनका आदर करे।
2 तब याकूब ने कहा, 'मैं सब कुछ वैसा ही करूंगा जैसा तूने मुझे आज्ञा दी है; क्योंकि यह बात मेरे लिए सम्मान और बड़ाई की बात होगी, और यहोवा के सामने नेकी की बात होगी, कि मैं उनका आदर करूं।
3 और हे माँ, तू भी जानती है कि जब से मैं पैदा हुआ हूँ, तब से लेकर आज तक मेरे सारे काम और मेरे दिल में जो कुछ है, मैं हमेशा सबके बारे में अच्छा ही सोचता हूँ।
4 और जो काम तूने मुझे करने की आज्ञा दी है, उसे मैं क्यों न करूं, कि मैं अपने पिता और भाई का आदर करूं!
5 हे माँ, मुझे बताओ कि तुमने मुझमें क्या बुराई देखी है, और मैं उससे दूर हो जाऊँगा, और मुझ पर दया होगी।'
6 और उसने उससे कहा: 'मेरे बेटे, मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में तुझमें कोई गलत काम नहीं देखा, सिर्फ़ अच्छे काम देखे हैं। फिर भी मैं तुझसे सच कहती हूँ, मेरे बेटे: मैं इसी साल मर जाऊँगी, और इस साल अपनी ज़िंदगी में ज़िंदा नहीं रहूँगी; क्योंकि मैंने अपनी मौत के दिन एक सपने में देखा है कि मैं 155 साल से ज़्यादा नहीं जीऊँगी: और देखो, मैंने अपनी ज़िंदगी के सारे दिन पूरे कर लिए हैं जो मुझे जीने हैं।'
7 और याकूब अपनी माँ की बातों पर हँसा। क्योंकि उसकी माँ ने उससे कहा था कि उसे मर जाना चाहिए; और वह पूरी ताकत के साथ उसके सामने बैठी थी, और उसकी ताकत में कोई कमी नहीं थी; क्योंकि वह अंदर-बाहर जाती और देखती थी, और उसके दाँत मज़बूत थे, और ज़िंदगी भर उसे कोई बीमारी नहीं लगी थी।
8 और याकूब ने उससे कहा: 'मैं धन्य हूँ, माँ, अगर मेरे दिन तुम्हारे जीवन के दिनों के करीब आ जाएँ, और मेरी ताकत तुम्हारी ताकत की तरह मेरे साथ बनी रहे: और तुम नहीं मरोगी, क्योंकि तुम अपनी मौत के बारे में मेरे साथ मज़ाक कर रही हो।'
9 और वह इसहाक के पास गई और उससे कहा, 'मैं तुमसे एक गुज़ारिश करती हूँ: एसाव से कसम खाओ कि वह याकूब को नुकसान नहीं पहुँचाएगा, और न ही दुश्मनी से उसका पीछा करेगा; क्योंकि तुम एसाव के विचार जानते हो कि वे बचपन से ही बुरे हैं, और उसमें कोई अच्छाई नहीं है; क्योंकि वह तुम्हारी मौत के बाद उसे मार डालना चाहता है।
10 और तू जानता है कि जिस दिन से उसका भाई याकूब हारान गया, उस दिन से लेकर आज तक उसने क्या-क्या किया है: उसने पूरे दिल से हमें कैसे छोड़ दिया है, और हमारे साथ बुरा किया है; तेरे भेड़-बकरियों को उसने अपने पास रख लिया है, और तेरे सामने से तेरा सारा सामान छीन लिया है।
11 और जब हमने उससे अपनी चीज़ों के लिए विनती की और गिड़गिड़ाया, तो उसने ऐसा किया जैसे कोई हम पर दया कर रहा हो।
12 और वह तुमसे इसलिए नाराज़ है क्योंकि तुमने अपने नेक और सीधे बेटे याकूब को आशीर्वाद दिया; क्योंकि उसमें कोई बुराई नहीं, सिर्फ़ अच्छाई है, और जब से वह हारान से आया है, आज तक उसने हमसे कुछ नहीं छीना है, क्योंकि वह हमेशा हमारे लिए हर चीज़ सही समय पर लाता है, और जब हम उसके हाथों से लेते हैं और वह हमें आशीर्वाद देता है, तो वह पूरे दिल से खुश होता है, और जब से वह हारान से आया है, आज तक हमसे अलग नहीं हुआ है, और वह हमेशा हमारे साथ घर पर रहता है और हमारा आदर करता है।'
13 और इसहाक ने उससे कहा: 'मैं भी याकूब के कामों को जानता और देखता हूँ, जो हमारे साथ है, कि वह पूरे दिल से हमारा आदर करता है; लेकिन पहले मैं एसाव को याकूब से ज़्यादा प्यार करता था, क्योंकि वह जेठा था; लेकिन अब मैं याकूब को एसाव से ज़्यादा प्यार करता हूँ, क्योंकि उसने बहुत सारे बुरे काम किए हैं, और उसमें कोई नेकी नहीं है, क्योंकि उसके सारे रास्ते गलत और हिंसा वाले हैं, [और उसके आस-पास कोई नेकी नहीं है।]
14 और अब मेरा दिल उसके सब कामों की वजह से परेशान है, और न तो वह और न ही उसका वंश बचेगा, क्योंकि वे ही धरती से खत्म हो जाएंगे और आसमान के नीचे से मिटा दिए जाएंगे, क्योंकि उसने अब्राहम के परमेश्वर को छोड़ दिया है और अपनी पत्नियों और उनकी गंदगी और उनकी गलतियों के पीछे चला गया है, वह और उसके बच्चे।
15 और तू मुझसे कह कि वह कसम खाए कि वह अपने भाई याकूब को नहीं मारेगा; अगर वह कसम खा भी ले तो भी वह अपनी कसम पर कायम नहीं रहेगा, और वह अच्छा नहीं बल्कि सिर्फ़ बुरा ही करेगा।
16 लेकिन अगर वह अपने भाई याकूब को मारना चाहे, तो वह याकूब के हाथ में दे दिया जाएगा, और वह उसके हाथ से नहीं बच पाएगा, [क्योंकि वह उसके हाथ में पड़ जाएगा।]
17 और याकूब से मत डरो; क्योंकि याकूब का रक्षक महान, शक्तिशाली और सम्मानित है, और एसाव के रक्षक से ज़्यादा तारीफ़ के काबिल है।'
18 और रिबका ने एसाव को बुलाया और वह उसके पास आया, और उसने उससे कहा, 'बेटा, मुझे तुमसे एक गुज़ारिश करनी है, और वादा करो, बेटा।'
19 उसने कहा, 'मैं वह सब कुछ करूँगा जो तू मुझसे कहेगी, और मैं तेरी विनती को मना नहीं करूँगा।'
20 और उसने उससे कहा: 'मैं तुमसे गुज़ारिश करती हूँ कि जिस दिन मैं मरूँगी, तुम मुझे अपने घर ले जाना और अपनी माँ सारा के पास दफ़नाना, और तुम और याकूब एक-दूसरे से प्यार करेंगे और कोई एक-दूसरे का बुरा नहीं चाहेगा, बल्कि सिर्फ़ आपसी प्यार होगा, और (इस तरह) तुम कामयाब होगे, मेरे बेटों, और देश में इज़्ज़त पाओगे, और कोई दुश्मन तुम पर खुश नहीं होगा,

और तुम उन सभी की नज़रों में एक आशीर्वाद और दया बनोगे जो तुमसे प्यार करते हैं।'
21 और उसने कहा: 'मैं वह सब करूँगा जो तुमने मुझसे कहा है, और जिस दिन तुम मरोगे, उसी दिन मैं तुम्हें मेरी माँ सारा के पास दफ़ना दूँगा, क्योंकि तुमने चाहा था कि उसकी हड्डियाँ तुम्हारी हड्डियों के पास रहें।
22 और मैं अपने भाई याकूब से भी सब प्राणियों से ज़्यादा प्यार करूँगा; क्योंकि पूरी धरती पर मेरा कोई भाई नहीं है, सिर्फ़ वही है: और अगर मैं उससे प्यार करता हूँ, तो यह मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं है; क्योंकि वह मेरा भाई है, और हम तेरे शरीर में एक साथ बोए गए, और तेरे गर्भ से एक साथ निकले, और अगर मैं अपने भाई से प्यार नहीं करूँगा, तो किससे प्यार करूँगा?
23 और मैं खुद तुमसे विनती करता हूँ कि तुम याकूब को मेरे और मेरे बेटों के बारे में समझाओ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह ज़रूर मेरा और मेरे बेटों का राजा होगा, क्योंकि जिस दिन मेरे पिता ने उसे आशीर्वाद दिया था, उसी दिन उसने उसे बड़ा और मुझे छोटा बनाया था।
24 और मैं तुमसे कसम खाता हूँ कि मैं उससे प्यार करूँगा, और ज़िंदगी भर उसके खिलाफ बुरा नहीं चाहूँगा, बल्कि सिर्फ़ अच्छा चाहूँगा।'
25 और उसने उससे इस सब बात के बारे में कसम खाई। और उसने एसाव के सामने याकूब को बुलाया, और जो बातें उसने एसाव से कही थीं, उनके अनुसार उसे हुक्म दिया।
26 और उसने कहा: 'मैं तेरी मर्ज़ी पूरी करूँगा; मेरा यकीन कर कि मुझसे या मेरे बेटों से एसाव के खिलाफ़ कोई बुराई नहीं होगी, और मैं सिर्फ़ प्यार के अलावा किसी भी चीज़ में सबसे आगे रहूँगा।'
27 और उस रात उसने और उसके बेटों ने खाया-पिया, और वह तीन जुबली, एक हफ़्ते और एक साल की होकर उसी रात मर गई, और उसके दोनों बेटों, एसाव और याकूब ने उसे अपनी माँ सारा के पास डबल गुफा में दफ़ना दिया।

अध्याय 36

1 और इस सप्ताह के छठे वर्ष में [2162 AM] इसहाक ने अपने दोनों पुत्रों एसाव और याकूब को बुलाया, और वे उसके पास आए, और उसने उनसे कहा: 'मेरे बेटों, मैं अपने पूर्वजों के मार्ग पर जा रहा हूं, उस शाश्वत घर को जहां मेरे पूर्वज हैं।
2 इसलिए मुझे मेरे पिता अब्राहम के पास, हित्ती एप्रोन के खेत में उस दोहरी गुफा में दफ़नाना, जहाँ अब्राहम ने दफ़नाने के लिए एक कब्र खरीदी थी; उसी कब्र में जो मैंने अपने लिए खोदी है, मुझे दफ़नाना।
3 और मेरे बेटों, मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूँ कि तुम धरती पर नेकी और सच्चाई का काम करो, ताकि प्रभु तुम पर वह सब कुछ पूरा करे जो उसने अब्राहम और उसके वंश के साथ करने को कहा था।
4 और हे मेरे बेटों, अपने भाइयों, एक दूसरे से ऐसे प्यार करो जैसे कोई अपनी जान से प्यार करता है, और हर कोई अपने भाई के लिए क्या करे, इस बात का ध्यान रखे, और धरती पर एक साथ काम करे; और वे एक दूसरे से अपनी जान के समान प्यार करें।
5 और मूर्तियों के बारे में, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ और समझाता हूँ कि उन्हें ठुकरा दो, उनसे नफ़रत करो, और उनसे प्यार मत करो, क्योंकि वे उन लोगों के लिए धोखे से भरी हैं जो उनकी पूजा करते हैं और जो उनके आगे झुकते हैं।
6 मेरे बेटों, अपने पिता अब्राहम के परमेश्वर यहोवा को याद करो, और कैसे मैंने भी नेकी और खुशी से उसकी पूजा की और उसकी सेवा की, ताकि वह तुम्हें बढ़ाए और तुम्हारे वंश को आसमान के तारों की तरह बढ़ाए, और तुम्हें धरती पर नेकी के पौधे के रूप में स्थापित करे जो हमेशा के लिए सभी पीढ़ियों तक जड़ से न उखाड़ा जाएगा।
7 और अब मैं तुम्हें एक बड़ी शपथ दिलाऊंगा - क्योंकि इससे बड़ी कोई शपथ नहीं है, उस शानदार और सम्मानित और महान और शानदार और अद्भुत और शक्तिशाली नाम से, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों को एक साथ बनाया - कि तुम उससे डरोगे और उसकी पूजा करोगे।
8 और हर कोई अपने भाई से प्यार और नेकी से प्यार करेगा, और कोई भी अपने भाई के खिलाफ अब से हमेशा, ज़िंदगी भर बुरा नहीं चाहेगा, ताकि तुम अपने सभी कामों में कामयाब हो सको और बर्बाद न हो जाओ।
9 और अगर तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ बुरी साज़िश रचे, तो जान लो कि अब से जो कोई अपने भाई के खिलाफ बुरी साज़िश रचेगा, वह उसके हाथ में पड़ जाएगा, और ज़िंदा लोगों की दुनिया से मिटा दिया जाएगा, और उसका वंश आसमान के नीचे से खत्म कर दिया जाएगा।
10 लेकिन जिस दिन उथल-पुथल, बुराई, गुस्सा और क्रोध आएगा, जैसे उसने सदोम को जलाया था, वैसे ही वह उसकी ज़मीन, उसके शहर और जो कुछ उसका है, उसे जला देगा, और वह इंसानों की सज़ा की किताब से मिटा दिया जाएगा, और जीवन की किताब में नहीं, बल्कि विनाश के लिए तय की गई किताब में लिखा जाएगा, और वह हमेशा की बुराई में चला जाएगा; ताकि उनकी सज़ा हमेशा नफ़रत, बुराई, गुस्से, तकलीफ, गुस्से, मुसीबतों और बीमारियों में हमेशा के लिए नई बनी रहे।
11 हे मेरे बेटों, मैं तुम्हें गवाही देता हूँ कि जो आदमी अपने भाई को नुकसान पहुँचाना चाहेगा, उस पर क्या सज़ा आएगी।
12 और उस दिन उसने अपनी सारी जायदाद उन दोनों में बाँट दी और बड़ा हिस्सा उसे दे दिया जो जेठे बेटे का था, और मीनार और उसके आस-पास की सारी चीज़ें, और वह सब कुछ जो अब्राहम के पास शपथ के कुएँ पर था।
13 तब उसने कहा, 'यह बड़ा हिस्सा मैं जेठे को दूंगा।'
14 तब एसाव ने कहा, 'मैंने याकूब को अपना पहिलौठे का अधिकार बेच दिया है, और उसे दे दिया है; यह उसी को दिया जाए, और मुझे इसके बारे में कुछ नहीं कहना, क्योंकि यह उसी का है।'
15 इसहाक ने कहा, "हे मेरे बेटों, आज तुम पर और तुम्हारी संतान पर आशीर्वाद बना रहे, क्योंकि तुमने मुझे शांति दी है, और मेरा दिल जन्म के अधिकार के बारे में दुखी नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि तुम इसके कारण कोई बुरा काम करो।"
16 जो इंसान नेकी के काम करता है, सबसे ऊँचा परमेश्वर उसे और उसके वंश को हमेशा आशीर्वाद दे।
17 और उसने उन्हें आज्ञा देना और आशीर्वाद देना खत्म किया, और वे उसके सामने साथ में खाए-पीए, और वह खुश हुआ क्योंकि उनके मन एक थे, और वे उसके पास से चले गए और उस दिन आराम किया और सो गए।

18 और इसहाक उस दिन खुशी से अपने बिस्तर पर सो गया; और वह हमेशा की नींद सो गया, और एक सौ अस्सी साल की उम्र में मर गया। उसने पच्चीस हफ़्ते और पाँच साल पूरे किए; और उसके दोनों बेटों एसाव और याकूब ने उसे दफ़नाया।
19 और एसाव एदोम देश में सेईर के पहाड़ों पर गया, और वहीं रहने लगा।
20 और याकूब हेब्रोन के पहाड़ों में, अपने पिता अब्राहम के रहने की जगह के टावर में रहता था, और वह पूरे दिल से और साफ़ आदेशों के अनुसार यहोवा की पूजा करता था, जैसा उसने अपनी पीढ़ियों के दिनों को बाँटा था।
21 और उसकी पत्नी लिआ: पैंतालीसवीं जयंती के दूसरे सप्ताह के चौथे वर्ष में मर गई, [2167 AM] और उसने उसे अपनी माँ रिबका के पास दोहरी गुफा में, अपने पिता की माँ सारा की कब्र के बाईं ओर दफ़नाया
22 और उसके सब बेटे और उसके बेटे उसकी पत्नी लिआ के लिये विलाप करने, और उसके विषय में उसे शान्ति देने उसके पास आए, क्योंकि वह उसकी बहन राहेल के मरने के बाद उससे बहुत प्रेम रखता था, और उसके लिये विलाप करता था।
23 क्योंकि वह अपने सभी कामों में सही और सीधी थी और याकूब का आदर करती थी, और जितने दिन वह उसके साथ रही, उसने उसके मुँह से कोई कड़वी बात नहीं सुनी, क्योंकि वह नरम दिल, शांत, सीधी और इज़्ज़तदार थी।
24 और उसे उसके सारे काम याद आए जो उसने अपनी ज़िंदगी में किए थे, और वह उसके लिए बहुत दुखी हुआ; क्योंकि वह उससे अपने पूरे दिल और पूरी जान से प्यार करता था।

अध्याय 37

1 जिस दिन याकूब और एसाव का पिता इसहाक मर गया, [2162 AM] उस दिन एसाव के पुत्रों ने सुना कि इसहाक ने बड़े का भाग अपने छोटे पुत्र याकूब को दे दिया है, और वे बहुत क्रोधित हुए।
2 और वे अपने पिता से झगड़ने लगे, और कहने लगे, 'तुम्हारे पिता ने याकूब को बड़े का हिस्सा क्यों दिया और तुम्हें क्यों छोड़ दिया, जबकि तुम बड़े हो और याकूब छोटा है?'
3 और उसने उनसे कहा, 'क्योंकि मैंने अपना जन्म का अधिकार याकूब को थोड़ी सी दाल के लिए बेच दिया था, और जिस दिन मेरे पिता ने मुझे शिकार करने और कुछ ऐसा लाने के लिए भेजा था कि वह खाए और मुझे आशीर्वाद दे, वह चालाकी से मेरे पिता के पास खाना-पीना ले आया, और मेरे पिता ने उसे आशीर्वाद दिया और मुझे उसके हाथ में सौंप दिया।
4 और अब हमारे पिता ने हमसे, मुझसे और उससे, यह कसम खिलवाई है कि हम आपस में उसके भाई के खिलाफ कोई बुरी योजना नहीं बनाएंगे, और हम अपने भाई के साथ प्यार और शांति से रहेंगे और अपने कामों को खराब नहीं करेंगे।'
5 और उन्होंने उससे कहा, 'हम उससे सुलह करने के लिए तुम्हारी बात नहीं मानेंगे; क्योंकि हमारी ताकत उसकी ताकत से ज़्यादा है, और हम उससे ज़्यादा ताकतवर हैं; हम उसके खिलाफ़ जाकर उसे मार डालेंगे, और उसे और उसके बेटों को खत्म कर देंगे। और अगर तुम हमारे साथ नहीं जाओगे, तो हम तुम्हें भी नुकसान पहुँचाएँगे।
6 और अब हमारी बात सुनो: आओ हम अराम, फिलिस्तिया, मोआब और अम्मोन के पास भेजें, और अपने लिए ऐसे चुने हुए आदमियों को चुनें जो लड़ाई के लिए जोशीले हों, और आओ हम उसके खिलाफ जाएं और उससे लड़ें, और उसके ताकतवर होने से पहले ही उसे धरती से खत्म कर दें।'
7 तब उनके पिता ने उनसे कहा, 'जाओ मत, और उससे युद्ध मत करो, नहीं तो तुम उसके सामने हार जाओगे।'
8 तब उन्होंने उससे कहा, 'तुम्हारा बचपन से लेकर आज तक यही तरीका रहा है, और तुम अपनी गर्दन उसके जुए के नीचे डाल रहे हो।
9 हम ये बातें नहीं मानेंगे।' और उन्होंने अराम और 'अदूराम' के पास अपने पिता के दोस्त के पास संदेश भेजा, और उनके साथ एक हज़ार चुने हुए लड़ाके किराए पर लिए।
10 और मोआब और अम्मोनियों से, जिन्हें मज़दूरी पर रखा गया था, एक हज़ार चुने हुए आदमी उनके पास आए, और फ़िलिस्तीन से एक हज़ार चुने हुए लड़ाके आए, और एदोम और होरी लोगों से एक हज़ार चुने हुए लड़ाके आए, और कित्तियों से भी वीर लड़ाके आए।
11 तब उन्होंने अपने पिता से कहा, 'उनके साथ जाओ और उन्हें ले चलो, नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे।'
12 और जब उसने देखा कि उसके बेटे उसे अपने भाई याकूब के खिलाफ़ ले जाने के लिए मजबूर कर रहे हैं, तो वह गुस्से और गुस्से से भर गया।
13 लेकिन बाद में उसे अपने भाई याकूब के खिलाफ अपने दिल में छिपी सारी बुराई याद आ गई; और उसे वह कसम याद नहीं रही जो उसने अपने पिता और अपनी माँ से खाई थी कि वह अपने भाई याकूब के खिलाफ ज़िंदगी भर कोई बुरी योजना नहीं बनाएगा।
14 और इन सबके बावजूद, याकूब को पता नहीं था कि वे उससे लड़ने आ रहे हैं, और वह अपनी पत्नी लिआ के लिए तब तक दुख मनाता रहा, जब तक कि वे चार हज़ार योद्धाओं और चुने हुए सैनिकों के साथ टावर के बहुत पास नहीं पहुँच गए।
15 और हेब्रोन के आदमियों ने उसके पास यह खबर भेजी, 'देख, तेरा भाई तलवार से लैस चार हज़ार आदमियों के साथ, ढाल और हथियार लेकर तुझसे लड़ने आया है'; क्योंकि वे एसाव से ज़्यादा याकूब से प्यार करते थे। उन्होंने उसे यह बात बताई; क्योंकि याकूब एसाव से ज़्यादा खुला और दयालु आदमी था।
16 लेकिन याकूब ने तब तक विश्वास नहीं किया जब तक वे मीनार के बहुत पास नहीं पहुँच गए।
17 और उसने टावर के गेट बंद कर दिए; और वह किले की दीवार पर खड़ा होकर अपने भाई एसाव से बोला, 'मेरी पत्नी जो मर चुकी है, उसके लिए तुम मुझे जो दिलासा देने आए हो, वह बहुत अच्छा है। क्या यही वह कसम है जो तुमने अपने पिता और फिर अपनी माँ से उनके मरने से पहले खाई थी? तुमने कसम तोड़ी है, और जिस पल तुमने अपने पिता से कसम खाई थी, उसी पल तुम्हें सज़ा मिली।'
18 तब एसाव ने उससे कहा, 'न तो इंसानों और न ही धरती के जानवरों में कभी नेकी की कसम खाई जाती है, जिसे वे हमेशा के लिए खा लेते हैं; बल्कि वे हर दिन एक-दूसरे के खिलाफ बुराई की योजना बनाते हैं, और हर कोई अपने दुश्मन को कैसे मार सकता है।

19 और तू मुझसे और मेरे बच्चों से हमेशा के लिए नफ़रत करता है। और तेरे साथ भाईचारे का रिश्ता नहीं रहा।
20 ये बातें सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ, अगर सूअर अपनी खाल बदल ले और अपने रोएँ ऊन जैसे मुलायम बना ले, या अगर वह अपने सिर पर हिरण या भेड़ के सींगों जैसे सींग उगा ले, तो मैं तुम्हारे साथ भाईचारे का रिश्ता निभाऊँगा, और अगर स्तन अपनी माँ से अलग हो जाएँ, क्योंकि तुम मेरे भाई नहीं हो।
21 और अगर भेड़िये मेमनों से शांति बना लें ताकि उन्हें न खाएं और न ही उन पर ज़ुल्म करें, और अगर उनके दिल उनकी तरफ़ अच्छे के लिए हों, तो मेरे दिल में तुम्हारे लिए शांति होगी।
22 और अगर शेर बैल का दोस्त बन जाए और उससे सुलह कर ले, और अगर वह उसके साथ एक ही जुए में बंध जाए और उसके साथ हल चलाए, तो मैं तुमसे सुलह कर लूंगा।
23 और जब कौआ राज़ा की तरह सफ़ेद हो जाए, तब जान लेना कि मैंने तुमसे प्यार किया है, और तुम्हारे साथ शांति करूँगा, तुम जड़ से उखाड़ दिए जाओगे, और तुम्हारे बेटे जड़ से उखाड़ दिए जाएँगे, और तुम्हारे लिए कोई शांति नहीं होगी।'
24 और जब याकूब ने देखा कि वह उसके प्रति अपने दिल और पूरी आत्मा से इतना बुरा है कि उसे मार डालना चाहता है, और वह उस जंगली सूअर की तरह झपटा है जो भाले पर आता है और उसे छेदकर मार डालता है, और उससे पीछे नहीं हटता;
25 तब उसने अपने लोगों और अपने सेवकों से कहा कि वे उस पर और उसके सभी साथियों पर हमला करें।

अध्याय 38

1 और उसके बाद यहूदा ने अपने पिता याकूब से कहा, 'पिताजी, अपना धनुष चढ़ाओ, और अपने तीर चलाओ और दुश्मन को गिरा दो और दुश्मन को मार डालो; और तुम ताकत पाओ, क्योंकि हम तुम्हारे भाई को नहीं मारेंगे, क्योंकि वह तुम्हारे जैसा है, और वह तुम्हारे जैसा है, इसलिए आओ हम उसे (यह) सम्मान दें।'
2 तब याकूब ने अपना धनुष चढ़ाया और तीर चलाया और अपने भाई एसाव के दाहिने सीने पर मारकर उसे मार डाला।
3 और फिर उसने एक तीर चलाया और अरामी अदोरान की बाईं छाती पर मारा, और उसे पीछे की ओर धकेलकर मार डाला।
4 और तब याकूब के बेटे और उनके नौकर टावर के चारों तरफ़ टुकड़ियों में बंटकर निकल गए।
5 और यहूदा आगे-आगे चला, और उसके साथ नप्ताली और गाद और उसके साथ पचास सेवक टावर के दक्षिण की ओर थे, और उन्होंने अपने सामने जितने भी लोगों को पाया, उन सबको मार डाला, और उनमें से एक भी नहीं बचा।
6 और लेवी, दान और आशेर, और उनके साथ पचास आदमी टावर के पूरब की तरफ़ गए, और उन्होंने मोआब और अम्मोन के लड़ाकों को मार डाला।
7 और रूबेन, इस्साकार और जबूलून अपने साथ पचास आदमियों के साथ टावर के उत्तर की तरफ़ गए, और उन्होंने पलिश्तियों के लड़ाकों को मार डाला।
8 और शिमोन, बिन्यामीन और रूबेन का बेटा हनोक, टावर के पश्चिम की तरफ गए, और उनके साथ पचास आदमी थे, और उन्होंने एदोम और होरी लोगों के चार सौ हट्टे-कट्टे योद्धाओं को मार डाला; और छह सौ भाग गए, और एसाव के चार बेटे उनके साथ भाग गए, और अपने पिता को मरा हुआ छोड़ गए, जैसे वह 'अदूराम' की पहाड़ी पर गिरा था।
9 और याकूब के बेटों ने उनका पीछा सेईर के पहाड़ों तक किया। और याकूब ने अपने भाई को 'अदूराम' की पहाड़ी पर दफ़नाया, और वह अपने घर लौट आया।
10 और याकूब के बेटों ने सेईर के पहाड़ों में एसाव के बेटों पर बहुत दबाव डाला, और अपनी गर्दन झुका ली, जिससे वे याकूब के बेटों के गुलाम बन गए।
11 और उन्होंने अपने पिता के पास यह पूछने के लिए संदेश भेजा कि क्या वे उनसे सुलह कर लें या उन्हें मार डालें।
12 और याकूब ने अपने बेटों को संदेश भेजा कि वे शांति बना लें, और उन्होंने उनके साथ शांति बना ली, और उन पर गुलामी का बोझ डाल दिया, ताकि वे हमेशा याकूब और उसके बेटों को कर दें।
13 और वे याकूब को उस दिन तक कर देते रहे जब तक वह मिस्र नहीं चला गया।
14 और एदोम के बेटे उस गुलामी के बोझ से आज तक नहीं छूटे हैं जो याकूब के बारह बेटों ने उन पर डाला था।
15 और ये वे राजा हैं जो एदोम में राज करते थे, इससे पहले कि एदोम देश में इस्राएलियों पर कोई राजा राज करता था [आज तक]।
16 और बोर का बेटा बालाक एदोम में राजा बना, और उसके शहर का नाम दानबा था।
17 और बालाक मर गया, और बोसेर के ज़ारा का बेटा योबाब उसकी जगह राजा बना।
18 और योबाब मर गया, और तेमान देश का आसाम उसकी जगह राजा बना।
19 और 'असाम' मर गया, और 'आदत', जो बारद का बेटा था, जिसने मोआब के मैदान में मिद्यानियों को मारा था, उसकी जगह राजा बना, और उसके शहर का नाम अबीत था।
20 और 'आदत' मर गया, और 'अमसेका' से सलमान ने उसकी जगह राजा बना।
21 और सलमान मर गया, और नदी के किनारे रा'आबोत का रहने वाला शाऊल उसकी जगह राजा बना।
22 और शाऊल मर गया, और अकबोर का बेटा बालूनान उसकी जगह राजा बना।
23 और अकबोर का बेटा बा'एलुनन मर गया, और 'आदाथ उसकी जगह राजा बनी, और उसकी पत्नी का नाम मैताबिथ था, जो मेटाबेदज़ाब की बेटी मतरत की बेटी थी।
24 ये वे राजा हैं जिन्होंने एदोम देश में राज किया।

अध्याय 39

1 और याकूब अपने पिता के रहने की जगह कनान देश में रहने लगा। याकूब की वंशावली ये है।
2 जब यूसुफ को मिस्र देश में ले जाया गया, तब वह सत्रह साल का था; और फिरौन के खोजे पोतीपर ने, जो उसका मुख्य रसोइया था, उसे खरीद लिया।
3 और उसने यूसुफ को अपने सारे घराने का अधिकारी ठहराया, और यूसुफ के कारण मिस्री के घराने पर यहोवा की आशीष हुई, और जो कुछ वह करता था, यहोवा ने उसमें उसे सफलता दी।

4 और मिस्री ने सब कुछ यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; क्योंकि उसने देखा कि यहोवा उसके साथ है, और जो कुछ वह करता है उसमें यहोवा उसे सफल करता है।
5 और यूसुफ का रूप सुन्दर था, और उसके मालिक की पत्नी ने आँखें उठाकर यूसुफ को देखा, और वह उससे प्रेम करने लगी, और उससे बिनती करने लगी कि उसके साथ सोए।
6 लेकिन उसने अपनी जान नहीं दी, और उसे प्रभु की और उन बातों की याद आई जो उसके पिता याकूब ने अब्राहम की बातों में से पढ़ी थीं, कि कोई भी आदमी किसी ऐसी औरत के साथ नाजायज़ संबंध न बनाए जिसके पति हों; उसके लिए स्वर्ग में सबसे ऊंचे परमेश्वर के सामने मौत की सज़ा तय की गई है, और यह पाप उसके खिलाफ हमेशा की किताबों में प्रभु के सामने हमेशा लिखा रहेगा।
7 और यूसुफ को ये बातें याद आ गईं और उसने उसके साथ सोने से मना कर दिया।
8 और वह एक साल तक उससे विनती करती रही, पर उसने मना कर दिया और उसकी एक न सुनी।
9 लेकिन उसने उसे गले लगाया और घर में कसकर पकड़ लिया ताकि वह उसके साथ सोए, और घर के दरवाज़े बंद करके उसे कसकर पकड़ लिया; लेकिन उसने अपना कपड़ा उसके हाथों में छोड़ दिया और दरवाज़ा तोड़कर उसके सामने से भाग गया।
10 औरत ने देखा कि वह उसके साथ नहीं सोएगा, तो उसने उसके मालिक के सामने उसकी बुराई करते हुए कहा, 'तेरा इब्री नौकर, जिससे तू प्यार करता है, मेरे साथ ज़बरदस्ती करना चाहता था ताकि वह मेरे साथ सोए; और जब मैंने आवाज़ लगाई तो वह भाग गया और जब मैंने उसे पकड़ा तो अपना कपड़ा मेरे हाथों में छोड़ दिया, और दरवाज़ा तोड़कर अंदर आ गया।'
11 और मिस्री ने यूसुफ का कपड़ा और टूटा हुआ दरवाज़ा देखा, और उसकी पत्नी की बातें सुनीं, और यूसुफ को उस जेल में डाल दिया जहाँ राजा के कैदी रखे जाते थे।
12 और वह जेल में था; और यहोवा ने जेल के पहरेदारों के सरदार की नज़र में यूसुफ पर कृपा की और उस पर दया की, क्योंकि उसने देखा कि यहोवा उसके साथ है, और यहोवा ने उसके हर काम को सफल बनाया।
13 और उसने सब कुछ उसके हाथों में सौंप दिया, और जेल के पहरेदारों के सरदार को उसके पास जो कुछ था, उसके बारे में कुछ भी पता नहीं था, क्योंकि यूसुफ ने सब कुछ किया, और प्रभु ने उसे पूरा किया।
14 और वह वहाँ दो साल रहा। और उन दिनों मिस्र का राजा फिरौन अपने दो खोजों, मुख्य रसोइए और मुख्य रसोइए से बहुत नाराज़ था, और उसने उन्हें मुख्य रसोइए के घर में, उसी जेल में डाल दिया जहाँ यूसुफ को रखा गया था।
15 और जेल के पहरेदारों के सरदार ने यूसुफ को उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया; और वह उनके सामने सेवा करता था।
16 और उन दोनों ने, यानी मुख्य पिलानेहारे और मुख्य पकानेहारे ने, एक सपना देखा, और उन्होंने यूसुफ को बताया।
17 और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही हुआ। और फिरौन ने मुख्य पिलानेवाले को उसके पद पर वापस कर दिया, और मुख्य पकानेवाले को मार डाला, जैसा यूसुफ ने उनसे कहा था।
18 लेकिन जेल में मुख्य शराबखाना चलाने वाला यूसुफ को भूल गया, हालाँकि उसने उसे बताया था कि उसके साथ क्या होने वाला है, और उसे फिरौन को यह बताना याद नहीं रहा कि यूसुफ ने उसे क्या बताया था, क्योंकि वह भूल गया था।

अध्याय 40

1 उन दिनों फिरौन ने एक रात में दो सपने देखे, और उसके बारे में बताया कि पूरे देश में अकाल पड़ने वाला है। वह नींद से जागा और मिस्र के सभी सपनों का मतलब बताने वालों और जादूगरों को बुलाया, और उन्हें अपने दोनों सपने बताए, लेकिन वे उन्हें बता नहीं पाए।
2 तब मुख्य भण्डारी को यूसुफ की याद आई और उसने राजा से उसके बारे में बात की, और वह उसे जेल से बाहर ले आया, और उसने उसके दोनों सपने उसके सामने रखे।
3 और उसने फिरौन से कहा कि उसके दोनों सपने एक ही हैं, और उसने उससे कहा: 'सात साल ऐसे आएंगे जिनमें मिस्र की सारी ज़मीन पर बहुत ज़्यादा पैदावार होगी, और उसके बाद सात साल तक अकाल पड़ेगा, ऐसा अकाल जैसा पूरे देश में पहले कभी नहीं पड़ा होगा।
4 और अब फिरौन मिस्र के सारे देश में ओवरसियर नियुक्त करे, और वे हर शहर में भरपूर सालों के दिनों में खाना जमा करें, और अकाल के सात सालों के लिए खाना होगा, और अकाल से देश खत्म नहीं होगा, क्योंकि यह बहुत भयानक होगा।'
5 और यहोवा ने यूसुफ पर फिरौन की नज़र में कृपा और दया की, और फिरौन ने अपने सेवकों से कहा, 'हमें इस आदमी जैसा बुद्धिमान और समझदार आदमी नहीं मिलेगा, क्योंकि यहोवा की आत्मा उसके साथ है।'
6 और उसने उसे अपने सारे राज्य में दूसरा पद दिया, और सारे मिस्र पर अधिकार दिया, और उसे फिरौन के दूसरे रथ पर सवार किया।
7 और उसने उसे बाइसस के कपड़े पहनाए, और उसके गले में सोने की चेन पहनाई, और (एक दूत ने) उसके सामने ऐलान किया 'एल 'एल वा 'अबीरर,' और उसके हाथ में अंगूठी पहनाई और उसे अपने पूरे घर का शासक बनाया, और उसकी बड़ाई की, और उससे कहा, 'सिर्फ़ राजगद्दी पर मैं तुमसे बड़ा होऊंगा।'
8 और यूसुफ मिस्र के सारे देश पर राज करता था, और फिरौन के सभी हाकिम, उसके सभी नौकर और राजा का काम करने वाले सभी लोग उससे प्यार करते थे, क्योंकि वह सीधा चलता था, उसमें घमंड और अहंकार नहीं था, और वह किसी का बुरा नहीं मानता था, और तोहफ़े नहीं लेता था, बल्कि वह देश के सभी लोगों का सीधा न्याय करता था।
9 और यूसुफ की वजह से मिस्र देश में फिरौन के सामने शांति थी, क्योंकि यहोवा उसके साथ था, और उसने उसे उसकी सभी पीढ़ियों के लिए उन सभी के सामने कृपा और दया दी जो उसे जानते थे और उसके बारे में सुनते थे, और फिरौन का राज्य अच्छी तरह से व्यवस्थित था, और उसमें कोई शैतान और कोई बुरा इंसान नहीं था।
10 और राजा ने यूसुफ का नाम सेफ़न्टीफ़ान्स रखा, और यूसुफ की शादी पोतीफ़र की बेटी से कर दी, जो हेलियोपोलिस के पुजारी, मुख्य रसोइए की बेटी थी।
11 और जिस दिन यूसुफ फिरौन के सामने खड़ा हुआ, उस दिन वह तीस साल का था।

12 और उसी साल इसहाक की मौत हो गई। और जैसा यूसुफ ने अपने दो सपनों का मतलब बताते हुए कहा था, वैसा ही हुआ, मिस्र की सारी ज़मीन पर सात साल तक बहुत ज़्यादा पैदावार हुई, और मिस्र की ज़मीन में बहुत पैदावार हुई, एक नाप से अठारह सौ नाप पैदा हुए।
13 और यूसुफ हर शहर में खाना इकट्ठा करता रहा, जब तक कि वे अनाज से भर नहीं गए, यहाँ तक कि वे उसकी ज़्यादाता के कारण उसे गिन और नाप नहीं सके।

अध्याय 41

1 और पैंतालीसवीं जयंती के दूसरे सप्ताह में, और दूसरे वर्ष में, यहूदा ने अपने जेठे पुत्र एर के लिये अराम की बेटियों में से तामार नाम की एक पत्नी ली।
2 लेकिन वह उससे नफ़रत करता था, और उसके साथ नहीं सोया, क्योंकि उसकी माँ कनान की लड़कियों में से थी, और वह अपनी माँ के रिश्तेदारों में से किसी से शादी करना चाहता था, लेकिन उसके पिता यहूदा ने उसे इजाज़त नहीं दी।
3 और यहूदा का जेठा एर दुष्ट था, और यहोवा ने उसे मार डाला।
4 तब यहूदा ने अपने भाई ओनान से कहा, 'अपने भाई की पत्नी के पास जाओ और उसके प्रति पति के भाई का कर्तव्य निभाओ, और अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करो।'
5 और ओनान जानता था कि बीज उसका नहीं, बल्कि सिर्फ़ उसके भाई का होगा, इसलिए वह अपने भाई की पत्नी के घर गया और बीज ज़मीन पर गिरा दिया। वह यहोवा की नज़र में बुरा था, इसलिए उसने उसे मार डाला।
6 तब यहूदा ने अपनी बहू तामार से कहा, 'जब तक मेरा बेटा शेला बड़ा न हो जाए, तब तक अपने पिता के घर में विधवा की तरह रहो, और मैं तुम्हें उसकी पत्नी बना दूंगा।'
7 और वह बड़ा हो गया; लेकिन यहूदा की पत्नी बेदसुएल ने अपने बेटे शेला को शादी करने की इजाज़त नहीं दी। और यहूदा की पत्नी बेदसुएल की मौत इसी हफ़्ते के पाँचवें साल में हो गई।
8 छठे साल यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिए तिम्ना गया। [2169 AM] और उन्होंने तामार को बताया, 'देख, तेरा ससुर अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिए तिम्ना जा रहा है।'
9 और उसने अपने विधवा के कपड़े उतार दिए, और घूंघट ओढ़कर अपने आपको सजाया, और तिम्ना के रास्ते से लगे फाटक पर बैठ गई।
10 और जब यहूदा जा रहा था, तो उसने उसे देखा, और उसे वेश्या समझा, और उससे कहा, 'मुझे अपने पास आने दो'; और उसने उससे कहा, 'अंदर आओ,' और वह अंदर चला गया।
11 तब उसने उससे कहा, 'मुझे मेरी मज़दूरी दे दो'; और उसने उससे कहा, 'मेरे हाथ में मेरी उंगली में पहनी अंगूठी, और मेरा हार, और मेरे हाथ में जो लाठी है, उसके सिवा कुछ नहीं है।'
12 तब उसने उससे कहा, 'जब तक तू मुझे मेरी मजदूरी न भेज दे, तब तक ये मुझे दे दे,' उसने उससे कहा, 'मैं तेरे लिए एक बकरी का बच्चा भेजूंगा'; और उसने वे उसे दे दिए, और वह उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हो गई।
13 और यहूदा अपनी भेड़-बकरियों के पास चला गया, और वह अपने पिता के घर चली गई।
14 और यहूदा ने अपने चरवाहे, जो एक अदुल्लाम का रहने वाला था, के हाथ एक बकरी का बच्चा भेजा, और वह उसे नहीं मिली; और उसने उस जगह के लोगों से पूछा, 'वह वेश्या कहाँ है जो यहाँ थी?' और उन्होंने उससे कहा, 'यहाँ हमारे साथ कोई वेश्या नहीं है।'
15 और वह लौटकर उसे बताया, और उससे कहा कि उसे वह नहीं मिली: 'मैंने उस जगह के लोगों से पूछा, और उन्होंने मुझसे कहा: "यहाँ कोई वेश्या नहीं है।"
16 तब उसने कहा: 'उसे (उन्हें) रखने दो, नहीं तो हम मज़ाक का कारण बनेंगे।' और जब वह तीन महीने की हो गई, तो यह साफ़ हो गया कि वह गर्भवती है, और उन्होंने यहूदा को बताया, 'देखो, तुम्हारी बहू तामार, वेश्यावृत्ति से गर्भवती है।'
17 तब यहूदा अपने पिता के घर गई, और अपने पिता और भाइयों से कहा, 'उसे बाहर ले आओ, और वे उसे जला दें, क्योंकि उसने इस्राएल में अशुद्धता फैलाई है।'
18 और जब वे उसे जलाने के लिए बाहर लाए, तो उसने अपने ससुर के पास अंगूठी, हार और छड़ी यह कहकर भेजी: 'पहचानो ये किसके हैं, क्योंकि उसी से मैं गर्भवती हूँ।'
19 यहूदा ने माना और कहा, 'तामार मुझसे ज़्यादा नेक है।
20 इसलिए वे उसे जलाएं नहीं। और इसी वजह से वह शेला को नहीं दी गई, और वह फिर उसके पास नहीं गया।
21 इसके बाद सातवें वर्ष के दूसरे सप्ताह में उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम पेरेस और जेरह था।
22 और इस तरह सात साल पूरे हो गए, जिसके बारे में यूसुफ ने फिरौन से कहा था।
23 और यहूदा ने माना कि उसने जो काम किया था वह बुरा था, क्योंकि उसने अपनी बहू के साथ संबंध बनाए थे, और उसने इसे अपनी नज़रों में नफ़रत समझा, और उसने माना कि उसने गुनाह किया है और भटक गया है, क्योंकि उसने अपने बेटे का लबादा उघाड़ा था, और वह अपने गुनाह के कारण यहोवा के सामने विलाप करने और विनती करने लगा।
24 और हमने उसे सपने में बताया कि उसे माफ़ कर दिया गया है क्योंकि उसने बहुत गिड़गिड़ाकर दुख मनाया और दोबारा ऐसा नहीं किया।
25 और उसे माफ़ी मिली क्योंकि वह अपने पाप और अपनी नासमझी से फिर गया, क्योंकि उसने हमारे परमेश्वर के सामने बहुत बड़ा गुनाह किया था; और हर कोई जो ऐसा करता है, हर कोई जो अपनी सास के साथ सोता है, उसे आग में जला दो ताकि वह उसमें जल जाए, क्योंकि उन पर गंदगी और गंदगी है, उन्हें आग में जला दो।
26 और तू इस्राएल के बच्चों को हुक्म दे कि उनके बीच कोई गंदगी न रहे, क्योंकि जो कोई अपनी बहू या सास के साथ सोता है, वह गंदगी करता है; जिस आदमी ने उसके साथ सोए हैं, उन्हें और उसी तरह औरत को भी आग में जला दो, और वह इस्राएल से गुस्सा और सज़ा दूर कर देगा।
27 और यहूदा से हमने कहा कि उसके दोनों बेटों ने उसके साथ संबंध नहीं बनाए, और इसी वजह से उसका वंश दूसरी पीढ़ी के लिए पक्का हो गया, और उसे जड़ से खत्म नहीं किया जाएगा।
28 क्योंकि उसने बिना सोचे-समझे सज़ा माँगी थी, यानी अब्राहम के फैसले के अनुसार, जो उसने अपने बेटों को दिया था, यहूदा ने उसे आग में जलाने की कोशिश की थी।

अध्याय 42

1 और पहले वर्ष के पैंतालीसवें जयंती वर्ष के तीसरे सप्ताह में अकाल देश में आने लगा, और वर्षा होने से इनकार कर दिया, क्योंकि कुछ भी नहीं बरसा।
2 और ज़मीन बंजर हो गई, लेकिन मिस्र देश में खाने की चीज़ें थीं, क्योंकि यूसुफ ने सात साल की अच्छी पैदावार के दौरान ज़मीन से बीज इकट्ठा करके उसे बचाकर रखा था।
3 और मिस्र के लोग यूसुफ के पास आए कि वह उन्हें खाना दे, और उसने उन गोदामों को खोल दिया जहाँ पहले साल का अनाज था, और उसे देश के लोगों को सोने के बदले बेच दिया।
4 कनान देश में बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा था, और याकूब ने सुना कि मिस्र में खाना है, तो उसने अपने दस बेटों को भेजा कि वे मिस्र में उसके लिए खाना लाएँ; लेकिन उसने बिन्यामीन को नहीं भेजा, और याकूब के दस बेटे भी मिस्र जाने वालों के साथ वहाँ पहुँच गए।
5 और यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना, और उसने उनसे बात की और उनसे पूछा, और उसने उनसे कहा; 'क्या तुम जासूस नहीं हो और क्या तुम देश के रास्तों का पता लगाने नहीं आए हो?' और उसने उन्हें जेल में डाल दिया।
6 और उसके बाद उसने उन्हें फिर से आज़ाद कर दिया, और शिमोन को अकेले हिरासत में लिया और उसके नौ भाइयों को भेज दिया।
7 और उसने उनके बोरे अनाज से भर दिए, और उनके बोरे में सोना भी भर दिया, और उन्हें पता भी नहीं चला।
8 और उसने उन्हें अपने छोटे भाई को लाने का हुक्म दिया, क्योंकि उन्होंने उसे बताया था कि उनके पिता और उनका छोटा भाई ज़िंदा हैं।
9 और वे मिस्र देश से चले और कनान देश में पहुँचे; और उन्होंने अपने पिता को सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था, और कैसे देश के मालिक ने उनके साथ बुरा बर्ताव किया था, और शिमोन को तब तक पकड़कर रखा था जब तक वे बिन्यामीन को न ले आएं।
10 तब याकूब ने कहा, 'तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया! यूसुफ नहीं है, शिमोन भी नहीं है, और तुम बिन्यामीन को भी ले जाओगे। तुम्हारी बुराई मुझ पर आ पड़ी है।
11 'और उसने कहा: 'मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा, कहीं वह बीमार न पड़ जाए; क्योंकि उनकी माँ के दो बेटे थे, और एक मर गया, और इस एक को भी तुम मुझसे ले लोगे। अगर रास्ते में उसे बुखार हो गया, तो तुम मेरे बुढ़ापे को दुख के साथ नीचे ले जाओगे, यहाँ तक कि मैं मर भी जाऊँगा।'
12 क्योंकि उसने देखा कि हर आदमी को उसके बोरे में उनका पैसा लौटा दिया गया है, और इस वजह से वह उसे भेजने से डर गया।
13 और कनान देश में और मिस्र देश को छोड़कर बाकी सभी देशों में अकाल बढ़ता गया और भयानक हो गया, क्योंकि मिस्र के बहुत से बच्चों ने खाने के लिए बीज जमा कर रखे थे, जब से उन्होंने यूसुफ को बीज इकट्ठा करते और उन्हें गोदामों में रखते और अकाल के सालों के लिए बचाकर रखते देखा था।
14 और मिस्र के लोगों ने अपने अकाल के पहले साल में उसी से अपना पेट भरा।
15 लेकिन जब इस्राएल ने देखा कि देश में बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा है, और कोई छुटकारा नहीं मिल रहा है, तो उसने अपने बेटों से कहा, 'फिर जाओ, और हमारे लिए खाना ले आओ ताकि हम मर न जाएं।'
16 तब उन्होंने कहा, 'हम नहीं जाएंगे; जब तक हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ न जाए, हम नहीं जाएंगे।'
17 और इस्राएल ने देखा कि अगर वह उसे उनके साथ न भेजे, तो वे सब अकाल की वजह से मर जाएँगे।
18 तब रूबेन ने कहा, 'उसे मेरे हाथ में दे दो, और अगर मैं उसे तुम्हारे पास वापस न लाऊं, तो उसकी जान के बदले मेरे दोनों बेटों को मार डालो।'
19 उसने उससे कहा, 'वह तुम्हारे साथ नहीं जाएगा।' तब यहूदा पास आया और बोला, 'उसे मेरे साथ भेजो, और अगर मैं उसे तुम्हारे पास वापस नहीं ला पाया, तो मुझे ज़िंदगी भर तुम्हारे सामने दोष सहने दो।'
20 और उसने उसको उनके साथ दूसरे वर्ष में इसी सप्ताह [2172 आम] महीने के पहले दिन भेजा, और वे उन सब लोगों के साथ मिस्र देश में आए, जो गए थे, और उनके हाथों में भेंट थीं, अर्थात बकरे, बादाम, हरे धनिये और शुद्ध शहद।
21 और वे जाकर यूसुफ के सामने खड़े हो गए, और उसने अपने भाई बिन्यामीन को देखा, और उसे पहचान लिया, और उनसे पूछा, 'क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है?' उन्होंने उससे कहा, 'यही है।' और उसने कहा, 'प्रभु तुम पर कृपा करे, मेरे बेटे!'
22 तब उसने उसे अपने घर भेजा, और शिमोन को उनके पास ले आया, और उनके लिए दावत रखी, और उन्होंने उसे वह तोहफ़ा दिया जो वे अपने हाथों में लाए थे।
23 और उन्होंने उसके सामने खाना खाया और उसने उन सबको हिस्सा दिया, लेकिन बिन्यामीन का हिस्सा उन सब से सात गुना ज़्यादा था।
24 और वे खा-पीकर उठे और अपने गधों के साथ रहने लगे।
25 और यूसुफ ने एक प्लान बनाया जिससे वह उनके मन की बात जान सके कि उनके बीच शांति है या नहीं, और उसने अपने घर के मैनेजर से कहा: 'उनके सभी बोरे खाने से भर दो, और उनके पैसे उनके बर्तनों में वापस रख दो, और मेरा प्याला, वह चांदी का प्याला जिससे मैं पीता हूँ, उसे सबसे छोटे के बोरे में रख दो, और उन्हें भेज दो।'

अध्याय 43

1 और उसने यूसुफ की बात मानी, और उनके सब बोरे खाने से भर दिए, और उनके पैसे उनके बोरे में रख दिए, और प्याला बिन्यामीन के बोरे में रख दिया।
2 और सुबह-सुबह वे निकल पड़े, और जब वे वहाँ से चले गए, तो यूसुफ ने अपने घर के मैनेजर से कहा: 'उनका पीछा करो, दौड़ो और उन्हें पकड़ लो, और कहो, "तुमने मेरे साथ अच्छाई का बदला बुराई से लिया है; तुमने मुझसे वह चांदी का प्याला चुरा लिया है जिसमें से मेरा मालिक पीता है।" और उनके सबसे छोटे भाई को मेरे पास वापस लाओ, और उसे जल्दी से ले आओ, इससे पहले कि मैं अपनी जज की सीट पर जाऊँ।'
3 तब वह उनके पीछे दौड़ा और उनसे ये बातें कहीं।
4 और उन्होंने उससे कहा: 'भगवान न करे कि तेरे दास ऐसा करें, और तेरे मालिक के घर से कोई बर्तन चुरा लें, और वह पैसा भी जो हमें पहली बार अपने बोरों में मिला था, जिसे हम तेरे दास कनान देश से वापस लाए थे।

5 तो फिर हम कोई बर्तन कैसे चुरा सकते हैं? देखो, हम अपने बोरे लेकर यहाँ हैं, और जहाँ कहीं भी तुम्हें हमारे बीच किसी आदमी के बोरे में प्याला मिले, उसे मार डाला जाए, और हम और हमारे गधे तुम्हारे मालिक की सेवा करेंगे।'
6 तब उसने उनसे कहा, 'ऐसा नहीं है, जो आदमी मुझे मिल जाए, उसी को मैं नौकर बना लूंगा, और तुम शांति से अपने घर लौट जाओगे।'
7 और जब वह उनके बर्तनों में, बड़े से लेकर छोटे तक, खोज रहा था, तो वह बिन्यामीन के बोरे में मिला।
8 तब उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, और अपने गधों पर बोझ लादकर शहर लौट आए, और यूसुफ के घर पहुंचे, और सब ने उसके सामने ज़मीन पर मुँह के बल गिरकर प्रणाम किया।
9 तब यूसुफ ने उनसे कहा, 'तुमने बुरा किया है।' उन्होंने कहा, 'हम क्या कहें और अपना बचाव कैसे करें? हमारे मालिक ने अपने नौकरों की गलती पकड़ ली है; देखो, हम अपने मालिक के नौकर हैं, और हमारे गधे भी।
10 'तब यूसुफ ने उनसे कहा: 'मैं भी यहोवा से डरता हूँ; और तुम लोग अपने घर जाओ और अपने भाई को मेरा सेवक बना लो, क्योंकि तुमने बुरा किया है। क्या तुम नहीं जानते कि एक आदमी अपने प्याले से उतना ही खुश होता है जितना मैं इस प्याले से? और फिर भी तुमने इसे मुझसे चुरा लिया है।'
11 तब यहूदा ने कहा: 'हे मेरे मालिक, मैं आपसे गुज़ारिश करता हूँ कि अपने मालिक से एक बात कहूँ कि आपकी नौकरानी की माँ ने हमारे पिता के लिए दो भाई पैदा किए थे: एक चला गया और खो गया, और अब नहीं मिला, और वह अपनी माँ का अकेला बचा है, और आपके नौकर हमारे पिता उससे प्यार करते हैं, और उसकी ज़िंदगी भी इस (लड़के) की ज़िंदगी से जुड़ी हुई है।
12 और जब हम तेरे दास अपने पिता के पास जाएंगे, और वह लड़का हमारे साथ न होगा, तो वह मर जाएगा, और हम अपने पिता को दुख के साथ नीचे ले जाएंगे, और वह मर जाएगा।
13 अब मैं, आपका सेवक, इस लड़के की जगह अपने मालिक के पास गुलाम बनकर रहूँ, और इस लड़के को उसके भाइयों के साथ जाने दूँ, क्योंकि मैं आपके सेवक हमारे पिता के हाथ से इसका ज़मानतदार बना हूँ, और अगर मैं इसे वापस नहीं लाऊँगा, तो आपका सेवक हमेशा हमारे पिता को इसकी बुराई सुनेगा।'
14 और यूसुफ ने देखा कि वे सब एक दूसरे के साथ भलाई में एक जैसे हैं, और वह खुद को रोक नहीं सका, और उसने उनसे कहा कि वह यूसुफ है।
15 और वह उनसे इब्रानी भाषा में बात करने लगा, और उनके गले लगकर रोया।
16 लेकिन वे उसे पहचान नहीं पाए और रोने लगे। और उसने उनसे कहा: 'मेरे लिए मत रोओ, बल्कि जल्दी करो और मेरे पिता को मेरे पास लाओ; और तुम देखोगे कि यह मेरा मुँह बोलता है और मेरे भाई बेंजामिन की आँखें देखती हैं।
17 क्योंकि देखो, यह अकाल का दूसरा साल है, और अभी पाँच साल ऐसे हैं जब न तो फसल होगी, न पेड़ों पर फल लगेंगे, न हल चलेगा।
18 तुम और तुम्हारे घरवाले जल्दी से नीचे आओ, ताकि तुम अकाल से मर न जाओ, और अपनी चीज़ों के लिए दुखी मत हो, क्योंकि प्रभु ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा है ताकि बहुत से लोग जी सकें।
19 और मेरे पिता से कहना कि मैं अभी भी जीवित हूँ, और तुम, देखो, तुम देखते हो कि प्रभु ने मुझे फिरौन के पिता के समान, और उसके घराने और मिस्र की सारी भूमि पर शासक नियुक्त किया है।
20 और मेरे पिता को मेरी सारी शान, और वह सारी दौलत और इज़्ज़त जो प्रभु ने मुझे दी है, उसके बारे में बताना।'
21 और फिरौन के कहने पर उसने उन्हें रास्ते के लिए रथ और खाने-पीने का सामान दिया, और उन सबको रंग-बिरंगे कपड़े और चाँदी दी।
22 और उसने उनके पिता के पास कपड़े, चाँदी और अनाज ढोने वाले दस गधे भेजे, और उसने उन्हें विदा किया।
23 और उन्होंने जाकर अपने पिता को बताया कि यूसुफ ज़िंदा है, और दुनिया के सभी देशों के लिए अनाज नाप रहा है, और वह पूरे मिस्र देश का राजा है।
24 और उनके पिता को यकीन नहीं हुआ, क्योंकि वह बहुत परेशान था; लेकिन जब उसने यूसुफ की भेजी हुई गाड़ियां देखीं, तो उसकी जान में जान आई, और उसने कहा: 'अगर यूसुफ ज़िंदा रहे तो मेरे लिए इतना ही काफी है; मैं मरने से पहले नीचे जाकर उससे मिलूंगा।'

अध्याय 44

1 और इस्राएल तीसरे महीने की अमावस्या को अपने घर से हारान से निकला, और वह शपथ के कुएं के रास्ते से गया, और उसने इस महीने की सातवीं तारीख को अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया।
2 और याकूब को बेतेल में देखा हुआ सपना याद आया, और वह मिस्र जाने से डरने लगा।
3 और जब वह यूसुफ को यह संदेश भेजने की सोच रहा था कि वह उसके पास आए और कहे कि वह नीचे न जाए, तो वह सात दिन वहीं रहा, ताकि शायद उसे कोई दर्शन मिल जाए कि उसे रहना चाहिए या नीचे जाना चाहिए।
4 और उसने पुराने अनाज के साथ पहली फसल का त्योहार मनाया, क्योंकि पूरे कनान देश में मुट्ठी भर बीज भी नहीं था, क्योंकि अकाल सभी जानवरों, मवेशियों, पक्षियों और इंसानों पर भी पड़ा था।
5 और सोलहवें दिन प्रभु उसके सामने प्रकट हुए, और उससे कहा, 'याकूब, याकूब'; और उसने कहा, 'मैं यहाँ हूँ।' और उसने उससे कहा: 'मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूँ, अब्राहम और इसहाक का परमेश्वर; मिस्र जाने से मत डर, क्योंकि मैं वहाँ तुम्हें एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ नीचे जाऊँगा, और तुम्हें वापस ले आऊँगा, और इसी देश में तुम्हें दफ़नाया जाएगा, और यूसुफ तुम्हारी आँखों पर हाथ रखेगा।
6 डरो मत; मिस्र जाओ।
7 और उसके बेटे और उसके बेटों के बेटे उठे, और उन्होंने अपने पिता और उनकी संपत्ति को गाड़ियों पर लाद दिया।
8 और इस्राएल इस तीसरे महीने की सोलहवीं तारीख को शपथ के कुएं से उठकर मिस्र देश की ओर चल पड़ा।
9 और इस्राएल ने यहूदा को अपने बेटे यूसुफ के पास गोशेन देश की जांच करने के लिए भेजा, क्योंकि यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा था कि वे वहां आकर रहें ताकि वे उसके पास रह सकें।

10 और यह मिस्र देश में सबसे अच्छी ज़मीन थी, और उसके पास भी, उन सबके लिए और जानवरों के लिए भी।
11 और ये याकूब के बेटों के नाम हैं जो अपने पिता याकूब के साथ मिस्र गए थे।
12 रूबेन, इस्राएल का जेठा; और उसके बेटों के नाम ये हैं: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मिफ।
13 शिमोन और उसके बेटे; और उसके बेटों के नाम ये हैं: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर, और शाऊल, जो सपत्ती स्त्री का बेटा था; सात।
14 लेवी और उसके बेटे; और उसके बेटों के नाम ये हैं: गेर्शोन, कहात और मरारी-चार।
15 यहूदा और उसके बेटे; और उसके बेटों के नाम ये हैं: शेला, पेरेस, और जेरह-चार।
16 इस्साकार और उसके बेटे; और उसके बेटों के नाम ये हैं: तोला, फुआ, यासूब और शिम्रोन-पांच।
17 जबूलून और उसके बेटे; और उसके बेटों के नाम ये हैं: सेरेद, एलोन, और यहलेल-चार।
18 और ये याकूब के बेटे और उनके बेटे हैं जिन्हें लिआ ने मेसोपोटामिया में याकूब से जन्म दिया, छह, और उनकी एक बहन दीना, और लिआ के बेटों के सभी लोग, और उनके बेटे, जो उसके पिता याकूब के साथ मिस्र गए थे, उनतीस थे, और उनके पिता याकूब उनके साथ थे, वे तीस थे।
19 और ज़िल्पा के बेटे, जो लिआ की दासी थी और याकूब की पत्नी थी, जिससे याकूब के गाद और अशूर पैदा हुए।
20 और उनके बेटों के नाम ये हैं जो उसके साथ मिस्र गए थे। गाद के बेटे: जिप्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरेली और अरोदी-आठ।
21 और आशेर के बेटे: यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, बरीआ और सेरह, उनकी एक बहन थी, छः।
22 सब प्राणी चौदह थे, और लिआ के सब प्राणी चौवालीस थे।
23 और याकूब की पत्नी राहेल के बेटे: यूसुफ और बिन्यामीन।
24 यूसुफ के पिता के मिस्र में आने से पहले मिस्र में उसके तीन बच्चे पैदा हुए थे, ये बच्चे थे: हेलियोपोलिस के पुजारी पोतीपर की बेटी आसनत से, मनश्शे और एप्रैम।
25 और बिन्यामीन के बेटे: बेला, बेकेर, अशबेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुप्पीम और अर्द-ग्यारह।
26 और राहेल के कुल चौदह प्राणी थे।
27 और याकूब की पत्नी राहेल की दासी बिल्हा के बेटे, जिन्हें उसने याकूब से जन्म दिया था, दान और नप्ताली थे।
28 और उनके बेटों के नाम ये हैं जो उनके साथ मिस्र गए थे। और दान के बेटे थे हुशीम, सामोन, असुदी, इजाक और सलोमोन-छह।
29 और जिस साल वे मिस्र में दाखिल हुए, उसी साल उनकी मौत हो गई, और वहाँ दान हुशिम अकेला रह गया।
30 और नप्ताली के बेटों के नाम ये हैं: यहज़ीएल, गूनी, येज़र, शल्लूम और यिव।
31 और इव, जो अकाल के सालों के बाद पैदा हुआ था, मिस्र में मर गया।
32 और राहेल के कुल छब्बीस थे।
33 और याकूब के जो लोग मिस्र गए, वे सब सत्तर थे। ये उसके बच्चे और उसके बच्चों के बच्चे थे, कुल मिलाकर सत्तर, लेकिन पाँच यूसुफ से पहले मिस्र में मर गए, और उनके कोई बच्चा नहीं था।
34 और कनान देश में यहूदा के दो बेटे, एर और ओनान, मर गए, और उनके कोई बच्चे नहीं थे, और इस्राएल के बच्चों ने मरे हुए लोगों को दफ़नाया, और वे सत्तर गैर-यहूदी देशों में गिने गए।

अध्याय 45

1 और इस्राएल मिस्र देश में, गोशेन देश में, दूसरे वर्ष के पैंतालीसवें जयंती वर्ष के तीसरे सप्ताह के चौथे महीने के अमावस्या को गया।
2 और यूसुफ अपने पिता याकूब से मिलने गोशेन देश गया, और अपने पिता के गले लगकर रोया।
3 और इस्राएल ने यूसुफ से कहा, 'अब मुझे मरने दो क्योंकि मैंने तुम्हें देखा है, और अब इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को आशीर्वाद मिले, अब्राहम के परमेश्वर और इसहाक के परमेश्वर को, जिन्होंने अपने सेवक याकूब से अपनी दया और कृपा नहीं रोकी।
4 मेरे लिए इतना ही काफी है कि मैंने जीते जी तेरा चेहरा देख लिया; हां, बेतेल में जो नज़ारा मैंने देखा था, वह सच है। मेरे भगवान यहोवा की सदा-सदा तक तारीफ़ हो, और उनका नाम तारीफ़ हो।'
5 और यूसुफ और उसके भाइयों ने अपने पिता के सामने रोटी खाई और शराब पी, और याकूब बहुत ज़्यादा खुश हुआ क्योंकि उसने यूसुफ को अपने भाइयों के साथ खाते और पीते हुए देखा, और उसने सब चीज़ों के बनाने वाले को धन्यवाद दिया जिसने उसे बचाया था, और उसके लिए उसके बारह बेटों को बचाया था।
6 और यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को गोशेन देश और रामेसेस और आस-पास के पूरे इलाके में रहने का हक़ तोहफ़े में दिया था, जिस पर वह फिरौन के समय तक राज करता था। और इस्राएल और उसके बेटे गोशेन देश में रहते थे, जो मिस्र देश का सबसे अच्छा हिस्सा था और जब इस्राएल मिस्र आया तो उसकी उम्र एक सौ तीस साल थी।
7 और यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों और उनकी संपत्ति को इतनी रोटी खिलाई कि अकाल के सात सालों तक उनका पेट भर गया।
8 और मिस्र देश में अकाल पड़ा, और यूसुफ ने खाने के बदले में फिरौन के लिए मिस्र की सारी ज़मीन ले ली, और उसने फिरौन के लिए लोगों और उनके जानवरों और सब कुछ पर कब्ज़ा कर लिया।
9 और अकाल के साल पूरे हो गए, और यूसुफ ने ज़मीन के लोगों को बीज और खाना दिया ताकि वे आठवें साल में (ज़मीन पर) बो सकें, क्योंकि नदी मिस्र की सारी ज़मीन पर बह गई थी।
10 क्योंकि अकाल के सात सालों में यह नदी ज़्यादा नहीं बही थी और नदी के किनारे बस कुछ ही जगहों पर सिंचाई हुई थी, लेकिन अब यह ज़्यादा बह गई और मिस्रियों ने ज़मीन पर बोया, और उस साल बहुत ज़्यादा अनाज हुआ।
11 यह पहिले वर्ष के पैंतालीसवें जयन्ती वर्ष का चौथा सप्ताह था।
12 और यूसुफ ने फसल के अनाज में से राजा के लिए पाँचवाँ हिस्सा लिया और चार हिस्सा उनके खाने और बीज के लिए छोड़ दिया, और यूसुफ ने इसे आज तक मिस्र देश के लिए एक नियम बना दिया।

13 और इस्राएल मिस्र देश में सत्रह वर्ष तक जीवित रहा, और उसके कुल दिन तीन जुबली, अर्थात् एक सौ सैंतालीस वर्ष थे, और वह पैंतालीसवीं जुबली के पांचवें सप्ताह के चौथे वर्ष में मर गया।
14 और इस्राएल ने मरने से पहले अपने बेटों को आशीर्वाद दिया और उन्हें मिस्र देश में उनके साथ होने वाली हर बात बताई; और उन्हें बताया कि आखिरी दिनों में उन पर क्या-क्या बीतेगा, और उन्हें आशीर्वाद दिया और यूसुफ को देश में दो हिस्से दिए।
15 और वह अपने पुरखों के साथ सो गया, और उसे कनान देश में दोहरी गुफा में दफ़नाया गया, उसके पिता अब्राहम के पास उस कब्र में जिसे उसने हेब्रोन देश में दोहरी गुफा में अपने लिए खोदा था।
16 और उसने अपनी और अपने पुरखों की सारी किताबें अपने बेटे लेवी को दे दीं ताकि वह उन्हें संभालकर रखे और आज तक अपने बच्चों के लिए उन्हें नया बनाए।

अध्याय 46

1 और ऐसा हुआ कि याकूब के मरने के बाद, इस्राएल की संतान मिस्र देश में बढ़ गई, और वे एक बड़ी जाति बन गए, और वे एक मन के थे, यहां तक कि भाई-भाई से प्रेम करते थे और हर आदमी अपने भाई की मदद करता था, और वे बहुत बढ़ गए, और अत्यन्त बढ़ गए, अर्थात् यूसुफ के जीवन के सारे दिनों में दस सप्ताह वर्ष हो गए।
2 और यूसुफ अपने पिता याकूब के बाद जितने दिन जीवित रहा, उतने दिनों में न तो शैतान था और न ही कोई बुराई, क्योंकि यूसुफ के जीवन भर सभी मिस्रियों ने इस्राएल के बच्चों का आदर किया।
3 और यूसुफ एक सौ दस साल का होकर मरा; सत्रह साल वह कनान देश में रहा, दस साल गुलाम रहा, तीन साल जेल में रहा, और अस्सी साल तक राजा के अधीन रहकर पूरे मिस्र देश पर राज करता रहा।
4 और वह, उसके सभी भाई और उस पीढ़ी के सभी लोग मर गए।
5 और मरने से पहले उसने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि जब वे मिस्र देश से निकलें, तो उसकी हड्डियाँ अपने साथ ले जाएँ।
6 और उसने उनसे उसकी हड्डियों के बारे में कसम खाई, क्योंकि वह जानता था कि मिस्री उसे फिर से कनान देश में नहीं लाकर दफ़नाएँगे, क्योंकि कनान का राजा मकामारोन, जब असीरिया देश में रहता था, तो उसने मिस्र के राजा से घाटी में लड़ाई की थी और उसे वहीं मार डाला था, और मिस्रियों का पीछा करके 'एर्मोन' के दरवाज़ों तक पहुँचा था।
7 लेकिन वह अंदर नहीं जा सका, क्योंकि एक और, एक नया राजा, मिस्र का राजा बन गया था, और वह उससे ज़्यादा ताकतवर था, और वह कनान देश लौट गया, और मिस्र के दरवाज़े बंद हो गए, और कोई भी बाहर नहीं जा सकता था और कोई भी मिस्र में नहीं आ सकता था।
8 और यूसुफ छियालीसवीं जयंती के वर्ष में, दूसरे वर्ष के छठे सप्ताह में मर गया, और उन्होंने उसे मिस्र देश में दफना दिया, और उसके सभी भाई उसके बाद मर गए।
9 और मिस्र का राजा कनान के राजा के साथ युद्ध करने के लिए निकला [2263 AM] सैंतालीसवीं जयंती में, दूसरे वर्ष के दूसरे सप्ताह में, और इस्राएल के बच्चों ने यूसुफ की हड्डियों को छोड़कर याकूब के बच्चों की सभी हड्डियों को बाहर निकाला, और उन्होंने उन्हें पहाड़ पर दोहरी गुफा में खेत में दफना दिया।
10 और उनमें से ज़्यादातर मिस्र लौट गए, लेकिन उनमें से कुछ हेब्रोन के पहाड़ों में रह गए, और तुम्हारा पिता अम्राम उनके साथ रहा।
11 और कनान के राजा ने मिस्र के राजा को हरा दिया, और उसने मिस्र के फाटक बंद कर दिए।
12 और उसने इस्राएलियों के खिलाफ़ उन्हें तकलीफ़ देने की एक बुरी चाल चली और मिस्र के लोगों से कहा: 'देखो, इस्राएली लोग हमसे ज़्यादा बढ़ गए हैं।
13 आओ, हम उनके साथ समझदारी से पेश आएं, इससे पहले कि वे बहुत ज़्यादा हो जाएं, और हम उन्हें गुलामी में डाल दें, इससे पहले कि हम पर जंग आ जाए और वे भी हमारे खिलाफ़ लड़ें; नहीं तो वे हमारे दुश्मनों से मिल जाएंगे और उन्हें हमारी ज़मीन से निकाल देंगे, क्योंकि उनके दिल और चेहरे कनान देश की तरफ़ हैं।'
14 और उसने उन पर काम करने वाले लोगों को बिठा दिया ताकि वे उनसे गुलामी करवाएं; और उन्होंने फिरौन के लिए मज़बूत शहर बनाए, पिथोम और रामसेस, और उन्होंने मिस्र के शहरों में गिरी हुई सभी दीवारें और सभी किले बनाए।
15 और उन्होंने उनसे सख्ती से काम करवाया, और जितना ज़्यादा वे उनके साथ बुरा बर्ताव करते गए, उतना ही वे बढ़ते गए और बढ़ते गए।
16 और मिस्र के लोग इस्राएल के बच्चों से नफ़रत करते थे।

अध्याय 47

1 और सातवें हफ़्ते में, सातवें साल में, सैंतालीसवीं जुबली में, तुम्हारे पिता कनान देश से निकले, और तुम उसके छठे साल में, अड़तालीसवीं जुबली में, चौथे हफ़्ते में पैदा हुए; यह इस्राएल के बच्चों पर मुसीबत का समय था।
2 और मिस्र के राजा फिरौन ने उनके बारे में यह हुक्म दिया कि वे अपने पैदा हुए सभी लड़कों को नदी में फेंक दें।
3 और उन्होंने उन्हें सात महीने तक तुम्हारे जन्म के दिन तक डाला
4 और तेरी माँ ने तुझे तीन महीने तक छिपाकर रखा, और लोगों ने उसके बारे में बताया। और उसने तेरे लिए एक जहाज़ बनाया, और उसे राल और डामर से ढक दिया, और उसे नदी के किनारे झंडों में रख दिया, और तुझे सात दिन तक उसमें रखा, और तेरी माँ रात में आकर तुझे दूध पिलाती थी, और दिन में तेरी बहन मिरियम, पक्षियों से तेरी रक्षा करती थी।
5 उन दिनों फिरौन की बेटी थरमूत नदी में नहाने आई, और उसने तेरी रोने की आवाज़ सुनी, और अपनी दासियों से कहा कि तुझे बाहर ले आओ, और वे तुझे उसके पास ले आईं।
6 और उसने तुम्हें जहाज़ से बाहर निकाला, और उसे तुम पर दया आई।
7 तब तेरी बहन ने उससे कहा, 'क्या मैं जाकर किसी इब्री औरत को बुला लाऊं जो इस बच्चे को दूध पिलाएगी?'

8 तब उसने उससे कहा, 'जाओ।' तब वह गई और तेरी माँ योकेबेद को बुला लाई, और उसने उसे मज़दूरी दी, और तेरा पालन-पोषण किया।
9 और बाद में, जब तुम बड़े हो गए, तो वे तुम्हें फिरौन की बेटी के पास ले गए, और तुम उसके बेटे बन गए, और तुम्हारे पिता अम्राम ने तुम्हें लिखना सिखाया, और जब तुम तीन हफ़्ते पूरे कर चुके, तो वे तुम्हें शाही दरबार में ले गए।
10 और तू दरबार में तीन सप्ताह वर्ष तक रहा, जब तक कि तू शाही दरबार से बाहर नहीं निकला और तूने एक मिस्री को अपने मित्र को, जो इस्राएलियों में से था, मारते हुए नहीं देखा, और तूने उसे मार डाला और रेत में छिपा दिया।
11 और दूसरे दिन तू और इस्राएल के दो बच्चे आपस में लड़ रहे थे, और तूने उस आदमी से जो गलत कर रहा था, कहा, 'तू अपने भाई को क्यों मार रहा है?'
12 और वह गुस्से में आ गया और बोला, 'तुम्हें किसने हम पर हाकिम और जज बनाया है? क्या तुम मुझे भी वैसे ही मारना चाहते हो जैसे तुमने कल मिस्री को मारा था?' और तुम इन बातों की वजह से डरकर भाग गए।

अध्याय 48

1 और उनचासवीं जुबली के तीसरे हफ़्ते के छठे साल में तुम निकले और मिद्यान देश में पाँच हफ़्ते और एक साल रहे। और तुम पचासवीं जुबली के दूसरे साल के दूसरे हफ़्ते में मिस्र लौट आए।
2 और तुम स्वयं जानते हो कि उसने सीनै पर्वत पर तुमसे क्या कहा था, और राजकुमार मस्तेमा ने तुम्हारे साथ क्या करना चाहा था जब तुम मिस्र लौट रहे थे (रास्ते में जब तुम उससे ठहरने की जगह पर मिले थे)
3 जब उसने देखा कि तुम्हें मिस्रियों से बदला लेने और सज़ा देने के लिए भेजा गया है, तो क्या उसने अपनी पूरी ताकत से तुम्हें मारने और मिस्रियों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाने की कोशिश नहीं की?
4 और मैंने तुम्हें उसके हाथ से छुड़ाया, और तुमने वे निशान और चमत्कार किए जो तुम्हें मिस्र में फिरौन, उसके सारे घराने, उसके कर्मचारियों और लोगों के खिलाफ करने के लिए भेजे गए थे।
5 और यहोवा ने इस्राएल की खातिर उनसे बड़ा बदला लिया, और उन्हें खून, मेंढक, जूँ, मक्खियाँ, और फोड़े-फुंसियों से मारा; और उनके जानवरों को मौत के घाट उतारा; और ओलों से, जिससे उनके लिए जो कुछ भी उगा था, सब खत्म हो गया; और टिड्डियों से, जिन्होंने ओलों और अंधेरे से बचे हुए हिस्से को खा लिया; और इंसानों और जानवरों के पहलौठों को मारकर, और उनकी सभी मूर्तियों से यहोवा ने बदला लिया और उन्हें आग में जला दिया।
6 और सब बातें तेरे हाथ से भेजी गईं, कि तू (ये बातें) होने से पहले ही बता दे, और तू मिस्र के राजा से उसके सब कर्मचारियों और उसकी प्रजा के सामने बात करे।
7 और सब कुछ तुम्हारी बातों के अनुसार हुआ; मिस्र देश पर दस बड़े और भयानक दण्ड आए, ताकि तुम इस्राएल के लिए बदला ले सको।
8 और यहोवा ने सब कुछ इस्राएल के लिए किया, और अपने उस वादे के अनुसार किया जो उसने अब्राहम से किया था कि वह उनसे बदला लेगा क्योंकि उन्होंने उन्हें ज़बरदस्ती गुलाम बनाया था।
9 और राजकुमार मस्तेमा तुम्हारे खिलाफ खड़ा हुआ, और तुम्हें फिरौन के हाथों में सौंपना चाहता था, और उसने मिस्र के जादूगरों की मदद की,
10 और वे खड़े हुए और तुम्हारे सामने वे बुराइयाँ कीं जो हमने उन्हें करने दीं, लेकिन वे उपाय हमने उनके हाथों से नहीं करने दिए।
11 और प्रभु ने उन्हें घातक घावों से पीड़ित किया, और वे खड़े नहीं हो सके, क्योंकि हमने उन्हें ऐसा नष्ट कर दिया कि वे एक भी चिन्ह नहीं दिखा सके।
12 और इन सभी निशानियों और चमत्कारों के बावजूद राजकुमार मस्तेमा शर्मिंदा नहीं हुआ, क्योंकि उसने हिम्मत करके मिस्रियों से कहा कि वे मिस्रियों की सारी ताकत, उनके रथ, उनके घोड़े और मिस्र के लोगों की सारी सेना के साथ तुम्हारा पीछा करें।
13 और मैं मिस्रियों और इस्राएल के बीच खड़ा हुआ, और हमने इस्राएल को उसके हाथ से, और उसके लोगों के हाथ से छुड़ाया, और यहोवा ने उन्हें समुद्र के बीच से ऐसे निकाला जैसे वह सूखी ज़मीन हो।
14 और जिन लोगों को वह इस्राएल का पीछा करने के लिए लाया था, हमारे परमेश्वर यहोवा ने उन्हें समुद्र के बीच, इस्राएल के बच्चों के नीचे गहरे गड्ढे में फेंक दिया, ठीक वैसे ही जैसे मिस्र के लोगों ने अपने बच्चों को नदी में फेंक दिया था। उसने उनमें से 1,000,000 लोगों से बदला लिया, और एक हज़ार ताकतवर और जोशीले आदमियों को तेरे लोगों के बच्चों के एक दूध पीते बच्चे की वजह से मार डाला गया, जिसे उन्होंने नदी में फेंक दिया था।
15 और चौदहवें दिन, पंद्रहवें दिन, सोलहवें दिन, सत्रहवें दिन, और अठारहवें दिन राजकुमार मस्तेमा को इस्राएलियों के पीछे बांधकर जेल में डाल दिया गया, ताकि वह उन पर इल्ज़ाम न लगा सके।
16 और उन्नीसवीं तारीख को हमने उन्हें छोड़ दिया ताकि वे मिस्रियों की मदद करें और इस्राएलियों का पीछा करें।
17 और उसने उनके दिलों को कठोर और जिद्दी बना दिया, और हमारे परमेश्वर यहोवा ने यह युक्ति निकाली कि वह मिस्रियों को मारकर समुद्र में फेंक दे।
18 और चौदह तारीख को हमने उसे बांध दिया ताकि वह इस्राएलियों पर उस दिन इल्ज़ाम न लगा सके जब उन्होंने मिस्रियों से बर्तन और कपड़े, चांदी के बर्तन, सोने के बर्तन और कांसे के बर्तन मांगे थे, ताकि मिस्रियों को उस गुलामी के बदले में लूट सकें जिसमें उन्होंने उन्हें मजबूर किया था।
19 और हम इस्राएलियों को मिस्र से खाली हाथ नहीं ले गए।

अध्याय 49

1 यहोवा ने फसह के बारे में जो हुक्म तुम्हें दिया था, उसे याद रखना, कि तुम इसे पहले महीने की चौदह तारीख को सही समय पर मनाना, शाम होने से पहले इसे मारना, और लोग इसे सूरज डूबने के पंद्रहवें दिन की शाम को रात में खाएँ।
2 क्योंकि इस रात को - त्योहार और खुशी की शुरुआत - तुम मिस्र में फसह खा रहे थे, जब मस्तेमा की सारी ताकतें मिस्र देश के सभी पहलौठों को मारने के लिए छोड़ दी गई थीं, फिरौन के

पहलौठे से लेकर चक्की में बंदी दासी के पहलौठे तक, और मवेशियों तक।

3 और यह निशानी है जो प्रभु ने उन्हें दी: जिस भी घर की चौखट पर उन्होंने एक साल के मेमने का खून देखा, उस घर में वे मारने के लिए अंदर न जाएं, बल्कि उसके पास से गुज़र जाएं, ताकि घर में मौजूद सभी लोग बच जाएं क्योंकि खून का निशान चौखट पर था।

4 और यहोवा की सेनाओं ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, और वे इस्राएल के सभी बच्चों के पास से गुज़र गए, और उन पर कोई मुसीबत नहीं आई जिससे उनमें से किसी भी जानवर, इंसान या कुत्ते को मारा जा सके।

5 और मिस्र में बहुत भयानक महामारी फैली, और मिस्र में कोई घर ऐसा नहीं था जहाँ एक भी मरा न हो, और लोग रो रहे हों और विलाप कर रहे हों।

6 और सारा इस्राएल फसह मेमने का मांस खा रहा था, और दाखमधु पी रहा था, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की बड़ाई कर रहा था, और उसे आशीर्वाद दे रहा था, और धन्यवाद दे रहा था, और मिस्र के जुए और बुरी गुलामी से बाहर निकलने के लिए तैयार था।

7 और तू इस दिन को अपनी ज़िंदगी के सारे दिनों में याद रखना, और इसे हर साल, साल में एक बार, अपने दिन पर, इसके सारे नियम के हिसाब से मानना, और इसे एक दिन से दूसरे दिन या एक महीने से दूसरे महीने तक टालना नहीं।

8 क्योंकि यह हमेशा का नियम है, और आसमान की तख्तियों पर इस्राएल के सभी बच्चों के लिए खुदा हुआ है कि वे इसे हर साल, एक बार, अपनी सभी पीढ़ियों में इसके दिन पर मानें; और दिनों की कोई सीमा नहीं है, क्योंकि यह हमेशा के लिए तय किया गया है।

9 और जो आदमी अशुद्धता से बचा हुआ है, और त्योहार के दिन यहोवा के सामने खुश करने वाला चढ़ावा चढ़ाने और त्योहार के दिन यहोवा के सामने खाने-पीने के लिए नहीं आता, वह आदमी जो साफ और पास है, उसे मार डाला जाएगा: क्योंकि उसने तय समय पर यहोवा का चढ़ावा नहीं चढ़ाया, इसलिए वह खुद ही दोषी होगा।

10 इस्राएल के बच्चे आकर फसह का त्योहार मनाएं, जो तय समय पर, यानी पहले महीने के चौदहवें दिन, शाम के बीच, दिन के तीसरे हिस्से से रात के तीसरे हिस्से तक मनाया जाएगा, क्योंकि दिन का दो हिस्सा रोशनी के लिए और एक तिहाई हिस्सा शाम के लिए दिया गया है।

11 यह वही है जो यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम इसे शाम के समय मानना।

12 और उसे किसी भी समय ज़बह करना जायज़ नहीं है, बल्कि शाम के आस-पास के समय में ज़बह करना जायज़ है। और वे उसे शाम के समय, रात के तीसरे पहर तक खाएं, और रात के तीसरे पहर के बाद उसका जो भी मांस बचे, उसे आग में जला दें।

13 और वे उसे पानी में न पकाएँ, न कच्चा खाएँ, बल्कि आग पर भूनकर खाएँ; वे उसे बड़े चाव से खाएँगे, उसका सिर, अंदर की नसें और पैर आग में भूनकर खाएँगे, और उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ेंगे; क्योंकि इस्राएलियों की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जाएगी।

14 इसी वजह से यहोवा ने इस्राएल के बच्चों को हुक्म दिया कि वे फसह को उसके तय समय के दिन मनाएं, और वे उसकी एक भी हड्डी न तोड़ें; क्योंकि वह त्योहार का दिन है, और एक हुक्म दिया हुआ दिन है, और उसमें दिन-दर-दिन, और महीने-दर-महीने बदलाव नहीं हो सकता, बल्कि उसके त्योहार के दिन ही उसे मनाया जाए।

15 और तू इस्राएल के बच्चों को हुक्म दे कि वे हर साल, एक बार अपने तय समय पर फसह का त्योहार मनाएँ। यह त्योहार यहोवा को बहुत अच्छा लगेगा और उस साल जब वे फसह का त्योहार हर तरह से उसके हुक्म के मुताबिक अपने समय पर मनाएँगे, तो उन पर कोई मुसीबत नहीं आएगी जिससे वे मारे जाएँ या दुखी हों।

16 और वे इसे यहोवा के पवित्र स्थान के बाहर नहीं खाएँगे, बल्कि यहोवा के पवित्र स्थान के सामने खाएँगे, और इस्राएल की मंडली के सभी लोग इसे तय समय पर मनाएँगे।

17 और हर आदमी जो उस दिन आएगा, बीस साल या उससे ज़्यादा उम्र का होगा, उसे तुम्हारे परमेश्वर के पवित्र स्थान में यहोवा के सामने खाना चाहिए; क्योंकि ऐसा लिखा और तय है कि उन्हें इसे यहोवा के पवित्र स्थान में खाना चाहिए।

18 और जब इस्राएल के बच्चे उस देश में आएं जिस पर उन्हें कब्ज़ा करना है, यानी कनान देश में, और जब तक देश में यहोवा का पवित्र स्थान न बन जाए, तब तक अपने किसी गोत्र में देश के बीच में यहोवा का डेरा खड़ा करें, तब वे आएं और यहोवा के डेरे के बीच में फसह मनाएं, और हर साल यहोवा के सामने बलि चढ़ाएं।

19 और जिन दिनों उनकी विरासत की ज़मीन पर यहोवा के नाम पर घर बनाया जाएगा, वे वहाँ जाकर शाम को सूरज डूबने के समय, दिन के तीसरे पहर में फसह का जानवर मारेंगे।

20 और वे उसका खून वेदी की चौखट पर चढ़ाएंगे, और उसकी चर्बी वेदी पर लगी आग पर रखेंगे, और वे उसका मांस उस घर के आँगन में आग में भूनकर खाएंगे जिसे यहोवा के नाम पर पवित्र किया गया है।

21 और वे अपने शहरों में, या किसी और जगह पर फसह का त्योहार न मनाएं, सिवाय प्रभु के डेरे के सामने, या उसके घर के सामने जहां उसका नाम रहता है; और वे प्रभु से भटक न जाएं।

22 और हे मूसा, तू इस्राएल के बच्चों को आज्ञा दे कि वे फसह के नियमों का पालन करें, जैसा कि तुझे आज्ञा दी गई थी; तू उन्हें हर साल और उसके दिनों का दिन, और बिना खमीर वाली रोटी का त्योहार बता, कि वे सात दिन बिना खमीर वाली रोटी खाएंगे, (और) कि वे उसका त्योहार मनाएंगे, और खुशी के उन सात दिनों में हर दिन अपने परमेश्वर की वेदी पर यहोवा के सामने भेंट चढ़ाएंगे।

23 क्योंकि जब तुम मिस्र से निकले थे, तब शूर के जंगल में पहुँचने तक तुमने यह त्योहार जल्दी-जल्दी मनाया था; क्योंकि समुद्र के किनारे तुमने इसे पूरा किया था।

अध्याय 50

1 और इस नियम के बाद मैंने तुम्हें सिनाई के जंगल में, जो एलीम और सिनाई के बीच में है, सब्त के दिनों के बारे में बताया।

2 और मैंने तुम्हें सीनै पहाड़ पर देश के सब्त के दिनों के बारे में बताया, और मैंने तुम्हें सालों के सब्त के दिनों में जुबली के सालों के बारे में भी बताया; लेकिन उसका साल मैंने तुम्हें तब तक नहीं बताया जब तक तुम उस देश में दाखिल नहीं हो जाते जिसके तुम मालिक बनने वाले हो।

3 और जब तक वे उस पर रहेंगे, तब तक वह देश अपने सब्त मनाएगा, और वे जुबली साल को जानेंगे।
4 इसलिए मैंने तुम्हारे लिए साल-हफ़्ते, साल और जुबली तय किए हैं: आदम के दिनों से लेकर आज तक उनतालीस जुबली हो चुकी हैं, [2410 AM] और एक हफ़्ता और दो साल: और अभी चालीस साल बाकी हैं जब तक कि वे कनान देश में न पहुँच जाएँ, और पश्चिम में यरदन नदी पार न कर लें।
5 और जुबली के साल बीत जाएँगे, जब तक कि इस्राएल व्यभिचार, गंदगी, गंदगी, पाप और गलती के सारे गुनाहों से साफ़ न हो जाए, और पूरे देश में भरोसे के साथ न बस जाए, और वहाँ फिर कभी कोई शैतान या कोई बुरा इंसान न रहे, और देश उस समय से हमेशा के लिए साफ़ रहेगा।
6 और देखो, सब्त के बारे में जो हुक्म है - मैंने तुम्हारे लिए लिख दिया है - और उसके सारे नियम भी।
7 छह दिन तुम काम करना, लेकिन सातवां दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का सब्त है। उस दिन तुम, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे नौकर-चाकर, तुम्हारी दासियां, तुम्हारे सारे जानवर और तुम्हारे साथ रहने वाला परदेशी कोई काम नहीं करेंगे।
8 और जो आदमी उस दिन कोई काम करेगा, वह मर जाएगा: जो कोई उस दिन को अपवित्र करेगा, जो कोई अपनी पत्नी के साथ सोएगा, या जो कोई कहेगा कि वह उस दिन कुछ करेगा, कि वह किसी खरीद-बिक्री के लिए उस दिन यात्रा पर निकलेगा: और जो कोई उस दिन पानी भरेगा जिसे उसने छठे दिन अपने लिए तैयार नहीं किया था, और जो कोई अपने तंबू या घर से कोई बोझ उठाकर ले जाएगा, वह मर जाएगा।
9 तुम सब्त के दिन कोई काम नहीं करोगे, सिवाय उन कामों के जो तुमने छठे दिन अपने लिए तैयार किए हैं, ताकि तुम खाओ, पियो, आराम करो, और उस दिन सब्त को सब कामों से दूर रखो, और अपने परमेश्वर यहोवा को आशीर्वाद दो, जिसने तुम्हें त्योहार का दिन और पवित्र दिन दिया है: और यह दिन पूरे इस्राएल के लिए पवित्र राज्य का दिन है, जो हमेशा के लिए उनके दिनों में से एक है।
10 क्योंकि यहोवा ने इस्राएल को जो बड़ा सम्मान दिया है, वह यह है कि वे इस त्योहार के दिन खाएँ-पीएँ और पेट भर लें, और उस दिन उन सभी कामों से आराम करें जो इंसानों की मेहनत के हैं, सिवाय लोबान जलाने और दिनों और सब्त के दिनों में यहोवा के सामने भेंट और बलिदान चढ़ाने के।
11 सिर्फ़ यही काम सब्त के दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के पवित्र स्थान में किया जाएगा; ताकि वे हर दिन लगातार बलिदान देकर इस्राएल के लिए प्रायश्चित करें, ताकि यहोवा को यह यादगार अच्छी लगे, और जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, वह उन्हें हर दिन स्वीकार करे।
12 और हर आदमी जो उस पर कोई काम करता है, या सफ़र पर जाता है, या अपने खेत में खेती करता है, चाहे अपने घर में या किसी और जगह पर, और जो कोई आग जलाता है, या किसी जानवर पर सवारी करता है, या समुद्र में जहाज़ से सफ़र करता है, और जो कोई किसी चीज़ पर हमला करता है या उसे मारता है, या किसी जानवर या पक्षी को मारता है, या जो कोई जानवर या पक्षी या मछली पकड़ता है, या जो कोई सब्त के दिन उपवास रखता है या युद्ध करता है:
13 जो आदमी सब्त के दिन इनमें से कोई भी काम करेगा, वह मर जाएगा, ताकि इस्राएल के बच्चे देश के सब्त के बारे में दिए गए आदेशों के अनुसार सब्त मनाएँ, जैसा कि उन तख्तियों पर लिखा है, जो उसने मुझे दी थीं ताकि मैं तुम्हारे लिए मौसमों के नियम और मौसमों को उनके दिनों के बँटवारे के अनुसार लिखूँ।
यहाँ दिनों के बँटवारे का ब्यौरा पूरा होता है।